वर्ष - १ अक - २
हिमालिनी
काठमाण्डू से प्रकाशित हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका
विखरता प्रजातन्त्र
नेपाल में बौद्ध शिल्प के
काठमाण्डू में महाशिवरात्रि
हिन्दी
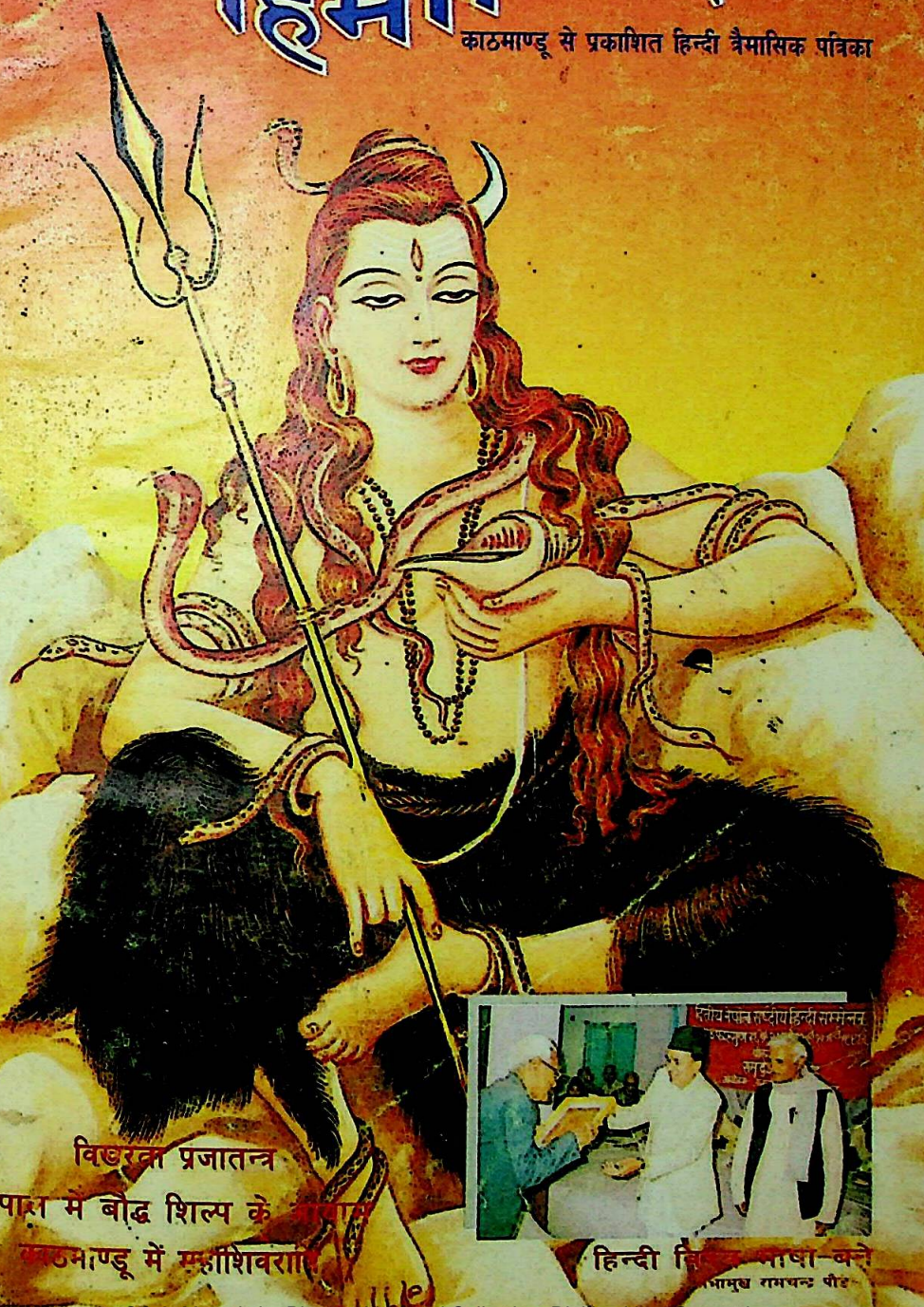
हिमालिनी

अप्रैल १९९८ सत्ये नास्ति भयं क्वचित्

नमः शिवाय सततं पञ्चकृत्य विधायिने
चिदानन्दघन स्वात्मपरमार्थ विभासिने
—प्रत्यभिज्ञाहृदयम्

अनुरोध
कृपया समसामयिक विषयों पर आधारित या अन्य किसी भी प्रकार की रचनाएं स्पष्ट और कम पृष्ठों में भेजकर हमें अनुगृहित करें ।
(सं.)

हिमालिनी में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्वन्धित लेखक के है । सम्पादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है
(सं.)

मूल्य: नेपाल में १५ ने.रू.
भारत में १५ भा.रू.

हमारा पता
डा. कृष्णाचन्द्र मिश्र अकादमी
पो. ब. नं. ८२४१
काठमांडु, नेपाल
फोन: ३३०७७९

इस अंक के आकर्षक

आवरण पृष्ठ: भगवान शिव का हलाहल पान
कल्याण वर्ष ७१ संख्या ७ से सभार
नीचे: सभामुख रामचन्द्र पौडेल डा. सूर्यदेव सिंह प्रभाकर को सम्मानित करते हुए।
बगल में राजेश्वर नेपाली

पत्र-वाटिका

'हिमालिनी' का अंक मिला। आपके प्रयत्न की सफलता चाहता हूँ। एक सुझाव है। नेपाल के बारे में ऐसी सामग्री छापिये जो वहां की अन्य अहिन्दी पत्रिकाओं में दुर्लभ हो तब वहां हिंदी लोकप्रिय होगी।

राम विलास शर्मा
नयी दिल्ली

'हिमालिनी' का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। नेपाल में इस प्रकार की स्तरीय हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हम लोगों के लिए श्रद्धा और समादर का विषय है। पत्रिका में संकलित सभी सामग्री पठनीय हैं।

प्रथम अंक से ही इसके स्वर्णिम भविष्य की आशा की जा सकती है। भाषा के सम्बन्ध में आपके विचार प्रेरणास्पद ही नहीं, अनुकरणीय है।

डा. शिववंश पाण्डेय
पटना

'हिमालिनी' का प्रथम अंक मिला।

सबसे पहले तो मुझे यह जानकर धक्का लगा कि प्रो. कृष्णचन्द्र मिश्र नहीं रहे। इस संबंध में मुझे किसी ने बताया ही नहीं। जहां तक मुझे याद पड़ता है, कुछ वर्ष पहले मौरिशस में मुझे उनके साथ भाषण देने का मौका मिला था। कृपया मेरी ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि स्वीकार कीजिए।

'हिमालिनी' का यह प्रथम अंक देखकर मुझे आनंद हुआ। इसमें कई जाने-पहचाने मित्रों की पठनीय रचनाएं भी हैं। कृपया मेरी ओर से हार्दिक बधाइयां स्वीकार कीजिए।

भारतीय भाषाओं को लेकर हम लोग भारत में जोरदार आन्दोलन चलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस कार्य में यदि नेपाल से भी सहयोग मिले तो हम उसका स्वागत करेंगे।

वेदप्रताप वैदिक
नई दिल्ली

'हिमालिनी' नेपाली भावना और एकता को जोड़ने वाली हिन्दी और नेपाली एकता की कड़ी के रुप में एक सुखद प्रयास है

यह प्रथम पुष्प अनमोल है, निरन्तर अपने मोहिनी सुवास को बिखेरता रहे, मेरी शुभ-कामना है।

अवधेश कुमार पोखरेल
वार्ड अध्यक्ष ८, जनकपुर धाम।

'हिमालिनी' का प्रथम अंक मिला। इसके लिए आपको कोटिशः धन्यवाद। आपकी पत्रिका नेपाल और भारत के सांस्कृतिक सम्बन्धों का सेतु है। इसमें नेपाल एवं भारत की मैत्री की सुगन्ध है। इसके माध्यम से हमें नेपाल निवासियों की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं नेपालवासियों को भारत की गतिविधियों का परिचय मिल पाएगा। धुस्वां सायमी, किशोर पहाड़ी, केदारमान व्यथित, ठाकुर जी आदि की रचनाएं अच्छी लगी। आपकी पत्रिका दिन दूनी-रात चौगुनी गति से बढ़े, यही मेरी कामना है।

सदाशिव खवाड़े
अध्यक्ष, रुसी भाषा विभाग
मुजफ्फरपुर

'हिमालिनी' का प्रथम अंक देखने को मिला। पत्रिका देखकर प्रसन्नता की सीमा नहीं रही, इस सुन्दर प्रयास के लिए आपको कोटिशः धन्यवाद। उत्तम नेपाली, धुस्वां जी, व्यथित जी,

नियाजुद्दीन जी , गुड्डू आदि रचनाकारों की रचनाओं ने पत्रिका के स्थान को शिखर तक पहुंचाया, इसमें दो मत नहीं।

हां, एक सुझाव है कि कृपया पत्रिका को साहित्यिक पत्रिका ही रहने दिया जाए। इसे राजनीति से दूर रखें तो अच्छा रहेगा।

डा. गिरिजा किशोर झा
मुजफ्फरपुर

'हिमालिनी' की सम्पूर्ण टीम को इसके प्रकाशन पर साधुवाद।

पत्रिका में आवश्यक सभी सामाग्रियां मौजूद है, लेकिन प्रूफ की कुछ गलतियों की वजह से बेमजा सा हो गया है। यह सच है कि काठमाण्डू जैसे नेपाली भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा को कम्पोज करना एक दुश्कर कार्य है, फिर भी अगर इस छोटी सी गलती को सुधारा जाए तो सोने पे सुहागा होगा। मैं 'हिमालिनी' की गलतियों की ओर संकेत नहीं कर रहा हूँ वरन अपने को 'हिमालिनी' का सहकर्मी मानकर इसे अपनी गलती मान रहा हूँ।

सम्पादकीय से लेकर घर परिवार तक की हरेक सामग्री पठनीय है। आशा है भविष्य के आगामी अंकों में भी 'हिमालिनी' पुस्तकाकार रूप में अपने अस्तित्व को कायम रखेगी।

सुरेन्द्र गुप्ता अमित
राजविराज

"हिमालिनी" त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका का पहला अंक जनवरी १९९८ पढ, एक सुखद अनुभूति का अनुभव हुआ। इस अंक में अनेक विद्वानों द्वारा विविध प्रकार के व्यञ्जनों, सामग्रियों का स्वादन करने की अनुभूति मिली।

भाषा की कोई सीमा नहीं, यह एक अभिव्यक्ति का माध्यम है जो एक दूसरों के द्वारा आदान -प्रदान की जाती है। इस अंक में अनेक ज्ञान वर्द्धक बातें हैं। अभिव्यक्ति का प्रयास उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करता है जो अनुकरणीय, सराहनीय एवं आदरणीय है।

भविष्य में इस पत्रिका के द्वारा स्वस्थ जन क्रान्ति के संवेदनशील तत्वों को प्रकाशित करना अत्याधिक प्रासंगिक सम्पदा माना जायगा। चिकित्सा सम्बन्धी सामग्रियों को समावेश कर सकें तो यह पत्रिका नेपाल में ही नहीं भारत में भी गौरवपूर्ण स्थान पा सकता है।

इस पत्रिका को किसी एक पार्टी का धरोहर न बनाकर इस से सम्पूर्ण राष्ट्र एवं मानव जाति का प्रतिनिधित्व करा सकें तो इसकी सार्थकता और बढ जायगी।

डा.के.डी.मिश्र
न्यूरोड, काठमांडू

'हिमालिनी' का प्रथम अंक प्राप्त हुआ। विविध रचना साहित्य से भरपूर रुचिकर लगा। होनहार विरवान के होत चिकने पात। मेरी हार्दिक मंगल कामनाएँ स्वीकारें।

मेरे पक्ष से आपके इस पुनीत यज्ञ में हर प्रकार का सहयोग मिलेगा।

वृजमोहन श्रीवास्तव 'चंचल'
कवि, लेखक, पत्रकार, इलाहाबाद

'हिमालिनी' देखकर मन हर्षित हुआ। पत्रिका स्तर के अनुकूल है और नेपाल तथा भारत में हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है, वशर्ते यह चलती रहे। नेपाल के समृद्ध व्यापारिक वर्ग तथा अन्य वर्गों का भी यह कर्तव्य है कि ऐसी पत्रिका की साधन सहायता करें, ताकि वह अपना अपेक्षित योगदान कर सके।

मेरा सहयोग और शुभकामना सदैव आपके साथ है।

ललन प्रसाद व्यास
नई दिल्ली

चिन्तन धारा

नमन, सर्वप्रथम उन शहीदों को जिनके पराक्रम, त्याग और वलिदान ने सोये देशों को झकझोर कर जगा दिया है। किसी देश या जाति का जागना ही, उसके विकास का पूर्वाधार है इसके अलावा उन्हें चाहिए खुला माहौल, जिन्दादिली और इमानदारी के साथ वुलन्द हौसला।

उन शहीदों के जगाने के वावजूद भी क्या हम लोग जाग गए हैं ? क्या हमलोग विकास के पथ पर वढ रहे हैं ? इक्कीसवीं सदी के दरवाजे पर वढ रहे हमारे कदम सही रास्ते पर चल रहे हैं ? यह सोचने की वात है। खुला माहौल मिलने के वावजूद हम में जिन्दादिली, इमानदारी और वुलन्द हौसले की कमी है। इसकी पूर्ति कोई और नहीं वल्कि हमको, आपको स्वयं करनी है। उनका अरमान तभी पूर्ण होगा जव हम, एक दूसरे से सवाल- जवाव न कर ठोस काम कर दिखा सकेंगे।

"कभी इस ओर तो कभी उस ओर,
क्यों रखते हो मेरी डोर
फिर से जन्मेंगे मेरे कोई सपूत
सम्भालने को मेरी डोर"।

यह हमारी आपकी वातें नहीं है। यह तो धरती मां की पुकार है। सभी की धरती माँ अपने बेटों से यही पूछती है। इस धरती पर पूतों की भरमार है, लेकिन सपूतों की कमी हो गई है। जहां भी देखिए, देश की स्थिति ऐसी ही है। नेपाल और भारत कहीं भी अव सच्चे सपूत नहीं रहे, जो अपने देश को, अपनी धरती माँ को सही ढंग से रख सके। हर दो -चार छः माह में देश की डोर को पकडने के लिए खीचातानी शुरु हो जाती है क्योंकि देश की वागडोर सम्भालने के वाद उनके नाम बाजार में विकने शुरु हो जाते हैं। कांग्रेस हो या कम्युनिष्ट, नेसपा हो या राप्र.पा. सभी इसी खींचातानी में लगे हुए हैं। पद और सत्ता के लिये सभी दिवाने हैं, देश की वात कोई नहीं करते। विकास भी विकसित जगहों पर ही करते हैं। उस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता जहाँ धरती पर ऐसे भी असंख्य लोग हैं जो गरीवी में सिसक सिसक कर दम तोड रहे हैं।

"राजनीति, सच पूछिए तो मानव कल्याण का विज्ञान है"- डा. पट्टाभि सीतारमैय्या। राजनीति करने वालों को मानव कल्याण की ओर ध्यान देना चाहिए। देश की आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियों का वखूवी अध्ययन कर उनकी समस्याओं का निदान करना चाहिए। लेकिन अफसोस की वात है कि राजनीति की स्थिति इतनी घटिया किस्म की हो गयी है कि इसे मानव कल्याण का विज्ञान कहना अव गलत होगा, क्योंकि राजनीति करने वालों को ही शायद यह पता नहीं होगा। उन्हें तो सिर्फ इतना ही मालूम है कि राजनीति का मतलब, अपना कल्याण करना है। जहां एक ओर आपसी खींचातानी के बावजूद नेपाल में तत्काल सरकार की स्थिति टिकी हुई है लेकिन भीतर खलवली मची है। वहीं दूसरी ओर भारत में १२ वीं लोकसभा निर्वाचन सम्पन्न हो गया। किसी को पूर्ण बहुमत नहीं

मिलना इस बात का प्रमाण है कि वहाँ की जनता किसी भी पार्टी पर पूरा भरोसा नहीं करती है। सभी दलों के लिए यह एक चुनौती है । यदि इस चुनौती को स्वीकार कर वे आगे बढेंगे, देश और जनता के हित में कार्य करेंगे तब ही वे जनता के कृपापात्र बन सकते हैं। अन्यथा नहीं। अपने घरों में ही लडाई करते रहने से उन्नति और तरक्की का मार्ग बन्द हो जाता है। परिणामतः दूसरों के दान पर जीना पडता है और उनकी घुडकी भी खानी पडती है। इस तरह हम अपने ही चालों से मात खाते हैं। सिंगापुर के एक सेमिनार में मैं भी भाग ले रही थी। अन्तिम दिन रात में भोज था। जिस होटल में सभी को ठहराया गया वहीं भोज चल रहा था इसलिए देर रात तक गाना -बजाना चलता रहा । समाप्त होने पर प्रशिक्षण देनेवाली एक शिक्षिका ने एक टेबुल पर बैठे सभी लोगों से कहा कि कुछ केक बच गए हैं आप लोग इसे ले जाइए। जानते हैं वह टेबुल हम लोगों की थी अर्थात् एशिया (दक्षिण) वालों की, जिनके नसीब में सिर्फ लेकर खाना लिखा है। शायद यही कडवी सच्चाई है।

* * * * *

"यदि मनुष्य अपने आचरणों में गिरता जाएगा तो याद रखिए वह 'पशु' नहीं बनेगा । पशुओं में भी एक मर्यादा होती है । मनुष्य तो गिरकर पशुओं से कहीं अधिक मर्यादाहीन, क्रूर और हिंसक जीव बन जायगा "- महादेवी वर्मा ।

उन्होंने तो सोचा भी नहीं था, उनकी यह उक्ति इतनी जल्दी सच्चाई में बदल जाएगी। लेकिन आज का मनुष्य पतित बन गया है। उससे अच्छे तो जानवर हैं। समाज में हिंसक मनुष्यों की भरमार है। सभी के दिलों में दहशत भर गया है। सभी डरे और सहमे हुए हैं। कहीं चोरी का डर तो कहीं बम विस्फोट का। कहीं मासूम बच्चो के साथ हो रहे बलात्कार के कारण लोग सहमें सहमे रहते हैं। कहीं अपहरण तो कहीं दुर्घटना। अब आप ही बताइए कि इन सभी कारनामों में पशु बेचारे कहां आते हैं? उन्हें तो मालूम भी नहीं है कि चांद तारों पर पहुंचाने वाले मनुष्य हमसे भी तुच्छ काम में संलग्न है। राजनीतिक दगें-फसाद के कारण अल्जेरिया में मासूम बच्चों को पटक कर मार दिया जाता है तो इराक में नाकाबन्दी के कारण बच्चों की सामूहिक अन्त्येस्टी की गई। जानवर भी इतने हिंसक नहीं होते। अगर वह कभी किसी के बच्चे को उठाकर ले जाता है तो प्यार से उसे पालता भी है लेकिन अपने आपको महान् समझने वाला यह मनुष्य कितना घृणित काम करता है। इसका कोई लेखा जोखा नहीं है। हाथी जब पागल हो जाता है तो उसे मार दिया जाता है । जंगल का शेर जब आदमखोर बन जाता है तो उसे मारने का ऐलान किया जाता है लेकिन वहीं पर जब आदमी हिंसक बन जाता है तो उसे गिरफ्तार कर जमानत पर रिहा कर दिया जाता है या बगैर सबूत के बाइज्जत बरी कर दिया जाता है, यह कहां तक जायज है ? पशु से भी क्रूर और हिंसक होने के बाद भी उसके बचाव के अनेक उपाय किए जाते हैं। वैसे तो हर क्षेत्र में गिरावट की स्थिति है, लेकिन २१ वीं सदी का मानव श्री अरविन्द की कल्पना काअति

मानव आज किस मुकाम पर खडा है ? यह सोचने की बात है, सभी के विचार करने की बात है। समाचारपत्रों को उलटते ही दिल कचोटने लगता है आखिर ऐसा क्यों हो रहा है ? उपर उठने के बजाय लोग नीचे गिरते जा रहे हैं , अगर यही स्थिति रही तो वह क्षण दूर नहीं जब मनुष्य मनुष्य में जन्म लेने की कल्पना मात्र से सिहर जाएगा। भारत में लगातार हो रहे बम विस्फोट की जिम्मेवारी किस जानवर पर लादी जाएगी ? मरनेवालों के परिवार को कुछ मुआवजा देकर सरकार अपने कर्तव्यों का इतिश्री कर लेती है । अपहरण, बलात्कार और बम विस्फोट आज सभी जगह आम बात हो गयी है आखिर कौन है जो यह घृणित काम करता है ? जानवर या मानव ? आइए हम सब मिलकर इस पर विचार करें और इसे रोकने के लिए अपनी-अपनी जगह से ठोस कदम के साथ बुलन्द आवाज उठाएं।

* * * * *

यहां हर जगहों पर धडल्ले के साथ हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ बिकती हैं, इससे स्पष्ट होता है कि बौद्धिक और सामान्य जनों में भी हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं, दूरदर्शन, सिनेमा और गीत अधिक लोकप्रिय है। फिर भी स्वयं नेपाल से हिन्दी पत्र-पत्रिका का अटक-अटक कर निकलना, विशाल हिन्दी क्षेत्र के हमारे पडोसियों के साथ ही विश्वभर में फैले हिन्दी पाठकों के बडे समुदाय को आश्चर्य में डाल देती है।

अपने देश के साथ ही भारत और विश्व भर में फैले हिन्दी पाठकों के विशाल समुदाय का नेपाली प्रतिभा से परिचय हो, नेपाल की आन्तरिक समस्याओं का व-कलम नेपालियों के ही, उनको जानकारी मिले और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर हमारे दृष्टिकोण वे समझ सकें इस महान् उद्देश्य से ही हमने यह अभियान चलाया है। हमारी प्रेरणा व्यवसायिक स्पंधा नहीं बल्कि समय की मांग है। समय की इस मांग को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता । फलत: नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता की दुःखदायी स्थिति को देखते हुए भी हमने यह प्रयास किया है। आज के युग में ज्ञान के संचार की जवावदेही पत्र पत्रिकाओं को निभानी पडती है। वैसे तो नेपाल में पत्रकारिता का इतिहास अधिक लम्बा नहीं है , फिर भी कम अरसे में इसमें अद्‌भुत संख्यागत विस्तार हुआ है ।

'हिमालिनी' हिम देश से वहने वाली पत्रिकाओं की एक ऐसी धारा के रुप में प्रवाहित होने की कोशिश में है जो पवित्र हो और जिसमें डुबकी लगाने पर खाली हांथ वापस न निकलना पडे। हिम प्रदेश का यह छोटा सा फूल अपने देश की खुशबू को सीमा के आरपार फैलाने के लिए जी तोड कोशिश करेगा, लेकिन अकेले नहीं, आपके प्यार और सहयोग के साथ। अनेक बाधा, अडचनों को पार कर अपनी आय और आवश्यक जनशक्ति की दुर्लभता के बावजूद इसके निकलने से यदि आपको कुछ भी पारितोष मिल सका तो हमें सन्तोष होगा, साथ ही इस देश में हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य के लिए शुभ संकेत भी ...

* * * * *

वि.सं. २०५४ अब जाने ही वाला है और २०५५ अब प्रवेश करने के

लिए बिल्कुल तैयार खड़ा है। सभी के एक वर्ष का अन्त हो गया है, हो रहा है और होनेवाला है। वच्चे किशोर जवान यहां तक तो वहुत अच्छा लगता है। मोमवत्तियां जलायी जाती है, केक काटें जाते हैं और खुशियाँ मनाई जाती है। इस अवस्था तक तो नया जोश, नई उमगें हिलोर मारने लगती हैं और तव शुरु होता है प्रौढावस्था। जहां से जरा रोग एकदम पास खडा दिखाई देता है, और यहां से कसमसाने लगते हैं जीवन के अनेक उतार-चढाव। मजवूर हो जाते हैं उन पलों को जोडने और घटाने में। किसके हाथ क्या लगी.-आशा या निराशा। जिनके हाथ आशा लगी वे इस अवस्था में भी प्रफुल्लित नजर आते हैं। और वाकी समय को भी जोश और उत्साह से विताने के लिए तैयार रहते है, किन्तु जिनके हाथ निराशा लगी हो, वे पहले से जर्जर तो रहते ही हैं और शेष दिनों को काटने के लिए अपने आपको वोझ ही समझते है। आखिर ऐसा क्यों होता है? उम्र की धूप-छाव, तो स्वभाविक है, लेकिन खुशी, सन्तोष, उमंग और उत्साह तो अपने हाथ की वात है। जीवन जीने के लिए है। उतार-चढाव आते जाते रहते हैं। इससे परेशान नहीं होना चाहिए। उतार आए तो, दुखी या निराश न होकर उसका मुकावला करना चाहिए। अपनी कमजोरियों को देखकर सुधारने की कोशिश करनी चाहिए और सवसे वडी बात हिम्मत और धैर्य है। बस फिर क्या कहना आशा ही आशा है।

यदि आप चढाई पर हैं तो हजूर घमण्ड को उतार फेंकिए। दूसरों के दुःख-दर्द में शामिल हो जाइए। जो उतर गए हों उनको चढाने में मदद कर दीजिए बस फिर क्या? देखते जाइए, मदद करते जाइए और उपर चढते हुए जरावस्था को आराम से विताइए। अतः हम सभी नए वर्ष को नया अवसर मान, खोई आशा को पाने की कोशिश करें। जोश और उमंग के साथ संकल्प करें कि जैसा भी वक्त हो उसे स्वीकार करेंगे। इस तरह आगे बढने के निश्चय में ही जीवन की सार्थकता है और ऐसा करने वालों का ही जीवन सार्थक भी होता है। अतः नए वर्ष का स्वागत है। नई आशा, नया जोश और नये तौर तरीके के साथ।

'हिमालिनी' के पाठकों को नव वर्ष की मंगलमय शुभकामना।
दूसरा अंक आपके समक्ष पेश है।

बिखरता प्रजातंत्र

कहा जाता है कि भारत के महान् वैयाकरण पाणिनी 'व्याघ्र' की व्युत्पत्ति सोच रहे थे और उसमें इतना तल्लीन हो गये थे कि उसी समय बाघ आया और उन्हें मार डाला। आज प्रजातंत्र लगभग वैसा ही बाघ वना हुआ लगता है। अंतर यही है कि वह हमें खाने की तैयारी कर रहा है। और हम हैं कि प्रजातंत्र की अंधाधुंध एवं अनन्य आराधना में निरन्तर लगे हुए हैं। यह वात आज के जनप्रतिनिधियों एवं शासकों पर अधिक लागू होती है। राजनीतिक प्रश्नों पर सोचते हुए या राजनीतिक व्यवस्था को अधिकाधिक प्रजातांत्रिक बनाने का प्रयास करते हुए हम यह विल्कुल ही भूल जाते हैं कि प्रजातंत्र के संवंध में हमारी अंध प्रतिबद्धता ने देश को विनाश के कगार पर ला खडा किया है और समग्र जनता के अस्तित्व के समक्ष गंभीर प्रश्न चिन्ह खडा हो गया है। व्यवहार में प्रजातंत्र अंतहीन भौतिक समृद्धि की खोज और अनन्य शक्ति साधना का अनुषंगी बन गया है आज देश के मुंह पर वारुद बिछा दी गयी है, और सर्वनाश का विस्फोट किसी क्षण हो सकता है। देखने, सुनने, बोलने, दिखाने, सुनाने और चलने के स्तर पर हम महान् प्रजातंत्रवादी बन गये हैं परन्तु हम में मानवता नहीं आयी है, हम अपनी जनता के लिये सद्भाव अनुभव नहीं करते। यही नहीं, हम मानव संबंधों की कसौटी के रुप में मानवता नहीं, भौतिकता को स्वीकार करते हैं। और स्वयं अपनी ही मानवता अथवा अस्मिता से वंचित हैं।

हम प्रजातंत्र की आराधना तो करते हैं परन्तु सद्भाव से रहित होकर, सत्य को तो जानना चाहते हैं परन्तु अपने ही आभ्यंतर से कटकर, हम सारी दुनियां को जीत लेना चाहते है और अपनी इस-यात्रा को सितारों से भी आगे ले जाना चाहते हैं। परन्तु अपनी ही आत्मा को खोकर। आज जनता भीतर से आत्म-अलगाव से ग्रसित है और वाहर से मौत के दरवाजे पर खडी है। मौत की, जो आन्तरिक भी है और वाहरी भी, छाया के नीचे जनता प्रजातंत्र के संधान में लगी है। यह कितना हास्यास्पद है, हमें मौत नहीं जीवन चाहिये। मौत पैदा होती है हमारी संकीर्णताओं से, हमारे लोभ से, हमारी भौतिकता से, क्षेत्रवाद जैसी हमारी संकीर्ण निष्ठा से। जीवन पैदा होता है इन संकीर्णताओं से मुक्त होकर आत्म-प्रेम से, मानव-मानव के प्रेम से, राष्ट्र और समस्त मानव-समाज के लिये सद्भाव से। आत्म प्रेम और समस्त मानवता के लिये प्रेम, आज दोनों मिलकर एक हो गये हैं। भौतिक और आध्यात्मिक-आभ्यंतरिक दोनों ही स्तरों पर आज एक व्यक्ति का अस्तित्व समस्त मानवता के अस्तित्व से जुड गया है। अतः प्रजातंत्र के साथ-साथ आत्म ज्ञान की जरुरत है, प्रकृति अध्ययन के साथ साथ आत्म-प्रकृति का भी अध्ययन आवश्यक है, सत्य के बाहरी शोध के साथ-साथ उसका आन्तरिक शोध भी आवश्यक है। मस्तिष्क के गुणों के साथ-साथ हृदय के गुणों की भी आवश्यकता है।

इन प्रश्नों पर कोई गंभीरता से नहीं सोचता लेकिन इतिहास अपनी राह चलता है। परम्पराएं बनते -बनते बनती है और एकबारगी जब विकृत हो जाती हैं तो फिर संभले नहीं संभलती। यहां कभी कोई

सांसद प्रधानमंत्री को धमकी दे रहा है कि मुझे मंत्री नहीं बनाया गया तो आपकी सरकार गिरा दूंगा। कोई संसद सदस्य होकर भी अपनी गरिमा का खयाल किये बिना जनहित की जगह व्यवसाय हित को ही मूल मान रहा है तथा संसद में आये दिन नियमों और कायदे कानूनों की जो अवहेलना होती रहती है उसका असर जनजीवन पर प्रतिकूल पड रहा है।

नजदीक से देखने पर कभी -कभी सरकार की स्थिति करुण नजर आती हैं। किसी की दया पर निर्भर रहना दयनीय होता है, यह कोई किसी दिन संसद में आकर देखे। प्रधानमंत्री की कुर्सी 'म्यूजिकल चेयर' साबित हो रही है। बहुदलीय प्रजातंत्र की पुनर्बहाली के अभी आठ वर्ष ही हुए हैं और इन आठ वर्षों की अवधि में देश सात प्रधानमंत्री देख चुका है। दो प्रधानमंत्री प्रथम आम निर्वाचन से पूर्व और पांच प्रथम आम निर्वाचन के पश्चात् ठीक उसी तरह, जिस तरह सन् १९५१ से १९५९ तक की आठ वर्षों की अवधि में देश में आठ प्रधानमंत्री हुए थे। सात आम निर्वाचन से पूर्व और एक आम निर्वाचन के बाद।

दूसरी ओर वातावरण में एक नया शब्द थिरक रहा है 'सामाजिक न्याय'। इस सम्बन्ध में वक्त आने पर जनता फैसला करेगी कि सही क्या है और गलत क्या है? वैसे जब भी यह शब्द सामने आता है तो जवाहरलाल नेहरु की बातें याद आती हैं जो उन्होंने "विश्व इतिहास की झलक" में कही है। हरेक आदमी अपने ही फायदे की बात सोचता है। एक-से स्वार्थ रखनेवाले वर्ग भी ऐसा ही करते हैं। अगर कोई वर्ग किसी समाज पर राज करता है तो वह वहीं बना रहना और अपने से नीचे वर्गों को चूसकर फायदा उठाते रहना चाहता है। अक्लमन्दी और दुरन्देशी तकाजा करती है कि अंत में अपना भला करने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि जिस समाज के हम अंग हैं, उस सारे समाज का भला किया जाय। मगर सत्ताधारी व्यक्ति या वर्ग तो जो कुछ उसे मिला हुआ है, उसी को पकडे रहना चाहता है। इसका सबसे आसान तरीका दूसरे वर्गो और लोगों को यह यकीन दिलाते रहना है कि समाज की मौजूदा व्यवस्था से अच्छी और कोई व्यवस्था हो ही नहीं सकती। बात अचम्भे की है, मगर होता यहां तक है कि अन्त में लगभग सभी लोग इसमें पूरी तरह यकीन करने लगते हैं। और व्यवस्था को बदलने का विचार ही नहीं करते। इस ढंग से मुसीबत उठानेवाले लोग भी सचमुच यह समझ बैठते हैं कि इस व्यवस्था का बना रहना अच्छा है और उनके लिए ठोकरें, घूंसे खाना और भूखों मरना ही ठीक है। भले ही दूसरे लोग गुलछर्रे उडायें।

इस तरह लोग खयाल कर लेते हैं कि समाज व्यवस्था अटल है और अगर ज्यादातर आदमियों को इसमें दुःख भोगना पडता है तो उसमें किसी का कसूर नहीं है। कसूर खुद उनका है, या उनकी किस्मत ही ऐसी है या उनके पिछले पापों की सजा है। समाज हमेशा रुढिवादी होता है और परिवर्त्तन पसन्द नहीं करता। एक बार जिस लीक में पड जाता है, उसी पर चलते रहने में उसे मजा आता है और उसे यह पक्का विश्वास होता है कि वह सदा उसी लकीर पर चलने को बना है। यहां तक कि जो व्यक्ति उसकी हालत सुधारने के इरादे से उसे लीक छोडकर चलने को कहते हैं, वह ज्यादातर उन्हीं को सजा देता है।

लेकिन सामाजिक और आर्थिक हालतें उन लोगों की मर्जी का इन्तजार नहीं करतीं जो समाज के बारे में कुछ नहीं सोचते या आराम से बैठे रहते हैं। वे आगे

बढी चली जाती है, भले ही लोगों के विचार जैसे के तैसे बने रहें। इन चुने विचारों और असलियत के बीच का फासला बढता रहता है, और अगर इस खाई को पाटकर दोनों को मिलाने का कुछ भी उपाय नहीं किया जाता है, तो ढांचा चटक जाता है और आफतों का पहाड टूट पडता है। असली सामाजिक क्रान्तियां इसी तरह से होती हैं। अगर हालतें ऐसी हों, तो क्रांति हुए बिना नहीं रह सकती। यह दूसरी बात है कि दकियानुसी विचार उसे पीछे की ओर खींचकर देर लगवा दें। अगर हालतें ऐसी नहीं हों तो कुछ व्यक्ति चाहे कितना ही जोर लगाये, क्रान्ति नहीं पैदा कर सकते। जब क्रान्ति फूट ही पडती है तो फिर असली हालतों को लोगों की आंखों से छिपानेवाला पर्दा हट जाता है और वे बहुत जल्दी असलियत को समझ लेते हैं। एक बार लीक के बाहर निकलते ही वे सब दौडते हैं। यही वजह है कि क्रान्ति के समय में लोग जबर्दस्त वेग से आगे बढते हैं। इस तरह क्रान्ति रुढिवाद और पीछे रुके रहने का अटल नतीजा होती है। अगर समाज इस बेवकूफी की भूल में न फंसे कि कोई अटल समाज व्यवस्था भी होती है, बल्कि हमेशा बदलती हुई हालतों के साथ-साथ चलता रहे, तो समाज में क्रान्ति होगी ही। फिर तो लगातार विकास होता जाएगा।

आज की राजनीतिं ही कल का इतिहास है। लेकिन राजनीति ही किसी देश की बुनियाद नहीं होती। इस देश की सबसे बडी लाचारी यह है कि हम सब राजनीति के शिकंजे में बुरी तरह फंस गये हैं। लड़की के लिए किसी लड़के की तलाश हो तो किसी राजनेता के पास चलो और किसी अफसर की पोस्टिंग, ट्रान्सफर और पदोन्नति की बात हो तो किसी मंत्री को पकडो। बेरोजगारी दूर करने के लिए भी किसी नेता की जरुरत महसूस की जाती है और किसी मकान को खाली कराना हो तो उसके लिए भी इन्हीं की शरण में जाना पडता है।

एक ओर अधिकांश लोगों से बातें करने पर राजनीति के प्रति घृणा और राजनेताओं के प्रति गालियों की बौछार सुनने को मिलती हैं। लेकिन दूसरी ओर जब किसी मंत्री या राजनेता से सामना होता है तो बाछे खिल जाती हैं। सूर्य की पहली किरण के साथ हम दो चीजों के मोहताज हैं चाय और अखबार के। चाय की चुस्की के साथ जब तक अखबारों में राजनीति की खट्टी - मीट्टी खबरों का जायका नहीं लेते तब तक चाय का पूरा स्वाद नहीं मिलता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक अथवा धार्मिक खबरों की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता, लेकिन राजनीति की चटपटी चीज पढे बिना हम अपने ज्ञान को अधूरा मानते हैं। इसका अर्थ यह है कि राजनीति हमारे जीवन में आप्लावित होती जा रही है। यह मीठा नहीं कडवा सच है, लेकिन है यह ऐसा सच जिसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता।

अत: आज चिंतन को विज्ञान और दर्शन के बीच, अफ्लातून और अरस्तू के बीच समन्वय स्थापित करना होगा और राज व्यवस्था की उत्तार जीविता की समस्या को समग्र मानवता की उत्तरजीविता की समस्या से जोडना होगा। यदि प्रजातंत्र को स्थायी ओर सर्वभौम आयाम प्राप्त करना है तो उसे मार्क्स के मानववाद और गांधी के सत्याग्रह के आधारों को स्वीकार करना होगा और इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच समन्वय भी स्थापित करना होगा।

-डा नवीन मिश्रा

ज्ञान जानेने में नहीं वैसा बनने में है

-जैनेन्द

विविध रूपों में सीता

प्रो. उपेन्द्र प्रसाद कमल

सह-प्राध्यापक

रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाम

सीता नाम से इतना ही प्रकट होता है कि सीता कौन, क्या और किन रुपों में जानी जाती है ? वेद, पुराण, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ, विभिन्न रामायणों (देशविदेश) आदि में सीता के सम्वन्ध में व्याप्त धारणायें क्या हैं ? वैसे 'सीता' हिन्दू, हिन्दी तथा भारतीय उपमहाद्वीप में ऐसी रम-पच गई है कि उसे अन्य तरह से सोचना भी गुनाह जैसा लगता है। दुर्भिक्ष में हाहाकार करती प्रजा, रुष्ट इन्द्र और - रोषोद्दीप्त सूर्य नें विदेह जनक को हल-कषण के लिये विवश कर दिया था। उसी हल की नोंक से भू-देवी के प्रसाद स्वरुप प्राप्त हुई अद्वितीय रुप-सम्पन्न वालिका 'सीता', विदेह जनक की पुत्री वैदेही। यह है राम कथा के धरातल पर सीता का प्रथम अवतरण। रामायण में जितने रुपों में राम की कथा वर्णित है, उतनी न सही किन्तु वहुत अंशों में सीता की कथा भी है। विजयी आर्य -संस्कृति के देवता विष्णु पूर्ण परात्पर ब्रह्म के अवतार माने गये हैं। सीता राम की पत्नी होने के कारण लक्ष्मी का अवतार है जो कालान्तर में ब्रह्म की शक्ति मानी गई है। सीता शव्द का प्रयोग वेदों से मिलने लगता है। वहां वह कृषि-देवता के रुप मे आई है। इसीलिये वह पृथ्वी से सम्वद्ध है। कृषि की अधिष्ठात्री सीता का उल्लेख ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के ५७ वें सूक्त के छठे-सातवें मंत्र में मिलता है। लक्ष्मी और सीता का अभेद कौशिक सूत्र में वर्णित है। परन्तु हल की 'मूठ' द्वारा प्राप्त होने के कारण जनक ने अपनी पोष्य पुत्री का नाम सीता रखा जो राम की पत्नी वनी। राम पूर्व तापनीय उपनिषद् में सीता राम की प्रकृति और आह्लादिनी शक्ति है। पुनः रामोत्तर तापनीय उपनिषद् सीता को जगदानन्ददायिनी उद्भव स्थिति संहारकारिणी मूल प्रकृति के रुप में प्रतिष्ठित करता है। राम और सीता दोनों व्रह्म और माया है - एक ही तत्व हैं और विराट ॐकार के ही स्वरुप हैं।

'सीता' शव्द का 'स' सत्य और अमृत का सूचक है। 'सीता का ईकार भगवान विष्णु की योगमाया अथवा अव्यक्त स्वरुप महामाया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार 'सीता' भूमिजा है। इस प्रकार सीता के सम्वन्ध में अनेक कथायें प्रचलित हैं - वेदवती प्रसंग, अद्भुत रामायण, गुण भद्राचार्य के उत्तरपुराण, काश्मीरी रामायण, तिब्वती और श्रोतानी रामायण, जावा के सेंरत काण्ड, श्याम के राम जातक तथा पालक-पलाम, आनन्द रामायण, पायम चरित्र, दशावतार चरित्, दशरथ जातक हिंदेशिया की राम के लिंग आदि ग्रंथों में कहीं उसे भूमिजा, आयोनिजा, मंदोदरी-पुत्री, रावण की पुत्री, अग्निजा, पद्मजा, दशरथात्मजा माना जाता

है। वह जनक की अज्ञात कुल शीला के रुप में ही पायी जाती है और जनक उसका पुत्रीवत् ही पालन करते हैं। जैन और वौद्ध साहित्यों में सीता को रावण और दशरथ की पुत्री मानकर अपने नैतिक दिवालियेपन का ही परिचय दिया है। सीता के जीवन की प्रमुख घटनायें विवाह, वनवास, पंचवटी-निवास, सीता हरण, अग्नि-परीक्षा, सीता का भू-प्रवेश है। यहां विविध रुपों में सीता - कन्या, सह धर्मिणी और राज-राजेश्वरी के रूप में कैसे आई है? इस तथ्य पर भी रोशनी देनी है। सर्व प्रथम (१) कन्या के रुप में जनक-पुत्री सीता को देखना आवश्यक है। सीता जन्म के रहस्य, उद्देश्य पर विशेष रुप से बल न देकर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है कि मिथिला नरेश विदेह जनक की पालिता पुत्री सीता का चरित्र आदर्श भारतीय-पुत्री का आदर्श चरित्र है। नहीं तो, महाराज जनक की कठोर प्रतिज्ञा "शिव-धनुष भंग करने वाले से ही सीता का विवाह" जैसे कठिन-प्रण को जानकर भी वह मौन कैसे रहती? क्योंकि मर्यादा और आदर्श प्रतिष्ठापन के लिए ही सीता अवतरण हुआ था। गृहस्थ की बेटी की तरह देवस्थल लिपने-पोतने तथा सफाई का काम वह स्वयं करती है। पुष्पवाटिका प्रसंग में भी बिलम्ब होने पर माता क्रुद्ध होंगी ऐसा कहकर वह विदा हो जाती है -

गूढ गिरा सुनि सिय सुकुचानी,
भएउ बिलम्ब मतु भय मान।

विवाह के पश्चात् माताएं सीता को उपदेश देती हैं- "सास ससुर की सेवा करती हुई राम की अनुगामिनी रहकर पतिव्रत धर्म का पालन करती हुई सुख से रहें।"

गिरिजा भवानी से सीता प्रार्थना करती है-

'मोर मनोरथ जानहु नीके,
वसहु सदा उर पुर सब हीके।
कीन्हेउ प्रकट न कारण तेही,
अस कहि चरण गही वैदेही॥

भवानी का आशीर्वाद-
सुनु सिय सत्य अशीष हमारी,
पूजिहि मन कामना तुम्हारी।

धनुभंग के पश्चात-
सिय हिय सुख वरनिय केही भांति,
जनुचातकी पाई जल स्वाती।

वन प्रसंग में राम सीता को समझाते हुये कहते हैं -
आपन मोर नीक जो चहहु, वचन हमार मानि गृह रहहु।
आयसु मोर सासु सेवकाई, सव विधि भामिनी भवन भलाई॥
पुनः-भूमि सयन वलकल वसन, असन कन्द फल मूल,
ते कि सदा सव दिन मिलहिं सवई समय अनुकूल।
साथ ही - नर अहार रजनी चर करही,
............तुम्ह भीरु सुभाए।

पर सीता तो सहधर्मिणी है-
प्राणनाथ करुनायतन सुन्दर सुखद सुजान,
तुम्ह विनु रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नरक समान।
जिय विनु देह नदी विनु वारी ......नयन निहारे।
तथा
राखिअ अवध जो अवधि लगि, रहत जानि अहि प्रान।

आखिर कौशल्या ने आशीर्वचनों सहित सीता को विदा किया। सीता ने सासु के चरणों में निवेदन किया कि-
सुनिअ मातु मैं परम अभागी......
सुफल किन्हा॥

सासुका आशीष-
अचल होई अहिवात तुम्हारा,
जब लागे गंग जमुन जलधारा।

अरण्य काण्ड:-

सीता के चरित्र पर ऋषि पत्नी अनुसुया की सीख का ज्वलंत प्रभाव देखा जाता है - "माता, पिता, भाई तो हितकारी है पर एक सीमा तक ही। परन्तु पति असीम सुख देने वाले हैं। वह स्त्री अधम है जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती। धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री इन चारों का विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, वहरा, क्रोधी और अत्यन्त ही दीन पति का अपमान करने से उनको कष्ट भोगने पडते हैं। ये सारे वचन संसार के लिये हैं। सती अनुसूया के अनुसार राम, सीता को प्राणों के समान प्रिय हैं। सीता का सहधर्मिणी रुप आदर्श प्रस्तुत करने में पूर्ण सक्षम है। शूर्पणखा के नाक-कान विच्छेद कर दिये जाने के बाद लक्ष्मण की अनुपस्थिति में राम ने सीता को अग्नि-प्रवेश कर जाने की आज्ञा दी तथा छाया-सीता पंचवटी में रहने लगी। लक्ष्मण भी इस रहस्य से अनभिज्ञ थे। राम की लीला जो प्रारम्भ हो रही है, सीता का सहधार्मणी रुप यहां भी स्पष्ट झलकता है। 'साकेत' की सीता तो पंचवटी आश्रम में खुरपी लेकर फूलवारी में काम करती है अर्थात् वह आधुनिक नारी की तरह पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलती हुई स्वावलम्विनी है।

सुन्दरकाण्ड:-

लंकाधिपति रावण द्वारा सीता का अपहरण और प्रताड़ना- फिर भी सीता अपने दृढ निश्चय से चंचल न होकर राम के प्रति अपने अमिट प्रेम को ही प्रकट करती है। भक्तशिरोमणि हनुमान जी के द्वारा मुद्रिका गिराये जाने पर भी सीता, रावण की माया जान थोड़ी देर मौन रहती है। पर जव उसे हनुमान से पूर्ण परिचय मिल जाता है तो राम के दुःख की कल्पना मात्र से ही वह विकल हो जाती है। उसकी वियोगाग्नि में और ज्वाला बढ जाती है।

लंकाकाण्ड में गो. तुलसी ने रावणवध के बाद सीता-राम मिलन, सीता का अग्नि-प्रवेश आदि प्रसंग दिखाकर उसके पवित्र होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। वास्तव में सीता, राम के विना जीवित नही रह सकती। इसीलिये तो राम के कर्तव्य पालन में सहयोगिनी सीता, परित्याग को सहर्ष स्वीकार करती है। चित्रकूट के रास्ते में यमुना, गंगा, प्रयाग आदि के दर्शन कर पुण्यलाभ के लिये राम, सीता को प्रेरित करते हैं। उत्तरकाण्ड में राम सीता से कहते हैं- हे सुमुखी! हे विनीता! अपनी छाया मात्र पृथ्वी पर छोड़ अपनी पवित्र धाम में जा रहो। क्यों कि एक हजार वर्ष तक और उन्हें पिता का राज्य-संचालन जो करना था। भरतजी के अनुसार सीता, राम के विना क्षणभर भी जीवित नही रह सकती, जैसे पानी के विना मछली। अर्थात् सीता के पातिव्रत्य धर्म में, सहधर्मिणी के रुप में कोई दो मत नहीं हो सकता। सोने के समान आग में तपाई गई सीता के चरित्र से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं। लव-कुश प्रसंग में हम देखते हैं कि चारो भाई युद्ध भूमि में गिर पडे और सीता ने अपने को विधवा जान सती होने का उपक्रम आरम्भ कर दिया। पर मुनीश्वर वाल्मीकि द्वारा रहस्योद्घाटन हो जाने पर वह लव-कुश को राम के सुपुर्द कर पाताल-लोक में चली जाती है। यहां तक तो सीता के सहधर्मिणी रुप के दर्शन होते हैं। राज राजेश्वरी के रुप में सीता महारानी का चरित्र क्षणिक तथा कहीं -कहीं देखा जाता है। अश्वमेध यज्ञ के प्रसंग में भी सीता की अनुपस्थिति की पूर्ति सोने की सीता करती है। विवाहोपरान्त सीता, राम की पत्नी, दशरथ -कौशल्या की कुलवधु, भरत, लक्ष्मण

तथा शुत्रुघ्न की माता-तुल्य भाभी, प्रजाजनों की आशा-केन्द्र तथा विदेह जनक - सुनयना की पुत्री के रुप में ही है। राज्याभिषेक हो भी नहीं पाता कि उन्हें बन-गमन करना पड़ता है। वनवास प्रसंग में सीता राम की हृदयेश्वरी, प्राणेश्वरी तथा सहधर्मिणी के उत्तम चरित्र का प्रदर्शन मात्र करती है। सीता-हरण के पश्चात रावण के चंगुल से मुक्त होने का प्रयास तथा रावणवध के वाद अयोध्या लौटने पर उन्हें जो सम्मान प्राप्त होता है वह किसी राज राजेश्वरी से कम नहीं है। राम के राज्याभिषेक के वाद सीता का राजराजेश्वरी स्वरुप जनसमक्ष आता है। लोगों में प्रसिद्धि, प्रजा-वत्सलता, राजकुल-सम्मान की रक्षा तथा मुनि आश्रमों में जाकर वस्त्राभूषण आदि वांटने की इंच्छा व्यक्त करना सीता के राजराजेश्वरी रुप का प्रकर्ट दिग्दर्शन करता है। वह तो आदर्श पुत्री, आदर्शपत्नी आदर्श कुल-वधु, आदर्श भाभी तथा अन्त में आदर्श सहधर्मिणी के रुप में ही जानी जाती है। आदर्श और मर्यादा ही सीता का चरित्र है। इसीलिये तो सीता ने लोक के लिये प्रेम को भुला दिया था और राधा ने प्रेम के लिये लोक को भुला दिया था। धन्य है सीता जिसके चरित्र में कहीं कोई खोट नहीं। आधुनिक युग की सीता यदि अपने पति का साथ दे सकती है तो सुखैश्वर्य की प्राप्ति तक, पर वह सीता सुख-दुख में साथ निभाती है। आज का वैज्ञानिक तथा तार्किक युग सीता के चरित्र में कुछ नयापन खोजता है। अन्धानुकरण अपने विवेक को गिरवी रखना है जो सीता में पाया जाता है। समतावादी आज के युग में राम का अधिनायकवादी विचार-धारा किसी न किसी रुप में शमन होना ही चाहिये। फिर भी सीता के चरित्र का जो महल तैयार किया गया है उसकी नींव मिथिला से सम्बन्धित होने के कारण नारी समाज के लिये आदर्श और प्रेरणा के श्रोत हैं। सीता उस राजघराने में पाली गई है जहां के राजा विदेह होते हैं। प्रजा का सुख ही जिसका वैभव है, और यज्ञ कुण्ड से स्वयंभू होने के कारण जो राजा स्वयं जनक हैं। वैसी सीता का चरित्र गौरव की वस्तु है।

'राधेश्याम रामायण' में सीता, माता कौशल्या से वन जाने की आज्ञा मांगना उसके कुलवधु जन्य शिष्टाचार का परिचायक है। 'साकेत' की सीता को एकाधिकार पसन्द नहीं। वह तो समतावादी समाज का निर्माण चाहती है। 'वैदेही-वनवास' में सच्ची सहधर्मिणी के रुप में सीता आई है। राम के धर्म का पालन ही उसका धर्म है। आत्रेयी के अनुसार सीता कर्त्तव्यनिष्ठा और पतिनिष्ठा की प्रतिमूर्त्ति है। 'उर्मिला' की सीता, राम के सांस्कृतिक अभियान में सहायिका का काम करती है। 'मैथिली-मंगल' की सीता राम को देश-रक्षा के लिये प्रेरित करती हैं। 'लोकायतन' के राम और सीता दशरथी ही नहीं अपितु परब्रह्म और पराशक्ति हैं। मारीच प्रसंग में सीता में नारी-सुलभ चंचलता है। वाल्मीकि की सीता मानवी है। जिनमें मानवोचित गुण-दोष हैं। चित्रकूट में सीता को देख जनक कहते हैं- 'पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ" यही सीता वाल्मीकि के अनुसार राम के प्रति कटु हो जाती है -वन प्रसंग में रामचन्द्रिका की सीता नीतिज्ञ, वाक-कुशल तथा भावुक है। राम के एक पत्नी व्रतधारी होने का श्रेय उनसे अधिक सीता के रुप को है। इस प्रकार सीता के विविध रुपों की चर्चा यत्र-तत्र और सर्वत्र की गई है। अर्थात् जिस रुप में सीता को देखना चाहेंगे उसी रुप में वह मिलेगी। यही उसके विविध रुपों की विशेषता है।

●

शिल्पकला

नेपाल में बौद्धशिल्प के आयाम

डा प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"

नेपाल की बौद्ध पृष्ठभूमि और परम्परा को जानने के लिए वहां की राज वंशावली तथा बौद्ध पुराण महत्वपूर्ण श्रोत हैं, जिनमें उपत्यका की बौद्ध गतिविधियों का प्रकारांतर से आकलन किया गया है। भारत से संदर्भ की उत्तराभिमुखी यात्रा का पहला पड़ाव वस्तुतः नेपाल ही था और गौतम बुद्ध की जन्मभूमि लुम्बिनी की अभिलेखीय एवं राजकीय संपुष्टि सम्राट अशोक के स्तंभ लेख (२४९ ई.पू.) से हो जाती है। सम्राट अशोक ने लुम्बिनी की धर्मयात्रा की थी तथा यात्रा की स्मृति में अभिलेखयुक्त स्तंभ को स्थापित कया था, जो नेपाल में बौद्ध धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण सीमा चिन्ह बन गया है। देवपाटन में अशोक की प्रेरणा से बने पांच बौद्धस्तूप अवशिष्ट हैं। नेपाली बौद्ध स्थापत्य के अवशेषों में लुम्बिनी का अशोक स्तंभ और देवपाटन के स्तूप प्राचीनतम उदाहरण है। इस प्रकार इ.पू. तीसरी शती में निर्मित ये बौद्धस्थापत्य नेपाल में बौद्धशिल्प के इतिहास का प्रस्थान विन्दु है जिनके निर्माण के मूल में अशोक की बौद्धप्रियता सन्निहित थी। चूंकि अशोक हीनयानी था, इसलिए उन्होंने बौद्ध प्रतीकों में स्तूप पूजा को कलात्मक आयाम दिया, क्योंकि अपनी महानिर्वाण यात्रा में बुद्ध ने आनंद की जिज्ञासा पर निर्वाणोपरांत स्तूप बनाने का निर्देश दिया था। आज लुम्बिनी गौतम बुद्ध द्वारा घोषित चतुः महाठानानि अर्थात् चार महान् बौद्ध तीर्थों में परिगणित है।

स्तूप और चैत्य वस्तुतः बौद्ध स्थापत्य है, जिसका नेपाल में प्रवेश सम्राट अशोक के साथ हुआ। नेपाल उपत्यका में देवपाटन स्तुपों के वाद स्वयंभूनाथ तथा बोधनाथ चैत्य शैली के उत्कृष्ट तथा प्राचीनतम् उदाहरण हैं। स्वयंभू नाथ और बोधनाथ के स्थापत्यशीर्ष पर चारों ओर वनी बुद्ध की करुणामयी आंखें नेपाल की अपनी विशेष अलंकरण शैली है, जो विश्व के बौद्ध स्थापत्य में अपनी अलग पहचान वनाने के कारण महत्वपूर्ण है। इन चैत्यों में प्रदक्षिणा पथ के चार कोणों पर छोटे-छोटे स्तूप एवं बहुत सारे मनौती स्तूप बने हैं। 'ॐ मणि पदमे हुँ का मंत्रोचार करते हुए बौद्धमार्गी प्रदक्षिण करने में अपूर्व शांति का अनुभव करते हैं। बौद्ध स्थापत्य के गर्भगृह एवं आलों में विभिन्न युगों की बुद्ध एवं बौद्ध देवी-देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। स्थापत्य की भीतरी दीवारों पर बौद्ध पट चित्र बने हैं। इस प्रकार ये चैत्य बौद्ध शिल्प के अघोषित संग्रहालय बन गये हैं, जहां कई शताब्दियों के बौद्ध स्थापत्य, बौद्ध मूर्तियों एवं बौद्ध चित्रों के उत्कृष्ट प्रतिमान संगृहीत हैं। बोधनाथ स्थापत्य की सज्जा टेरोकोटा शैली में की गयी हैं। इसमें दो सौ आठ बौद्ध मूर्तियों के उत्कृष्ट आदर्श कला समीक्षकों का

ध्यानाकृष्ट करने के लिए पर्याप्त है। डा. राजेन्द्र राम के अनुसार साधनमाला, निरुपन्न योगावली, प्रतिमानलक्षणम्, गुह्य समाज तंत्र आदि शिल्पशास्त्रीय ग्रंथों के मान्य आदर्शों पर निर्मित नेपालीय शिल्पों का अपूर्व संग्रह स्वयंभू, वोधनाथ, आर्य भिक्षू संघ, यमगल विहार, चक्रविहार, योगाविहार, चित्रविहार आदि में है। यद्यपि ये वौद्ध कलादर्श भारतीय पृष्ठभूमि और परम्परा में वने हैं तथापि इन पर तिव्वती एवं चीनी प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। विशेपकर वज्रयानी प्रभाव में वने नेपाली शिल्प इसके उदाहरण हैं। लामा तारानाथ (१६-१७ वीं) ने भी इसे कुछ इस प्रकार स्वीकार किया है- नेपाल की प्राचीन शिल्प परम्परा यद्यपि पुरानी पशिचमी है, जिनपर पूर्वी मगध काल परम्परा का प्रभाव होते हुए भी नेपाल की अपनी परम्परा एवं शैली जान पडती है। इससे पूर्व नेपाल और भारत आये तिव्वती धर्मयात्री धर्मस्वामी (१३ वीं) ने भी कुछ ऐसा ही संकेत दिया है। इस प्रकार नेपाल वौद्ध शिल्प के निर्माण में भारतीय, तिव्वती एवं चीनी शिल्पों का समन्वित रुप विकसित हुआ, जो आज नेपाली शैली या नेवार शैली के रुप में जाना जाता है। इनके उपादान (काष्ठ, पाषण एव कांस्य), उपकरण और निर्माण विधि अपनी है। विश्व का शायद ही कोई प्रमुख संग्रहालय हो, जहां नेपाल की बौद्ध मूर्तियों का प्रतिनिधित्व न हो।

तिब्वत में वौद्ध मूर्तिकला का प्रवेश नेपाल की राजकुमारी भृकुटी (६४० ई.) एवं चीन की राजकुमारी कोङ -जो (६४१ ई.) के साथ हुआ, जो तिव्वती सम्राट स्रोंगचन-गमपों के साथ व्याही गयीं। भृकुटी अपने साथ अक्षोम्य, मैत्रेय और तारा एवं कोङ-जो वुद्ध की मूर्ति साथ लेकर गयी जिन्हें जो-खंग के वौद्ध मंदिर में स्थापित किया गया। इस वौद्ध मंदिर के निर्माण में नेपाल एवं तिव्वत के शिल्पकारों का योगदान उल्लेखनीय है। जो खङ का वौद्ध स्थापत्य आज भी अवशिष्ट है। लेकिन नेपाल उपत्यका में वौद्धशिल्प का आरंभ लिच्छवियों के आगमन से होता है, जिसका विकास एवं विस्तार नेपाल शैली के रुप में हुआ। पांचवीं से सातवीं सदी की वौद्ध मूर्तियां इसकी उदाहरण हैं। रमेश जंग थापा ने नेपाल शैली में वनी प्राचीन बौद्ध मूर्तियों की ओर हमारा ध्यानाकृष्ट किया है - १.रामशाह पथ की वुद्धमूर्ति (५-६ ठी सदी), २. वंगेमुडा की वुद्ध मूर्ति (सातवीं सदी) ३.मायादेवी की मूर्ति (नवी सदी) और एकदलीय कलम पर ज्वालाओं से आवृत्त वुद्ध की स्थानक मूर्ति (नवी सदी)। थापा ने इन्हें विशुद्ध नेपाली शैली में वना कहा है। नेपाल वौद्ध मूर्ति शिल्प में अंकित अण्डाकार प्रभावली तथा दोहरी प्रभावली अपनी विशिष्ट पहचान लिए हुई है। ज्वालाओं का आवृत्त तांत्रिक प्रभाव है। इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आलोक में नेपाल में वौद्ध मूर्तिशिल्प का आरंभ पांचवी-छठी सदी में होता है जवकि वौद्ध स्थापत्य का श्री गणेश तीसरी शती ई. पू. में ही हो चुका था। लैनसिंह वांग्देल के अनुसार नेपाल की बौद्ध मूर्तियों के संद्धर्भ पुण्डरीक, साधनमाला, मंजुश्री मूलकल्प आदि वौद्ध शिल्प विषयक ग्रंथों ने विशेष प्रभावित किया है।

नेपाल के वौद्ध शिल्प को सर्वाधिक प्रभावित किया विहार के मध्ययुगीन बौद्ध महाविहारों में (छठी से वारहवीं सदी) नालंदा, आदेतपुरी, विक्रमशिला एवं वज्रासन ने।

इन महाविहारों में वज्रयान के

अत्यंत विकसित रुप निश्चित किये गये थे, जिसका प्रभाव देश-देशांतर में प्रचलित वौद्ध धर्म के कलात्मक आयामों में देखा जा सकता है। वज्रयान (८००-१२००ई.) के उत्कर्ष काल में असंख्य बौद्धदेवी-देवताओं की कल्पना की गयी जिनमें पंचध्यानी बुद्धों-अभिताभ, अक्षोभ्य, वैरोचन, अमोघसिद्धि और रत्न संभव-के अतिरिक्त नेपाल के परिवेश में छठे ध्यानी वुद्ध के रूप में वज्रसत्व की परिकल्पना विशिष्ट है। इन ध्यानी बुद्धों से उत्पन्न वोधिसत्वों में अभिताभ से पद्मपाणि, अक्षोभ्य से वज्रपाणि, वैरोचन से समंतभद्र, अमोघसिद्धि से वज्रपाणि, रत्नसंभव से रत्नपाणि तथा वज्रसत्व से घंटापाणि उद्भूत हुए। इन पंचध्यानी बुद्धों की अपनी शक्तियों के साथ सन्नद्ध किया गया, फिर तो वौद्ध देवी-देवताओं के महावन में मूलबौद्धिक चिंतन ही खो गया।

नेपाल की बौद्ध पृष्ठभूमि में वोधिसत्वों में मंजुश्री, अवलोकितेश्वर और मैत्रेय की कल्पना और उसके महत्व को शिल्प माध्यमों से विस्तारित किया गया। नेपाल के इतिहास के अनुसार मंजुश्री का नेपाल आगमन चीन से हुआ था। अपनी चमत्कारिक भूमिका के कारण उन्हें वोधिसत्व की प्रतिष्ठा दी गयी। नेपाल में वोधिसत्व मंजुश्री की मूर्तियां अधिक मिली हैं, जिनके वायें हाथ में प्रज्ञा पारमिता की पुस्तक और दाहिने हाथ मे तलवार धारित है। इन्हें वौद्ध विद्या का देवता माना जाता है। इनका स्वरुप आर्य मंजुश्री, मूल काव्य, गृह्य समाज तंत्र, अभितायुसुत्र आदि ग्रंथों में एवं चमत्कारिक कहानियां स्वयंभू पुराण में पायी जाती है। मंजुश्री की मध्यकालीन कांस्य प्रतिमाएं वडौदा संग्रहालय में संरक्षित है। पन्द्रहवीं-सोलहवी सदी की इस कांस्य प्रतिमा में मंजुश्री कमलासन पर आसीन हैं। चार रक्षक देवताओं के अतिरिक्त चार ध्यानी बुद्ध कमलों पर आसीन हैं। मंजूश्री पांचवें ध्यानी वुद्ध के अवतरित प्रतीक है। मंजुश्री विहार में सरस्वती पूजन के दिन इनकी विशेष पूजा होती है। नेपाल के मूर्तिशिल्प में इनके अनेक रुप मिलते हैं -मंजुघोष, धर्म घातु वागीश्वर, वागीश्वर, अरपचन आदि।

नेपाल की कला में अवलोकितेश्वर दूसरे लोकप्रिय बोधिसत्व के रुप में विशिष्ट है। उपत्यका के मच्छन्दर वहाल (विहार) में अवलोकितेश्वर की एक सौ आठ प्रकार की मूर्तियां हैं जो 'साधनमाला' के मान्य आदर्शों पर बनी हैं। अवलोकितेश्वर का इतना बडा रूप विस्तार नेपाल से वाहर अलभ्य है। 'साधनमाला' में इनके तीस वत्तीस रुप ही निर्दिष्ट हैं—षडक्षरी लोकेश्वर, सिंहनाद लोकेश्वर, लोकनाथ, सुखावती लोकेश्वर, खसर्पण, मायाजाल क्रम अवलोकितेश्वर, हरिहरि वाहनोद्भव आदि। वोधिसत्व तो वुद्धत्व प्राप्ति की पूर्व अवस्था है, जिनका स्वभाव लोककल्याण के लिए कर्मशील बना रहता होता है, जबकि मैत्रेय 'भविष्य के बुद्ध' के रुप में परिकल्पित हैं। इस प्रकार बोधिसत्व गौतम वुद्ध के भूतकालीन स्वरुप को और मैत्रेय भविष्य के स्वरुप को निर्दिष्ट करता है। नेपाल के बौद्ध परिवेश में १७-१८ वीं में निर्मित मैत्रेय की अपूर्व कांस्य प्रतिमा को उदाहृत किया गया है। यह नेपाली-तिव्वती शैली का अनुपम उदाहरण है।

मध्यकालीन नेपाली बौद्ध स्थापत्य के स्वरुप निर्माण में अरनिको की भूमिका उल्लेखनीय है। अरनिको (१३वीं सदीं) के

नेतृत्व में नेपाली शिल्पियों के एक दल ने चीनी सम्राट कुवलय खान के आमंत्रण पर चीन और तिव्वत जाकर पगोडा शैली के जिस बौद्ध स्थापत्य की रचना की, वह सदियों तक एशियाई देशों में बौद्ध स्थापत्य का आदर्श वना रहा। नेपाल में इस शैली के अनेक मंदिर वने हैं। लेकिन उपत्यका के मल्लकालीन शासनकाल (सदाशिव मल्ल) में ललितपुर (पाटन) में वना माहाबौद्ध (१५वीं सदी) वस्तुतः वोधगया के महावोधि की ही प्रतिकृति है। इस की २३५० ईंटों पर गौतम वुद्ध की जीवन यात्रा से सम्वद्ध प्रसंगों का कलात्मक रुपांकन हुआ है। महावोधि के वास्तुआदर्श पर चीन, वर्मा (म्यामार) आदि देशों में भी प्रतिकृतिया वनी। इन बौद्ध मठ-मंदिरों, चैत्यस्तूपों के अलावे वहुत वडी संख्या में बौद्ध विहारों का निर्माण हुआ, जिनमें लोमड़ी देवी का विहार, नुवाकोट का हेमवर्ण विहार नौलवहाल, ढोकवहाल (लिच्छवि विहार), मच्छन्दर वहाल, यमगल विहार, चक्रविहार, यागवहाल आदि सदियों तक बौद्ध गतिविधियों के केन्द्र वने रहे, जिनमें बौद्ध शिल्प के आयामों का विस्तार देखा जा सकता है। तिव्वती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामी के अनुसार नेपाल के चैत्यों, विहारों एवं मठों की बौद्ध मूर्तिया अपनी कलाशैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कीर्तिपुर विहार उपत्यका की विहार परम्परा की आधुनिक कड़ी है जिसके परिसर में नेपाल, भारत और थाईलैण्ड के बौद्ध स्थापत्यों को प्रत्यादर्शित किया गया है। नेपाल की बौद्ध चित्र कला के सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के लिए वहां के बौद्ध मठ-मंदिरों, चैत्य -स्तूपों विहारों -महाविहारों एवं संग्रहालयों का परिदर्शन आवश्यक है। बौद्ध चित्रकला के प्राचीनतम उदाहरण तुन-हुआन चौथीं सदी (चीन) एवं अंजता (भारत)की गुफाओं में भित्तिचित्रों के रुप में अवशिष्ट है। तुन हुआन के भित्तिचित्रों में हुएन सांग की धर्मयात्राओं का ऐतिहासिक चित्रण महत्वपूर्ण है और अजंता के भित्तिचित्रों में पद्मपाणि वोधिसत्व सर्वश्रेष्ठ कलात्मक उपलब्धि है। नेपाल के बौद्ध स्थापत्यों की दीवारें भी चित्रित थीं और है। वुद्ध और बौद्ध देवी-देवता नेपाल की सांस्कृतिक आत्मा है, जिसके संरक्षण एव विकास में मल्ल राजाओं का योगदान उल्लेखनीय है। नेपाल की बौद्ध चित्रशैली के मूल में अजंता शैली और मध्यकालीन पाल शैली समन्वित है, जो नेपाल की मध्यकालीन बौद्ध अवधारणाओं पर आधारित है। मध्यकालीन बौद्ध शिल्पों का मूलकेन्द्र मुख्यतः नालंदा, विक्रमशिला और ओदंत पुरी महाविहार थे, जहां से वज्रयानी पृष्ठभूमि में कला सृजन के आदर्श सुनिश्चित किये गये थे। नेपाल वज्रयानियों का विकसित गढ था जहां प्रज्ञापारमिता जैसे बौद्ध ग्रंथों के चित्रण की प्रक्रिया सदियों तक कायम रही। इस क्रम में वीरमन का नाम विशेष उल्लेखनीय है, जो बौद्ध पाण्डुलिपियों को चित्रित करने में प्रवीण थे। उन्होंने प्रज्ञापारमिता, पंचरक्षा आदि ग्रंथों का चित्रित किया था, जिनमें चौवीस वोधिसत्वों का चित्रण महत्वपूर्ण है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा लाये गये तिव्वती बौद्ध ग्रंथों पर अंकित नेपाली चित्रकला मनमुग्ध कर देती है। राहुलजी के अनुसार डुक्पालामा के यहां वज्रच्छेदिका एवं प्रज्ञापारमिता की सचित्र प्रतिलिपियां तैयार की जाती थीं। दसवीं से चौदहवीं सदी तक प्राज्ञापारमिता की सचित्र पाण्डु लिपियां भारत नेपाल एवं तिव्वत से प्राप्त हुई हैं। उपत्यका के थमःविहार (ठमेल) में शतंसहिस्त्रिका प्रज्ञापारमिता की

(१२१४ई.) एवं पटना संग्रहालय में प्रज्ञा पारमिता की चित्रित पाण्डुलिपियां इसके उदाहरण हैं। राहुल ने तिव्वती वौद्ध मठों में नेपाल और भारत से गये वौद्ध पटचित्रों को देखा था। तिव्वत में वौद्ध पटचित्रों को थंका कहते हैं। इन पटचित्रों का ऐतिहासिक संकलन पटना संग्रहालय , तिव्वत हाउस म्यूजियम एवं काठमांडू के राजकीय संग्रहालय में देखा जा सकता है। नेपाल के ठमेल, भारत के गंगाटोक, धर्मशाला, देहरादून आदि पर्वतीय वौद्ध क्षेत्रों में पटचित्रों की निर्माण-प्रक्रिया आज तक जारी है । जनसाधारण को प्रभावित करने में इन पटचित्रों ने बडा काम किया। नेपाल, चीन, श्रीलका, वर्मा, कोरिया, तिव्वत, जापान आदि देशों में वौद्धधर्म का प्रवेश इन कला माध्यमों से ही हुआ। अतः विहारों-महाविहारों में वौद्ध विद्या के अंतर्गत वौद्ध शिल्प की सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक शिक्षा दी जाती थी । नेपाल वौद्ध शिल्प के इन आयामों का जीता जागता संग्रहालय सदियों से वना हुआ है।

शहादत से आजादी तक

-गोपाल ठाकुर

यह निश्चय ही गर्व की वात है कि नेपाल कभी किसी का गुलाम नहीं रहा। परन्तु एकीकरण अभियान की एक शताव्दी के अन्दर ही देश के, राणा शासकों के गिरफ्त में आने के वाद से, अवतक नेपाली जनता दो दशक भी आजादी का अनुभव नहीं कर पायी है। चाहे हम प्रजातंत्र की स्वर्ण जयन्ती की तैयारी में ही क्यों ना लगे हों।

वैसे भी सन् १९५० के दशक से पहले तो राणाशासन की सामप्ति भी सम्भव नहीं थी, क्योंकि चीन और भारत सहित पूरे भारतीय उपमहाद्वीप उस वक्त किसी न किसी उपनिवेशवादी का गुलाम था और यहां के राणा प्रभु को भी अंग्रेजों का आशीर्वाद प्राप्त था।

परन्तु सन् १९४० के दशक में तत्कालीन प्रजापरिषद के नेतृत्व में पनपती राजनीतिक चेतना तथा धर्मभक्त, दशरथ चन्द्र, शुक्रराज और गंगालाल की शहादत से राणाशाही की नीव कमजोर अवश्य पडने लगी थी। अन्ततः सन १९५० में, जव भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हो चुका था, नेपाल में भी क्रान्ति का सूत्रपात हुआ और वि.सं. २००७ साल फागुन ७ गते यह अपने घरेलु प्रतिक्रियावाद से मुक्ति का उद्घोष करने में सफल रहा।

तत्कालीन श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन ने आनेवाले दिनों में देश में गणतन्त्रात्मक प्रजातांत्रिक शासन पद्धति वहाल करने की घोषणा की और इसके लिए संविधान निर्माण हेतु निकट भविष्य में ही संविधान सभा का चुनाव सम्पन्न करने के लिए अन्तरिम शासन विधान की भी व्यवस्था की।

परन्तु वि.सं. २०१५ साल तक ऐसी कोई संविधान सभा नहीं वन सकी। अन्ततः तत्कालीन श्री ५ महाराजाधिराज महेन्द्रद्वारा प्रदत संविधान के तहत २०१५ साल में प्रथम संसदीय आम निर्वाचन हुआ और महामानव वी.पी.कोइराला के नेतृत्व में अजेय वहुमत प्राप्त, नेपाली कांग्रेस की प्रथम जन-निर्वाचित सरकार वनी। फिर २०१७ साल पुष १ गते महाराजा महेन्द्र द्वारा कोइराला सरकार वर्खास्त कर दी गयी और इसके तीन हप्ते वाद पौष २२ गते को देश में दलविहीन पञ्चायती व्यवस्था की घोषणा हुई। परन्तु २००७ साल की प्रतिक्रान्ति पूर्णतः संवैधानिक तव हुई जव इसे लोकतान्त्रिक भारत से समर्थन मिलने के वाद वि.स.२०१९ साल पौष १ गते देश में पूर्णतः निर्दलीय संविधान लागू हुआ।

इसके वाद करीव ३० वर्षों तक दलीय सोच रखनेवाले लोग प्रताडित होते रहे और शहादत का क्रम जारी रहा। हालांकि प्रजातन्त्र का गला घोटनेवाली यह व्यवस्था भी फागुन ७ गते (१८१९ फरवरी) को प्रजातन्त्र के नाम पर घडियाली आंसू वहाने से पीछे नहीं हटती थी। अन्त में २०४६ साल में भारत सहित अन्तराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त, नेपाली कांग्रेस एवं विभिन्न गूट-उपगुट में विभक्त कम्युनिष्ट घटक सम्मिलित संयुक्त वाम मोर्चा द्वारा संचालित,

२०४६ साल फागुन ७ गते से चैत्र २६ गते (१८ फरवरी से ७ अप्रील १९९०) तक के ऐतिहासिक जन-आन्दोलन के फलस्वरुप २०४६ साल चैत्र २६ गते को देश में वहुदलीय व्यवस्था की पुनर्स्थापना हुई।

हर घटनाक्रम के कुछ कारक तत्व अवश्य होते हैं चाहे वह क्रान्ति हो या प्रतिक्रान्ति। लेकिन इन क्रान्ति या प्रतिक्रान्तियों द्वारा स्थापित सिद्धान्तों को तभी तक स्थायित्व दिया जा सकता है जबतक ये कारक शक्तियां आत्मनिर्भर और अन्तरसंगठित हों। वैसे तो जो परोक्ष में घटित हो वह तो परे ही है, पर जो सामने घटित हो रहा हो उसे भी तो इन चन्द शव्दों में कहा नहीं जा सकता। फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि २००७ साल की क्रान्ति में राणा शासकों के वीच की आपसी फूट, राजनीतिक दलों के वीच की दरार और २०४६ साल के जनान्दोलन में तत्कालीन पंचायती शासन संयन्त्र की आपसी असन्तुष्टि की गौण भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता।

इससे यह जाहिर होता है कि किसी भी विचार, संगठन या राजनीतिक व्यवस्था का अन्त निश्चित है अगर वह जनसमर्थन खो बैठे।

राणाशाही से लेंकर पंचायत व्यवस्था तक क्या इसलिए शहीदों की संख्या बढती रही कि जनता को केवल रोने तक की ही स्वतन्त्रता हो ? और क्या इसलिए कि उन दिनों उन्हें इसका भी हक नहीं था ?

परन्तु रोया भी तभी जा सकता है जबतक आदमी में रोने तक की भी ताकत मौजूद हो। क्योंकि इन आठ वर्षों के प्रजातान्त्रिक अभ्यास से तो ऐसा लगता है कि लोगों से वह ताकत भी छीनी जा रही हो।

एक ओर जनता और राज्य अपनी सम्पदा से वेदखल हो रहे है तो दूसरी ओर जन प्रतिनिधि का लिवास पहने चन्द लोग गरीबों के 'अमीर प्रतिनिधि' के रुप में दिन दुगुनी रात चौगुनी के हिसाव से वदलते जा रहे हैं।

यह कृषि प्रधान देश, जो कभी खाद्यान्न निर्यात करता था, अब आयात करने लगा है। यह देश, जो विश्व स्तर पर जलश्रोत के लिए धनी वताया जाता है, सुखाग्रस्त और भूखमरी का शिकार होता आ रहा है और महज शहरी क्षेत्र तक सीमित रही विजली में भी लगभग आधा साल आपूर्ति कटौती (Load-shedding) करनी पड़ रही है।

एक ओर ऐसा है तो दूसरी ओर वे त्यागी तपस्वी देशभक्त जनप्रतिनिधि, जो कभी दुर्गन्धित मोजा तक भी नहीं धो पाते थे, आज पजेरो फैशन की दुनिया में रोज होली और दीवाली मना रहे हैं।

वे तराई के मसीहा वताए जाते हैं जो तराई को सदा वंजर वने देने रहने के हिसाव से हुए कोशी और गण्डकी समझौते को सही करार देने में गर्वानुभूति करते हैं। साथ ही वे लोग, जो इन्हें सदा गलत वताते आए थे, एकीकृत महाकाली सन्धि को राष्ट्रवाद की जीत समझते हैं। भले ही वे यह समझने में असमर्थ हों या समझकर भी अनभिज्ञता प्रकट कर रहे हों कि इस सन्धि का विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (Detailed project report या DPR) अबतक तैयार क्यों नहीं हुआ ?

अत:अनगिनत शहीदों की कुर्बानी से प्राप्त प्रजातन्त्र की इस ताजी स्थिति से इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हमारे जनप्रतिनिधि उन स्त्रियों से कम नहीं जो अपने पति की अपने ही हाथों हत्या कर सती हो जाने का ढोंग कर रही हो।

कुशल शासक भविष्य के बारे में सोचते हैं राजनीति को मात्र आगामी चुनाव की चिन्ता होती है। -अब्राहम लिंकन

नदी प्रदूषण

वागमती की पीड़ा

नवराज घिमिरे
सुर्खेत

काठमाण्डू घाटी से निकलने वाली एक मात्र नदी वागमती नदी है। वागद्वार से उत्पन्न हो यह काठमाण्डू के विभिन्न तीर्थस्थलों से होकर घाटी से वाहर गयी है। देवों के देव पशुपतिनाथ इसी पवित्र नदी के कगार में विराजमान हैं ।

हिन्दुओं की आस्था का प्रतीक यह पवित्र जलभंडार वागमती अव जीर्ण अवस्था में पहुंच गयी है। इस पवित्र नदी को इस हालत में पहुँचाने वाले और कोई नहीं घाटीवासी ही हैं । वढती जनसंख्या, अव्यवस्थित शहरीकरण, वन विनाश, वायु प्रदूषण और इस नदी की अपनी ही जल प्रवाह की शक्ति क्षीण होते जाना वागमती की दयनीय अवस्था के कारण हैं। राजधानी के भीतर वहनेवाली एकमात्र पवित्र नदी की रेख-देख न करना सत्तासीन व्यक्तियों की गैर जिम्मेवार हरकत है। वागमती नदी एक तो खुद छोटी है, और अभी तो इसको ऐसा अभिशाप मिला है, जिसे पचाने में इसकी प्रवाह शक्ति सक्षम नहीं है । इसका मूल महाभारत श्रेणी का वागद्वार है। हिमालय से उत्पन्न कोशी, गण्डकी और कर्णाली नदी जैसी सदावहार शक्ति इसे प्राप्त नहीं है। वर्षा ऋतु के आगमन पर इसकी प्रवाह क्षमता में कुछ तेजी आती है, और तव यह अपने आस-पास की गन्दगी को अपने में समाहित कर आगे वहा ले जाती है। लेकिन ग्रीष्म ऋतु और जाड़ का मौसम तो इस पर वज्रपात ही ढाने वाला होता है। इसके आते ही सभी छोटे चश्मे, नाले सूखने लगते हैं, जिससे इसकी वेग क्षमता ही समाप्त हो जाती है, और तव गन्दगी वहा ले जाने की वात तो दूर अपने वहने के मार्ग में वीच - वीच में ही इसे सुस्ताने के लिए रुकने हेतु वाध्य होना पडता है जो वागमती के लिए दुर्भाग्य की वात है।

'नेपाल की कुल जनसंख्या की ९% जनता काठमाण्डू में निवास करती है। घरों की संख्या दिन-प्रतिदिन तीव्र गति से वढती जा रही है । खेती की जमीन और जंगलों का कुल अंश अव गगनचुम्वी इमारत में परिणत होता जा रहा है। मल निर्यास की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। साधारण गन्दगी से लेकर शौचालय की गन्दगी तक वागमती में ही जाकर गिरती है, क्योंकि इसका कोई विकल्प ही नहीं है। एक ओर जहां इस नदी को मोक्षदायिनी मानने के कारण लोग इसके पवित्र जल में स्नान करते हैं वहीं दूसरी ओर इसके तट पर मलमूत्र त्यागने से भी नहीं हिचकते हैं। इसी तरह, यदि किसी को घर वनाना है तो इस मोक्ष दिलाने वाली माता

की छाती को चीरकर बालू निकालने से भी पीछे नहीं हटते और तब ऐसी हालत में नदी के तट पर लगे पेड़ पौधों को काटना या हटाना काठमाण्डू घाटी के मानव नाम वाले प्राणी के अति आवश्यक कल कारखानों के लिए पानी की आपूर्ति भी इसी नदी से की जाती है तो वहां से निकलने वाले अवशिष्ट तरल पदार्थ भी इसी में मिलाए जाते हैं। अपने बेटों द्वारा इतना दुःख दिए जाने के बाद भी इसके दुःखों का अन्त नहीं होता। जहां तक लगता है कि इसके भाग्य में जीवन पर्यन्त दुःख भोगना ही लिखा है, क्योंकि इसे आर्यघाट के रुप में भी जीना पड़ता है। इस आर्य घाट पर लोगों का दाहसंस्कार किया जाता है। इसमें प्रयोग किए जाने वाले सभी चीजों के अवशेष को अन्ततःइसी में समाहित कर दिया जाता है। परिणाम के तौर पर इसकी शुद्धता को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ा गया है। राजधानी के हृदय स्थल में रहनेवाली इस पवित्र नदी की पीड़ा को कोई नहीं समझ रहा है। इसे स्वच्छ और सुन्दर रखने का दायित्व सरकार, महानगरपालिका के साथ ही जनता की भी है।

वागमती की पीड़ा हमारी आपकी पीड़ा है। अतः इससे मूंह नहीं मोडना चाहिए। इसके प्रदुषण को रोकने के लिए सरकार को चाहिए कि ठोस कदम उठाए। इसे अपने वास्तविक रुप में लाना सभी का कर्त्तव्य ही नहीं धर्म भी है।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में नौवीं पंचवर्षीय योजना

–रघुवीर झा

नेपाल में राणाशासन का अन्त विक्रम सं. २००७ साल (१९५१) में हुआ। राणाशासन का शासनकाल १०४ वर्षो तक रहा। अपने शासन काल में राणाओं ने देश की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अवस्था पर ध्यान न देकर केवल व्यक्तिगत एवं पारिवारिक विकास पर अधिक ध्यान दिया। फलस्वरुप देश विकास मार्ग से वहुत दूर रहकर गरीवी ओर बेरोजगारी के एक वडे खण्डहर में गिर पडा और देश के LDC-(least develop country) ग्रुप का सदस्य होना पडा। वि०स०२००७ साल के प्रजातंत्र के वाद नयी सरकार ने देश विकास की जिम्मेवारी ली और वि.सं. २००८ साल में सर्वप्रथम सरकारी आर्थिक वजट की घोषणा की तथा विकास के पूर्वाधार पर काफी जोड दिया। देश को गरीबी के खण्डहर से निकालने और इसके विकास के लिए एक योजना की आवश्यकता महसूस की गई। किन्तु सम्पूर्ण विकास को छोटी अवधि में पूरा करना संभव न था अतःदेशविकास की योजना को ५-५ वर्षो में पूरी करने की योजना वनाई गयी जिसे पंच वर्षीय योजना कहते हैं।

वि०सं० २०१३ साल से नेपाल में प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरुआत हुई। देश में बडे पैमाने पर आर्थिक बृद्धि हासिल करना, क्षेत्रीय असन्तुलन घटाना और गरीबी हटाना इन तीन मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने के लिए खासकर निजी, सरकारी एवं गैरसरकारी क्षेत्रों को सहभागी वनाकर ग्रामीण क्षेत्र में इस लगानी को प्रवाहित करने के लिए वहुत जोड दिया गया, किन्तु योजना के अनुरुप इसका उद्देश्य पूरा नहीं हो सका। आठवीं योजना अवधि में गांव को केन्द्र विन्दू बनाकर इस योजना के तहत विकास के अधिकांश राशि को खर्च किया गया। जिसमें कमैया प्रथा (बधुआ) वृद्ध, सुकुम्वासी (निर्वासित) पीडित आदिवासी एवं असहाय जनजातियों की समस्याओं को सुधारने एवं उनके विकास पर जोड दिया गया। इसके वावजूद भी अपेक्षित फल प्राप्त करने में पूरा असफल रहा।

आठवीं योजना के आर्थिक वृद्धि का लक्ष्य और इसकी उपलब्धि के वीच तुलनात्मक अध्ययन करने पर अर्थतन्त्र के अन्य भागों में से यातायात एवं संचार वित्त एवं घर-जमीन और सामुदयिक सेवा क्षेत्र में लक्ष्य अनुरुप प्रगति तो हुई, परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में लक्ष्य के अनुसार प्रगति नहीं हो सकी।

कृषि क्षेत्र में वार्षिक ३.७ % उत्पादन वृद्धि के लक्ष्य में वास्तविक २.८ % मात्र होने का अनुमान है। इसी तरह अन्य क्षेत्रों में वृद्धि का लक्ष्य एवं उसकी

प्राप्ति इस तालिका से स्पष्ट हो जाता है।

क्षेत्र	लक्ष्य	प्राप्ति
विद्युत, गैस और पानी का उत्पादन	८.९%	४.७%
मूल्य अभिवृद्धि	४.८%	४.५%

कृषि क्षेत्र का वृद्धि दर सातवीं योजना के वृद्धि दर की तुलना में १.३ से न्यून रहा जिससे कृषिपर आश्रित जनसंख्या का भार प्रत्येक वर्ष बढता ही जा रहा है। आठवीं योजना काल में आर्थिक स्थायित्व एवं अर्थतन्त्र के विकास में भी प्रतिकूल प्रभाव पडा है। आन्तरिक उत्पादन न्यून होना और अर्थतन्त्र में तरलता बढना, इन दोनों कारणों से मूल्यस्थिति एवं वैदेशिक व्यापार में प्रतिकूल असर पडा है। इसी योजना के प्रारम्भ (२०४८।०४९) में वैदेशिक व्यापार घाटा १२.६ % था तो योजना के अन्त में यह घाटा बढकर २७.१ % पहुंच गया है।

नेपाल भू-परिवेष्ठित, कृषि एवं गांव प्रधान देश है, इसलिए जबतक पूर्णरुपेण गांव का विकास नहीं होगा, तबतक नेपाल गरीबी रेखा को पार नहीं कर सकता है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि सभी लोग शहर में रहना चाहते हैं। सरकार की अनियमित आर्थिक लगानी योजना और जनता में भौतिकवाद की महत्वकांक्षा इसके कारण हैं।

नौवीं पंचवर्षीय योजना २०५४।०५९ में गरीबी निवारण एवं कृषि इस योजना का मुख्य लक्ष्य ४५ % पर रही गरीबी को कम कर ३२.५ %तक लाना है। देश में व्याप्त गरीबी का मुख्य कारण वेरोजगारी और अर्धवेरोजगारी है। अभी नेपाल में कुल श्रमशक्ति के १४% के वेरोजगारऔर ४०% से अधिक अर्धवेरोजगार होने का अनुमान है। ग्रामीण क्षेत्र में वर्षभर श्रम योग्य रोजगार न पाने और शहरों में पढे लिखे युवको को अपनी योग्यता के अनुरुप काम न मिलना दोनों ही वेरोजगारी और अर्धवेरोजगारी की मुख्य समस्या है।

गरीबी का कारण और निवारण की योजना:

उपेक्षित जनजाति एवं दलित जाति

तराई में गरीबी की चाप खासकर चमार, दुसाध, मुसहर, डोम, मल्लाह जाति पर अधिक है। इसी तरह पहाड़ में कामी, दमाई, सार्की आदि जाति पर गरीबी की चाप अधिक है। इन जातियों में १० % मात्र साक्षर हैं। इनके सामाजिक एवं आर्थिक सुधार के लिए एक जनजाति प्रतिष्ठान स्थापित करने की योजना है।

यातायात एवं संचार का अभाव:

नेपाल में ऐसे अनेक गांव और जिले हैं जो सडक से वंचित है। एक गांव से दूसरे गांव जाने में ५-६ घंटे तक भी लग जाते हैं। ३२ जिलों के तथ्यांक के अनुसार कुछ जिलों में ७० % से भी अधिक गरीबी काअनुमान है। इस योजना के तहत गांव को सडक से जोडने ओर प्रत्येक गांव में एक टेलिफोन, डाक और एक स्वस्थ्य सेवा केन्द्र खोलने का लक्ष्य है। कमैया प्रथा:- पश्चिम नेपाल की थारु जाति में करीब ४० हजार परिवार कमैया प्रथा के तहत और उसमें से एक चौथाई बधुआ मजदूर के रुप में काम कर रहे हैं। यह जाति प्राय गरीबी की रेखा से नीचे अपना जीवन यापन कर रही है। ऐसे शोषित और-पीडितों के लिए रोजगार

की व्यवस्था, रहने की व्यवस्था करना, कृषि योग्य जमीन उपलब्ध कराना आदि इस योजना में सामिल है।

जमीन के छोटे-छोटे टुकडे वाले परिवार:-

आधा हेक्टर से भी कम जमीन वाले परिवार की संख्या करीब ४५% है। एक हेक्टर तक खेती करने योग्य जमीनवाले परिवार ७० %है। कृषि तथ्याक के अनुसार एक हेक्टर जमीनवाले सारे परिवार को गरीवी की रेखा से नीचे रखा गया है। ऐसे समूह के लिए कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए कृषि ऋण प्रशिक्षण एवं अन्य सहयोगयुक्त कार्यक्रम इस योजना में रखा गया है।

शहरी क्षेत्र के गरीब और बेरोजगार:-

शहरी क्षेत्र के गरीवी निवारण के लिए सेवामूलक एव उत्पादनशील स्वरोजगार की सिर्जना में काफी जोड़ दिया गया है। शिक्षित एवं बेरोजगारों के लिए विशेप कार्यक्रम वनाए जाएंगे।

जमीन रहीत ग्रामीण परिवार तराई और पहाड दोनों क्षेत्रों में जमीन रहित ग्रामीण परिवार की संख्या अनुमानत: ५ लाख है। ऐसे परिवार मुख्य रुप से कुछ समय कृषि और कुछ समय गैर कृषि क्षेत्र में परिश्रम करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। ऐसे परिवार वर्ष में १०० से १२० दिन काम पाते है। वह भी सस्ते दर में। अत: ऐसे सभी परिवारों को गरीबी की रेखा से नीचे रखा गया है। इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए अधिक से अधिक दिन का रोजगार और मजदूरी में वृद्धि की व्यवस्था नौवीं पंचवर्षीय योजना में शामिल है। गरीवी निवारण के लिए सरकारी साधन और विकास के खर्च गांव और जिले स्तर में रोजगार मूलक कार्यक्रम में किए जाएगें। "अपना गांव-अपने वनाओं" के तहत गांव विकास समिति को दिए जाने वाले वजट में से कम से कम एक तिहाई रुपए गरीवी उन्मूलन योजना एवं रोजगारमूलक कार्यक्रम में खर्च करने की व्यवस्था है।

रोजगार नीति:-

देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के अनेक क्षेत्रों में उत्पादनशील रोजगार को वढाकर बेरोजगारी और अर्धबेरोजगारी को पूर्ण रोजगार वनाना, श्रम वाजार की मांग के अनुरुप सक्षम जनशक्ति तैयार करना और वैदेशिक रोजगार का अवसर प्रदान करना, इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। इसी योजना के तहत एक परिवार एक रोजगार की व्यवस्था की गई है।

आर्थिक नीति:

नौवीं योजना काल में वार्पिक ६.५% आर्थिक वृद्धि हासिल कर गरीवी निवारण का उद्देश्य प्राप्त करना मुश्किल काम है, इसलिए साधारण जनता को मूल्य वृद्धि के प्रकोप से वचाने के लिए इस योजना के तहत मूल्य वृद्धि दर से वार्षिक ६.५ % तक सीमित रखने के लिए मौद्रिक एवं वित्तीय नीतियों के मार्फत मूल्य नियन्त्रण और आपूर्ति व्यवस्था में सुधार लाना इस योजना में शामिल है। जिसमें:–

वचत एवं राजस्व परिचालन:

आन्तरिक साधन एवं श्रोत के परिचालन से विदेशी ऋण घटाना।

सरकारी खर्च और व्यवस्थापन: –

सरकारी खर्च का वजट तैयार करना, अन्य हिसाव को पारदर्शी बनाना आदि।

विकेन्द्रीकरण के आधार पर वित्तीय व्यवस्थापन को प्रोत्साहन देना।

मुद्रा बैंकिंग, कर्जा और पूंजीबाजार:–

मौद्रिक नीति के मार्फत आर्थिक क्रियाकलाप में वृद्धि लाना, मूल्य एवं विनियम दर के उतार चढाव को न्यून रखना, ग्रामीण क्षेत्र में वैकिंग सुविधा पहुंचाना और उद्योग कृषि व्यापार सेवा मूलक व्यापार के लिए आवश्यकता के अनुसार पूंजी की व्यवस्था करना इस योजना का खास उद्देश्य है।

जनसंख्या सम्वन्धी एक सर्वेरिपोर्ट के अनुसार नेपाल में कम उम्र मे शादी और गर्भधारण की परम्परा चली आ रही है। रिपोर्ट के अनुसार करीव ३० वर्ष की महिला में प्रजनन की कमी देखी गयी है। किन्तु १५-१९वर्ष की महिला में प्रजनन दर अधिक रहने का अनुमान है। हाल जनसंख्या वृद्धि दर २.१० % है। इसे अगले २० वर्षों में यानि की वारहवीं योजना के अन्त तक १.८ % पर लाने का लक्ष्य रखा गया है। नेपाल में उर्जा के प्रमुख श्रोत के रुप में जलविद्युत है, इसकी कुल क्षमता २४७ मेगावाट हैं। नेपाल में कुल उर्जा खपत का यह सिर्फ एक प्रतिशत आपूर्ति करता है। इसके अलावा लकड़ी से ६८ % कण्डे ८ % कृषि जन्य के अवशेष १५ % और विदेशों से आयातीत पेट्रोल एवं कोयले की आपूर्ति का अनुमान है। गरीवी निवारण, तथा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक चेतना में सुधार लाने के लिए मानवीय श्रोत एवं साधनों के विकास के द्वारा उचित राष्ट्रीय विकास हासिल करने के लिए प्रभावकारी और अनुशासित शिक्षा के लिए प्राथमिक शिक्षा अति आवश्यक है। शैक्षिक गुणस्तर में वृद्धि, शिक्षा में महिला की सहभागिता, अपांग एवं शोषित समाज के लिए शिक्षा काअवसर प्रदान करना इस नौवीं योजना का मुख्य उद्देश्य है।

व्यक्तित्व विकास की पूंजी है स्वाभिमान

—पूनम झा

मानव स्वभाव से ही ऐसा है कि वह चाहता है कि समाज में अपनी एक अलग पहचान वना सके, अन्य व्यक्तियों की नजर उन पर पडे और उनके प्रति आदर एवं सद्भाव रखें। वह घर, परिवार, समाज राष्ट्र, पढाई-लिखाई, आचार-विचार एवं सेवा आदि सभी क्षेत्रों में अपना चौतर्फी विकास देखना चाहता है।

प्रकृति ने मानव मात्र को ऐसा संस्कार दिया है, जिसके कारण समाज में वह प्रतिष्ठित वनना चाहता है। मानव एक चेतन एवं संवेदनशील प्राणी है इसलिए तो स्वाभिमान मानव में कूट-कूट कर भरा होता है। परन्तु सभी व्यक्ति स्वाभिमानी ही होते हैं यह भी कहना तर्क संगत प्रतीत नहीं होता है। मानव सर्वश्रेष्ठ बनने की कोशिश करता है। यही महत्वाकांक्षा मानव को कर्मठ बनने में सहायता प्रदान करती है। इन्हीं संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र में अपना स्मरणीय स्थान वनाता है जिन्हें मानव शास्त्रियों ने व्यक्तिगत व्यक्तित्व अस्मिता, स्वाभिमान आदि अनेक नाम से विभूषित किया है। स्वाभिमान एक ऐसी शक्ति है जिसके कारण व्यक्ति ऊंचा भी उठता है और नीचे भी गिरता है। मानव मस्तिष्क में इसकी मात्रा कम होते ही वह अपने आपको औरों की तुलना में तुच्छ समझने लगता है और दिन-दिन कमजोर एवं सामर्थ्यहीन होने लगता है। इस प्रकार उसमें अनेक प्रकार की विकृतियां उत्पन्न होती है। कभी -कभी ऐसा भी देखा जाता है कि प्रभुता, सम्पत्ति एवं यौवन के कारण स्वाभिमान की मात्रा जरुरत से ज्यादा हो जाती है तो मानव अपना अस्तित्व भूल जाता है एवं ऐसी स्थिति में अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए उसमें अहं अर्थात् मिथ्या स्वाभिमान की भांवना जागृत होती है जिसके कारण व्यक्ति के मन में वाह्याडम्बर, खोखलापन, देखावटीपन आदि अनेक विकृतियां उत्पन्न होती हैं, जो मानव के व्यक्तित्व को अवनति की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध होती है। अतः स्वाभिमान की मात्रा का भी हमेशा ध्यान रखना चाहिए क्योंकि व्यक्तित्व विकास के लिए यह भी एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। स्वाभिमान का सबसे सुन्दर एवं सीधा अर्थ होता है मैं भी कुछ हूँ, समाज के प्रति मेरा भी कोई दायित्व है, मेरा भी कर्तव्य है कि मैं राष्ट्रहित एवं समाज हित के लिए कुछ करुं। बस इतनी बातें समझते ही स्वाभिमान का सीधा अर्थ हमरे सामने दृष्टिगोचर होने लगता है और व्यक्ति का व्यक्तित्व भी इतनी जिम्मेदारी समझते ही अपने आप निखर उठता है।

परन्तु ये जो मैं शव्द है उसे कभी भी सर्वे-सर्वा नहीं बनाना चाहिए। अतःअपने व्यक्तित्व के साथ-साथ दूसरों के व्यक्तित्व की भी कदर करनी चाहिए। "हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा की हम अपने प्रति चाहते हैं।"

व्यक्तित्व के लिए शारीरिक एवं बौद्धिक दोनों ही तत्त्व आवश्यक होता है। यदि कोई व्यक्ति देखने में तो अति रुपवान है परन्तु बौद्धिक स्तर के कार्य में बिल्कुल शून्य है तो हम उस व्यक्ति के रुप पर उपहास करते हैं और यदि कोई व्यक्ति बौद्धिक स्तर से तो उच्च शिखर पर विराजमान है परन्तु रहन-सहन ठीक नहीं है तो भी वह हंसी का पात्र बन जाता है।

सही अर्थ में कहा जाय तो स्वाभिमान का अर्थ वह ठीक ढंग से समझ ही नहीं पाता है क्योंकि "स्वाभिमान तो व्यक्तित्व विकास की पूंजी है। इसलिए अपने व्यक्तित्व विकास के लिए शारीरिक एवं नैतिक दोनों पक्षों से बिल्कुल सटीक एवं स्वच्छ रहना चाहिए।

हमारा जो नित्य कर्म है उसे ठीक समय पर, ठीक ढंग से करना चाहिए। चेहरा हंसमुख होना भी मुख्य पक्ष है। इसके साथ-साथ लगनशीलता, परिश्रम एवं सकारात्मक भावना के साथ-साथ नियमितता भी अनिवार्य है। अपना परिधान अर्थात् वेश-भूषा समयानुकूल तथा स्थान अनुकूल होना चाहिए। प्रत्येक कार्य प्रशंसायोग्य होना चाहिए।

ये जितनी भी बातें हैं, उसे यदि सही ढंग से पालन करते है तो सफलता आपके आगे हाथ बांधे खडी रहेगी। विजयश्री वरमाला लिए आपका स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा करेगी। परन्तु ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी कार्य केवल कहने से पूर्ण नहीं होता, उसे करना पडता है। अतः लगनशीलता की भावना भी अनिवार्य है।

पर्व-त्योहार

नेपाल मन्दिरों और देवमूर्तियों के साथ ही अपने रंगारंग त्योहारों के लिए विश्व भर के पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र है। यों तो त्योहार हिन्दुओं का एक प्रकार से दैनिक कार्यक्रम है परन्तु आज के इस औद्योगिक युग में यह भी अब मौसमी बन रहा है। वैसे तो कडाके की ठंढ में भी हमलोग पर्यटक पर्व मनाए और आगे भी मना रहे हैं। आइए कुछ और पर्वो के बारे में जाने।

महाशिवरात्रि और पशुपतिनाथ

-यदुनन्दन झा,

त्रि.वि. कीर्तिपुर, काठमांडू

मानव समाज अनेकों धर्म, संस्कृतियों में विभक्त है और अपने धर्म संस्कृति से जुडे पर्वो को अपनी ही रीति से मनाते हैं। आर्य संस्कृति एवं सभ्यता में भी साल भर में बहुत सारे पर्व मनाये जाते हैं जिनमें महाशिवरात्रि भी एक खास पर्व के रुप में लिया जाता है । चन्द्रमास के हिसाब से सामान्यतया सालभर में २४ चतुर्दशी का व्रत हैं, जिनमें फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी का विशेष महत्व है और उसी को महाशिवरात्रि के रुप में मनाया जाता है । सालभर के सभी चतुर्दशियों में शिव की पूजा की जाती है। खासकर कृष्णपक्ष का चतुर्दशी शिव पूजा के हेतु महत्वपूर्ण है।

चतुर्दशी व्रत विधान में प्रदोष व्यापिनी होना आवश्यक है, इसका पारण चतुर्दशी में ही किया जाता है । इसीलिए त्रयोदशी से युक्त चतुर्दशी का व्रत विधान है। इन सामान्य सिद्धान्त के अनुसार सभी चतुर्दशी का व्रत एवं शिवजी का पूजन किया जाता है परञ्च महाशिवरात्रि के सन्दर्भ में मध्यरात तक चतुर्दशी होने का विधान है। इस फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी में रात के चारों प्रहर में शिव के चार स्वरुप की पूजा की जाती है। प्रथम प्रहर में "ईशान", द्वितीय प्रहर में "अघोर" , तृतीय प्रहर में "वामदेव" एवं चतुर्थ प्रहर में "नवजात" की पूजा की जाती है, इसमें क्रमशः "दूध", "दही", "घृत" तथा "मघु" से स्नपन किया जाता है । भगवान शिव शाश्वत व्रह्म हैं, निराकार, निर्विकल्प, शक्तिरहित ज्योति रुप वाद में दिव्य आकृतिवाले, निर्विकारी परात्पर शक्तिमान सगुण प्रकट हुए। उनके वामांग विष्णुरुप, दक्षिण व्रह्मा और हृदय में रुद्र का स्वरुप प्रकट हुआ। इसके आधार पर ही इन तीनों देवों को कार्य रुप में संसार संरचना, संसार पालन एवं संसार संहारकर्ता कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि सदाशिव तीन स्वरुप में विभक्त हुए।

रुद्र संहितानुसार ज्योतिलिंग का वर्णन पाया जाता है। वारह ज्योतिलिंग में केदार लिंग हिमाली प्रदेश में है। कथाओं में

पाया जाता है कि स्वर्गारोहण के समय शिव के दर्शन हेतु ईप्सित पाण्डव जब केदार क्षेत्र पहुंचे तो शिव भगवान पशु रुप धारण कर पशुओं के बीच प्रवेश कर गये। यह जानकर शिव को पहचानने हेतु भीम ने दो पर्वतों पर पांव रख दी तथा अन्य पाण्डवों ने सभी पशुओं को उनके नीचे से पार कराना चाहा। जब सदाशिव की बारी आयी तो वे पशुरुप शिव भूमि प्रवेश करने लगे। यह देख चारों पाण्डवों ने उनके पृष्ठ भाग को पकडा। आगे का मुखभाग भूमि प्रवेश होने से नेपाल के काठमाण्डू में निकला जो पशुपति नाथ के नाम से प्रख्यात हुआ है। पृष्ठ भाग वहीं केदारखण्ड में केदारेश्वर के नाम से प्रसिद्ध रहा। इस प्रकार बारह ज्योतिलिंग में ही पशुपति नाथ का समावेश माना गया है। यों तो महाशिवरात्री विश्व भर के हिन्दुओं का महान् पर्व है, किन्तु पशुपति क्षेत्र नेपाल में इसका महत्व बहुत अधिक हो जाता है। सामान्यतः शिव-पार्वती के शाश्वत पावन परिणय के रुप में इस पर्व को मनाया जाता है। शिव शुद्ध चैतन्य पुरुष और पार्वती, प्रकृति रुपा अर्थात् शक्ति के पावन मेल से ही सृष्टि के निर्माण का गम्भीर दार्शनिक विवेचन किया गया है। फाल्गुण माह के कृष्णपक्ष के त्रयोदशी और चतुर्दशी तिथि पर इसे मनाया जाता है। इस दिन अधिकांश हिन्दू उपवास रखते हैं और शिव पार्वती की पूजा-आराधना करते हैं। नेपाल और भारत के विभिन्न भागों से लाखों की संख्या में लोग पशुपतिनाथ के दर्शन के लिए आते हैं। आधीरात से ही भगवान के दर्शन के लिए मन्दिर में भीड लगी रहती है। हिन्दुओं की यह मान्यता है कि चारोधाम के दर्शन लाभ का पुण्य तभी प्राप्त होता है जब पशुपतिनाथ का दर्शन कर लिया जाता है। शिवरात्रि के अवसर पर सदाशिव देवाधिदेव महादेव की अर्चना विल्वपत्र, दुर्वा आदि से की जाती है। माघ फाल्गुन, सूर्य वा चन्द्रमास से गणना करने पर यह पर्व चतुर्दशी तिथि को उमा सहित उपासना कर मनाया जाता है। आदिशक्ति उमा वा पर्वाती का अन्तर्भाव शिवलिंग में ही माना गया है। अर्धनारीश्वर भी तो सदाशिव देवाधिदेव महादेव ही है। अजन्मा एवं संहार शक्ति के प्रतीक इनकी पूजा जगत कल्याण के साथ अपने सुख-समृद्धि हेतु लोग करते हैं। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु, भी तो इनकी ही उपासना करते देखे गये हैं।

खासकर पशुपति नाथ की पूजा, दूध, दही, घी, चीनी एवं मधु से नित्य की जाती है। वागमती के जल से भी प्रतिदिन स्नान कराया जाता है। पशुपति के नियमित पूजा में तीन क्षेत्र के ब्राहमणों की संलग्नता देखी जाती है। पुजारी (मूल भट्ट आदि) उडिया ब्राह्मण, बागमती नदी से जल लाने वाले एवं रुद्री पाठ करने वाले उपाध्याय ब्राह्मण (पर्वती ब्राहमण) तथा पूर्णिमा के दिन का महान भोग तैयार कर मन्दिर तक लाने वाले मैथिल ब्राह्मण आदि।

शिवरात्रि के अवसर पर सायं पूजा हेतु श्री ५ राजमहिषी सहित नेपाल नरेश पशुपति नाथ की पूजा करते हैं। नेपाल तथा भारत के विभिन्न भागों से श्रद्धालु जन पूजा करने आते हैं। इस मन्दिर में हिन्दू मात्र को प्रवेश आज्ञा दी गई है। श्री ५ की सरकार पशुपति विकास कोष तथा अन्य निजी संस्थाओं की ओर से दर्शनार्थी यात्रियों के

ठहरने तथा भोजन आदि की सुव्यवस्था की जाती है।

महाशिवरात्री के दिन दोपहर वाद काठमाण्डू के टुंडिखेल में नेपाल की शाहीसेना के द्वारा सलामी दी जाती है । फौजी कवायदें होती है, इसे 'वढाई' कहते हैं। विश्व के एकमात्र ह्निन्दू देश नेपाल के राजा रानी टुंडिखेल के खुले मंच में पधार कर सैनिक द्वारा किये गये अभिवादन तथा क्रीडाओं का अवलोकन करते हैं। इस अवसर पर राज दम्पति, युवराजाधिराज के साथ-साथ राजपरिवार के अन्य सदस्य, संवैधानिक अंग के प्रमुख, प्रधान मन्त्री तथा मंत्रीगण, कूटनीतिज्ञ तथा सरकारी उच्चपदस्थ कर्मचारियों की उपस्थिति रहती है। इस अवसर पर ३१ तोपो की सलामी श्री ५ को दी जाती है।

शिवरात्री के दिन काठमाण्डू के चौक, चौराहे पर सायंकाल आग जलाकर धुनी तापने का चलन है। जनविश्वास है कि सदाशिव को अग्नि तपाकर जाडे का अन्त होता है।

नेपाल में सरस्वती पूजा

बसंत कुमार विश्वकर्मा

उप प्राध्यापक त्रि.वि. काठमाण्डू

वसंत पंचमी यानि विद्या की देवी सरस्वती की जन्म जयन्ती। यह पर्वों का संगम और वसंत ऋतु के आगमन का सूचक है। कला, कल्पना एवं प्रतिभा की जननी मां शारदा को शतरुप, वाणी, वाग्देवी, भारती, वागेश्वरी आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इन्हें ब्रह्मा की मानस पुत्री माना जाता है और पत्नी भी.। ये मानव जिह्वा पर वाक् के रुप में विराजमान रहती : की जाती है। ग्रा रुष्ठता के कारण कुंभकरण ने व्रह्मा से निर्देत्व के वदले निद्रत्व का वरदान मांग वैठा। सृष्टि का सम्पूर्ण मानवीय सृजन मां सरस्वती का ही वरदान है। सृष्टि और मानव के लिए इसे महान् दिवस समझा जाता है। वेदकाल से ही यह पर्व मनाया जाता रहा है। परम्परा के अनुसार इस दिन विद्वत वर्ग व विद्यार्थी अपनी पुस्तक तथा लेखनी की पूजा भी करते हैं। नृत्य, संगीत एवं अभिनयप्रेमी कलाकार इस दिवस में वाग्देवी की आराधना और वन्दना करते हैं। तंत्र जगत की सर्वोपरि व दशमहाविद्याओं में प्रमुख वंगलामुखी देवी की साधना भी तान्त्रिक वसंत पंचमी को ही आरम्भ करते हैं।

वसंत पंचमी या सरस्वती जयन्ती के इस अवसर पर शारदा की पूजाअर्चना कर के वच्चों की शिक्षा आरम्भ करने का प्रचलन है। गन्धर्वपुराण में उल्लेख है कि माघ शुल्क पंचमी के दिन वाग्देवी की पूजा करके विद्यारम्भ करने से सर्वसिद्धी प्राप्त होती है। इसीलिए इस तिथि में कोई भी सामाजिक व धार्मिक अनुष्ठान करने पर सफलता निश्चय ही प्राप्त होती है -यह जन विश्वास है।

नेपाल के तराई क्षेत्र के शहरों में स्थित मन्दिरों में भव्य रुप से सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती है। इसी तरह विद्यालय, महाविद्यालयों में निर्मित शारदा-मंदिर में भी वृहद रुप से पूजा की जाती है। साथ ही जिन विद्यालयों में स्थायी सरस्वती मन्दिर नहीं है, वहां कारीगर द्वारा निर्मित मिट्टी की मूर्ति बनाकर सरस्वती देवी की

वेद्यालयों में आज [illegible] भव्य समारोह और मेला लगता है। ग्रामीणों में अच्छी खासी चहल-पहल दिखाई पडती है। पर्वतीय वस्तियों के स्कूलों में भी हाल में सरस्वती की पूजा होने लगी है। शिक्षा का प्रकाश पर्वतीय ग्राम्यों मे देर से पहुंचा है।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में प्रत्येक माघ शुल्क पंचमी के दिन श्री पंचमी पर्व मनाया जाता है। इसी उपलक्ष में हनुमान ढोका स्थित नासलचौक में परम्परागत रुप से वसंत श्रवण कार्यक्रम का आयोजन होता है। इस आयोजन में श्री ५ महाराजाधिराज की सवारी होती है। मौसूफ के सम्मान में सेना द्वारा ३१ तोप की शाही सलामी दी जाती है। समारोह में प्रधानमंत्री, प्रधानन्यायाधीश, सभामुख, राष्ट्रीय सभा के अध्यक्ष, राजपरिषद स्थायी समिति के सभापति, मंत्रिगण, सवैधानिक अंगों के प्रमुख, सेना प्रमुख, प्रहरी प्रमुख आदि की भव्य उपस्थिति रहती है।

काठमाण्डू उपत्यका के प्रत्येक विद्यालयों और महाविद्यालयों में सरस्वती पूजा धुमधाम से नहीं की जाती है। कहीं - कहीं विद्यालयों में साधारण रुप से यह पर्व मनाया जाता है। उच्च शिक्षा के छात्र तो इसके प्रति पूर्ण उदासीन होते हैं। त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर के बाग में स्थित सरस्वती मन्दिर में ही तराईवासी छात्र-छात्राएं सरस्वती की पूजा का आयोजन धुमधाम से करते हैं। प्रार्थनाएं, भजन, कीर्तन और प्रसाद वितरण किया जाता है।

काठमाण्डू उपत्यका के लबालिका, युवा-युवती तथा बुढे बुजूर्ग सभी सरस्वती मन्दिर में जाकर पूजा करते और नैवेद्य चढाते हैं। प्रसाद के सात दाने मुह में रखकर निगलते हैं। लोगों में यह विश्वास है कि सरस्वती-प्रसाद खाने से विद्या और वुद्धि का स्फूरण होता है साथ ही चेतना की ज्योति प्राप्त होती है।

काठमांडू उपत्यका में वसंत पंचमी के दिन स्वयंभू, मैतीदेवी, गौरीधारा आदि स्थानों में अवस्थित सरस्वती -मन्दिरों में सुवह से ही छात्र-छात्राओं तथा विद्यार्थी, भक्तजनों की खासी भीड पूजा दर्शन करने के लिए लगती है। इस दिन अन्य मन्दिरों में विवाह, व्रतवन्ध अधिक होते हैं, नेपाल की नेवारजाति में प्रचलित वेलविवाह इसी वसंतपंचमी के शुभ अवसर पर अत्यधिक होते हैं। नेवारजाति की कुंवारी लडकियों का विवाह परम्परागत रुप से इस जाति में प्रचलित रीति के अनुसार बेल से किया जाता है। नेवारी भाषा में इसे 'इही'कहा जाता है।

नेपाल में शिशिर ऋतु का अन्त और वसंत ऋतु का आरम्भ वसंत पंचमी से ही होता है। आज से ही पर्वतीय वन जंगल पल्लवित और पुष्पित होकर समीर सुगन्धित होते हैं।

घाटी में "घोड़ेजात्रा"

मन्दिरों और त्योहारों के देश नेपाल में कुछ विशेष त्योहार पर्व ऐसे होते हैं जो संसार भर के लोगों के लिए आकर्षण रखते हैं। नेपाल में इसी तरह के आकर्षण का एक पर्व घोडे जात्रा मनाया जाता है। इसे घुडदौड का पर्व भी कहा जाता है। यह पर्व केवल

काठमाण्डू उपत्यका में मनाया जाता है। उपत्यका के प्राचीनतम नेवार समुदाय हर्षोल्लास के साथ तीन दिनों तक इसे मनाते हैं। यह पर्व चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन मनाया जाता है। इस पर्व के पहले दिन को पिशाच चतुर्दशी, दूसरे दिन को महाचारे वा पासचारे, तीसरे दिन को घोडेयात्रा कहते हैं। पिशाच चतुर्दशी के दिन प्रात:काल भद्रकाली श्वेतकाली, कनकेश्वरी, लुकनुमारी, अजिमा तथा अन्य देवियों की पूजा की जाती है। सायंकाल लुकुदेव की पूजा की जाती है। लुकुदेव का अर्थ है छिपे हुए भगवान शिव। इस दिन शिवजी ने पिशाच का रुप धारण किया था। महा और पाशा शव्दों का अर्थ है अतिथि एवं मित्र और चारे (या चांड) का अर्थ है उत्सव मनांना। इस दिन नेवार लोग अतिथि, मित्र एवं सम्वन्धियों को आमन्त्रित करते हैं और उनका विशेष स्वगत करतें हैं। इस दिन घरों की सफाई की जाती है। विवाहित स्त्रियों को अपने माता-पिता के यहां सादर आमन्त्रित किया जाता है। तीसरे दिन घोडे यात्रा का मुख्य उत्सव सम्पन्न होता है। इस दिन काठमाण्डू के हृदयस्थल टुंडीखेल में घोडों की दौड तथा अन्य खेलकूदों का आयोजन किया जाता है। आजकल यह उत्सव पूर्णतया राजकीय तथा सैनिक वन गया है। श्री ५ महाराजाधिराज तथा श्री ५ वडामहारानी टुंडिखेल स्थित शाही सैनिक मंच से सलामी लेते हैं। समारोह में राजपरिवार के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहते हैं। सैनिकों द्वारा प्रदर्शित खेलों मे विजेताओं को श्री ५ नरेश द्वारा पुरस्कार दिया जाता है।

इसदिन रात को भी एक विशेष समारोह मनाया जाता है। भद्रकाली देवी और उनकी वहन कनकेश्वरी देवी की मूर्तियों को पालकियों में सजाकर घुमाया जाता है।

जुलूस में शामिल दोनो देवियों की मशालों का आदान प्रदान किया जाता है, इसे सद्भावना और मित्रता का मंगलसूत्रक माना जाता है।

यह पर्व काठमाण्डू में मधुऋतु (वसन्त) के उत्कर्ष का सूचक है। पर्व के तीनों दिन सायंकाल उपत्यकावासी मदिरापान कर मस्त रहते हैं जिस कारण यह कहावत चरितार्थ है "सूर्य अस्त ,नेपाल मस्त"।

—वियोगी

होली का औचित्य

-एस.एल.शर्मा 'अन्वेषक'

यद्यपि प्राचीन काल के आर्यावर्त की संस्कृति और संस्कारों में एक रुपता ही रही है। तथापि दैत्य-दानवआदि वंशो की संस्कृतियों एवं संस्कारों में भिन्नताएं होती गई। अवश्य ही देव (मानव), दैत्य-दानव एक ही माता-पिता की पुत्रियों की ही सन्तति रहे हैं। यदि हम अपने पौराणिक ग्रन्थों की गहराई से अध्ययन मनन करें तो अवश्य ही यथार्थ के निकट पहुंच सकते हैं।

दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य थे। ये ससार के सर्वमान्य नीतिज्ञ थे। शुक्र नीतिनिपुण एवं मंत्रद्रष्टा भी थे तथा राजा-महाराजाओं की भांति शक्तिशाली भी थे। दक्ष की जेष्ठ पुत्री का नाम दिति था। इन्हीं के वंशज को दैत्य वंश कहा गया। दक्ष-पुत्री दिति के चार पुत्रों में हिरण्यकशिपु, सवसे वडा था और हिरण्यकशिपु के चार पुत्रों में प्रहलाद, सवसे वडे थे। हिरण्यकशिपु ने शिव की तपस्या अराधना से प्राप्त वरदान के वल पर विशव में अपने आपको सर्वोपरी होने की घोषणा की थी। उनके समक्ष अन्य किसी भी प्रभू की अराधना वर्जित थी। लेकिन उन्हीं के जेष्ठपुत्र, अदृश्य शक्ति प्रभुराम की भक्ति में दृढप्रतिज्ञ थे, समर्पित थे। उनका 'राम" प्रत्येक प्राणी के घट-घट में रमण करनेवाले रमन्तेराम थे।

हिरण्यकशिपु ने अपने जेष्ठपुत्र प्रहलाद को उनके प्रभुराम की भक्ति से विमुख करने के लिए साम, दाम, दण्ड और भेदादि सम्पूर्ण नीतियों का प्रयोग किया, अत्यधिक यातनाएं भी दी फिर भी प्रहलाद अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे। अन्त में राजा हिरण्यकशिपु की सहोदर वहन होलिका ने जलती हुई चिता में प्रहलाद को गोद में रखकर भष्म कर देने का निश्चय अपने भ्राता के समक्ष रखा। होलिका को वरदान में एक चादर प्राप्त हुई थी, जिसे शरीर में लपेटने से उसके शरीर पर अग्नि का किंचित भी असर नहीं होता था। हिरण्यकशिपु ने इसको हृदयंगम करते हुए द्वादशी के दिन अपने राज्य में ढिंडोरा पिटवाया कि पूर्णिमा अर्थात् फाल्गुण पूर्णिमा के दिन प्रहलाद को गोद में रखकर होलिका का दहन होगा। प्रत्येक परिवार में इस उपलक्ष्य में हर्षोल्लास मनाया जाए और घर-घर में मिष्ठान, भोजन तैयार किया जाए। इस घोषाणा से प्रहलाद के समर्थक अत्यन्त ही दुःखी हुए और भक्त प्रहलाद के पक्ष में जुलूस निकाला जो 'प्रहलाद की जय हो' के नारे से गुन्जित था। हिरण्य पक्ष के लोगों का राक्षसी रुप देखा गया और प्रहलाद पक्ष पर लाठियां वर्षाई गईं। उनके शरीर से रक्त की धाराएं बह चली। उसी के प्रतीक स्वरुप लाल रंग (रक्तरंग) और राक्षसी प्रवृति के प्रतीक स्वरुप नीला, आदि रंगों का प्रयोग हिरण्यकशिपु के समर्थकों द्वारा किया गया।

होलिका दहन की घोषणा होते ही प्रहलाद की माता ने प्रहलाद समर्थकों के सहयोग से होलिका की वरदान स्वरुप चादर के जैसी ही चादर प्राप्त कर ली थी और

लकडियों की तैयार चिता पर वैठते समय शरीर में अग्नि का किंचित भी असर नहीं हो सकनेवाली चादर प्रहलाद के शरीर पर और उसी से मिलती अन्य चादर होलिका को दी गई। होलिका ने अन्य चादर से अपने शरीर को लपेटा और प्रहलाद ने असली चादर से शरीर को लपेटा । उपस्थित जनसमूह के समक्ष राजा हिरण्यकशिपु की आज्ञा से घोषणा हुई "यदि महराजा हिरण्यकशिपु संसार में सर्वोच्च प्रभु हैं तो हालिका जीवित रहेगी, उनके शरीर पर अग्नि का किंचित भी असर नहीं होगा । और:प्रहलाद जलकर भष्म हो जाएगा । "यद्यपि चित्ता में अग्नि प्रज्वलित होने से पहले प्रहलाद पक्ष में अश्रुओं की धाराएं वह रही थी । और हिरयण्कशिपु पक्ष का उनपर आक्रमण हो रहा था । जलाने का मुहूर्त (लग्न) सूर्यास्त के पश्चात अर्थात चतुर्दशी की रात्रि प्रारम्भ का था । तथापि चिता में अग्नि प्रज्वलित होते ही प्रहलाद हे प्रभुराम कहते सुने गए और होलिका के रुदन की भयावह चित्कार सुनी गई, परिणाम ठीक विपरित हुआ । उपस्थ्ति जनसमूह के हृदय पर प्रहलाद के प्रभुराम की गहरीछाप पडी और हिरण्यकशिपु का घमण्ड चूर हुआ । और दूसरे दिन प्रातः से ही सम्पुर्ण जन समूह हर्षोल्लास के साथ एक दूसरे को अबीर (गुलाल) लगाते हुए भक्त प्रहलाद को साथ लेकर जय जयकार नारों से आकाश को गुञ्जित करते हुए परिक्रमा करने लगे। इस त्यौहार का औचित्य न्याय, सत्य और सहिष्णुता की विजय और अन्याय, क्रूरता और घमण्ड का पराजय ही देखा गया । लेकिन धीरे-धीरे इसकी मौलिकता को छोडकर, कृत्रिमता, विकृति और विसंगति अपना ली गई जिससे इस त्यौहार की मौलिकाता की हत्या होती गई ।

कृष्ण काल की रंगीन होली

व्रज में होली का प्रारम्भ कृष्ण द्वारा कंसादि क्रूर अत्याचारियों के दमन से शुरु हुआ था । तथापि इसका श्रीगणेश बरसाणे की महिलाओं की ओर से नन्दगावं के पुरुषों को आमंत्रित कर किया गया । कहा जाता है कि वलराम की ससुराल वरसाणा में थी । वहां महिलाओं द्वारा विशाल आकार की कडाही में सुगन्धित केशर का रंग बनाकर रखा गया था । नन्दगांव के पुरुषों को रंग भरने की पिचकारियों सहित आमंत्रित किया गया और बरसाणे की महिलाएं रेशमी धागों से वने हुए कोडे लिए उपस्स्थित रहीं । नन्दगांव के पुरुष कृष्ण और बलराम के नेतृत्व में पिचकारियों में रंग भर कर वरसाणें की महिलाओं के उपर चलाते और बरसाणे की महिलाएं उन पर रेशमी धागों से बने हुए कोडों से मुकाविला करतीं । आगे चलकर यह प्रथा सम्पूर्ण व्रज और उसके आस-पास के क्षेत्रों में भी प्रचलित होती गई । नन्द गांव और बरासाणे में हार-जीत का निर्णय न होने पर, सांयकाल एक पुरुष के आगे एक महिला को रखकर उस रंग भरे विशाल कडाही के चारों ओर घेरा बनाकर डाण्डिया नृत्य का आरम्भ हुआ ।

डाण्डिया नृत्य आज भी ब्रज के अतिरिक्त विशेषरुप से गुजरात में प्रचलित है । यद्यपि ब्रज के पडोसी क्षेत्रों राजस्थान, मालवा, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि भू-भागों में इसका प्रारम्भ प्रतिपदा के दिन से सुरु हो जाता था । जहां महिलाएं पुरुषों के साथ सहभागी नहीं होती थी, वहां पुरुष ही महिला

भेष में सहभागी होते थे। तथापि कृष्ण प्रणामी सम्प्रदाय की ओर से डाण्डिया नृत्य में पुरुष और महिलाएं निसंकोच सहभागी होते हैं। इस प्रकार कृष्णकाल की रंगीन होली में भेदभाव मिटाने और नारी एवं पुरुष को समानता का दर्जा देने के लिए हुआ। जिससे समाज में एक दूसरे के प्रति श्रद्धा, स्नेह और आत्मीयता का प्रति वर्ष नवीकरण होता रहे।

नेपाल में अहिर (यादव) राज की स्थापना मुक्ततमानवर्मा ने की थी उन्हीं के राज्यकाल में कृष्ण द्वारा प्रचलित रंगीन होलीका त्यौहार शुरु हुआ था। होलिका दहन एवं होली का प्रारम्भ भक्त प्रहलाद के समर्थकों और अनुयायियों द्वारा नेपाल में भी प्रचलित हुआ। पहाडी तथा तराई क्षेत्र में जहां यह रंग अबीर तथा कीचड के द्वारा खेली जाती है तो पहाडी क्षेत्र में रंग, अबीर तथा बैलून में रंगीन पानी भर कर राह चलते लोगों पर फेंकी जाती है। तथा फागून पूर्णिमा से एक दिन पहले ही अर्थात् चतुर्दशी को मनायी जाती है।

साहित्य

हिन्दी के कृष्ण-काव्य-परम्परा और विकास

-प्रो. जैनेन्द्र कुमार सिंह

महेन्द्र मोरंग आदर्श बहुमुखी कैम्पस,
विराटनगर

भगवान श्री कृष्ण का उल्लेख कई रुपों में हमारे धर्मग्रन्थ में उपलब्ध होता है। श्रीकृष्ण का सर्वप्रथम ज्ञात उल्लेख ऋग्वेद (१।१६।११६-२३) में स्तोता ऋषि के रुप में उपलब्ध होता है, जिसमें वे अपने पौत्र विस्णायु के पुनर्जीवन के लिए अश्विनी कुमारों में प्रार्थणा करते हैं। छन्दोग्य उपनिषद् में आंगीरस के शिष्य कृष्ण को देवकी का पुत्र भी कहा गया है। उन्हें अपने एक शिष्य से यज्ञ की सरल रीति प्राप्त हुई थी। इसी समय के आस-पास भारत में सात्वत अथवा वृष्णी नामक क्षत्रियों का एक वंश वर्त्तमान था। जिसके एक महापुरुष का नाम वासुदेव था। ये वासुदेव ईश्वर के एकत्व भाव के प्रचारक थे। अपनी मृत्यु के उपरान्त वासुदेव सात्वता द्वारा व्रह्मा के साकार स्वरुप मान लिए गये - कहते हैं गीता इसी कुल का महाग्रन्थ है।

कृष्ण चरित का प्रथम व्यापक चित्रण महाभारत में हुआ है। महाभारत के कृष्ण पाण्डवों के मित्र और एक नीतिकुशल नरेश हैं। वे युद्ध से विरत होते अर्जुन का मोहभंग करते हैं तथा उसे कर्त्तव्य का उपदेश देते हैं। महाभारत के कुछ अंशों में कृष्ण विष्णु के अवतार के रुप में भी चित्रित हैं। ईसवी सन् की दूसरी-तीसरी शताव्दी में आभरों के आराध्य देव गोपाल कृष्ण कहे जाते थे। जिनकी वाल तथा यौवन की लीलाएं श्रृंगार का सदा नीर उत्स थीं। धीरे - धीरे आभीरों के ये गोपाल (कृष्ण) महाभारत के वासुदेव कृष्ण से एकाकार हो गये और इनकी वाल पुरातन कृष्ण की लीलाएं वन गयीं। कृष्ण का यह अभिनव व्यक्तित्व इतना आकर्षक और प्रभावशाली सिद्ध हुआ कि कुछ ही समय में उसने समस्त धर्मग्रन्थों और काव्यसाहित्य को आच्छादित कर लिया। मध्ययुग का सबसे शक्तिशाली पुराण भागवत में श्रीकृष्ण का यही रुप व्यंजित है किन्तु श्रीमहाभागवत में जहां श्री कृष्ण की ब्रजलीलाओं की व्यापक चर्चा है, वहां राधा का कोई नामोल्लेख नहीं है। केवल एक श्लोक से ही राधा के व्यक्तित्व का कुछ आभास मिलता है। जिसमें एक गोपी के साथ श्रीकृष्ण के अर्न्तध्यान हो जाने पर अन्य गोपियां कहती है–

"अनयाराधितो नूनं भगवान हरिरीश्वरः
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनय द्रहः"।

(१०।२०।२४)

उसी ने भगवान हरि का सही आराधना

की है क्योंकि हमें छोड़कर गोविन्द इसी के प्रेम में पगे हुए हैं। इसी अनयाराधितो से राधा नाम का संधान विद्वानों ने किया है। परवर्त्ती पुरानों में पदमपुराण, मत्यस्यपुराण व्रह्मवैवक्तपुराण आदि में राधा के विषय मे उल्लेख अवश्य प्राप्त होते हैं। उज्जवल नीलमणी में रुपगोस्वामी ने राधा को माधव के साथ सन्निहित बतलाया है।

ऐसा लगता है, कि आमीरों से चली आ रही लोकभाषाओं में राधा-कृष्ण की प्रेमलीला-गायन की परम्परा आगे चल कर पुराणों और शिष्ट साहित्य में अपना ली गयी। किन्तु जहां पुराणों में इसे धार्मिक दृष्टि से स्थान मिला वहां जयदेव (वारहवीं शताव्दी) जैसे प्रसिद्ध कवि ने उसे कालदृष्टि से अपनाया। कृष्ण के साथ राधा का व्यक्तित्व जुड जाने से कृष्ण व्यक्ति से अधिक प्रतीक वन गए। एक ओर इनके माध्यम से प्रकृति और पुरुष के चिन्मय विलास का चित्रण हुआ तो दूसरी ओर प्रेमिका और प्रेमी के विभिन्न संवंधों और मोहक चेष्टाओं का उच्छ्वस्ति कंठ से गायन होने लगा। इतना ही नहीं राधा को साहित्य में कृष्ण की आह्लादिनी शक्ति मानकर वैष्णवाचार्यों ने उनकी उपासना का पथ प्रशस्त कर दिया। साथ ही जयदेव जैसे कवि ने श्रृंगार और भक्ति को परस्पर समन्वित भावधारा के रुप में ग्रहण कर परवर्त्ती रीतिकालीन हिन्दी कवियों को भी हरिस्मरण के आवरण में अपनी दमित वासना का बखान करने का अवसर दिया। जयदेव का कथन है "यदि हरिस्मरणे सरस मनो यदि विलासकलासु कुतुहलनम्।
मधुर-कोमलकान्त पदावली जृणु तहा जयदेव सरस्वतीम् (गीतगोविन्द)

इतना -ही नहीं आज हिन्दी सिनेमा के गीतकर भी राधा-कृष्ण के नामों की आड में अश्लील गीतों की रचना करने से नहीं चूकते।

हिन्दी साहित्य में पहली बार राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का मार्मिक अंकन विद्यापति के गीतों में हुआ है। विद्यापति ने भी जयदेव की भांति अपने पदों में एक साथ 'हरिस्मरण' और विलासकला की भूमिका बांधी है। विद्यापति के नायक किशोर कृष्ण हैं, जो मानिनी राधा से मिलने के लिए हमेशा विकल रहा करते हैं।

"नंदक नंदन कदंवक तरुतर
धीरे-धीरे मुरली बजाब।
समय संकेत निकेतन वइसल
वेरि-वेरि वोली पठाव॥
सामरि, तोरा लागि अनुखन विकल मुरारी।
यमुना के तिर उपवन उदवेगल
फिरि-फिरि ततहिं निहारी॥"

इसी प्रकार विद्यापति के सौन्दर्य वर्णन का भी कोई मेल नहीं। इन पंक्तियों को देखें "ससन-परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह। नव जलधर तर चमकए रे जनि वीजरि रेह॥ ता पुन अपरुप देखल रे कुच जुग अरिविन्द॥ विगसित नहीं किछु कारण रे सोभ्हा मुखचन्द॥

विद्यापति ने कृष्ण के पूतना-मारण इन्द्र के कोप से व्रजवासियों के रक्षण, दुष्टों के दलन, कंस बध आदि किसी भी ऐश्वर्य-प्रधान लीला के प्रसंग को नहीं छुआ है। उन्हें कृष्ण का कोमल किशोर और रसिक रुप ही अधिक प्रिय है पर विद्यापति के बाद के कवियों ने कृष्ण के अपेक्षाकृत व्यापक व्यक्तित्व का अंकन किया है। भक्तिआन्दोलन के प्रणेता आचार्य रामानुज, मध्व, निवार्क और बल्लभ में से रामानुज को छोड़कर शेष सभी आचार्य कृष्ण के उपासक थे। इनमें से वल्लभाचार्य का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर सर्वाधिक पडा। बल्लवभ सम्प्रदाय के आठ प्रसिद्ध रससिद्ध कवियों में सूरदास का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। सूर के काव्य में कृष्ण का जो स्वरुप देखने को मिलता है, वह अभूतपूर्व है। एक ओर जहां उसमें व्रह्मत्व की गरिमा तथा

लीला की विशदता है तो दूसरी ओर प्रेम की तीव्रता और अनुभूति की विदग्धता भी। सख्य वात्सल्य और माधुर्य की ऐसी त्रिवेणी अन्यत्र दुर्लभ है। सूर ने बालकृष्ण की सुन्दरता का जो मार्मिक चित्रण किया है उससे बढकर सौन्दर्य का दूसरा प्रतिमान नहीं हो सकता। इस रमणीयता को शव्दों की सीमित परिधि में वांध पाना सूरदास जैसे सिद्धवाक कवि से ही सम्भव था। कवि ने उचित ही इस छवि की तुलना सागर से की है –

"देखी माई सुन्दरता को सागर
बुधि विवेक वल पार न पावत
मगन होत मन नागर
तनु अति स्याम अगाध अम्वुनिधि
कटि पट पीत तरंग।
चितवन चलत अधिक रुचि उपजत
भंवर परति सव अंग॥"

सूर के कृष्ण और गोपियों के स्नेह-संवंध का विकास भी किसी अप्रत्याशित रीति से मानसिक विप्लव के रुप में न होकर नित्य प्रति के जीवनोत्सव के रुप में होता है। कृष्ण अपनी रुपमाधुरी और चपल क्रीडाओं के कारण धीरे-धीरे गोपांगनाओं के जीवन के ऐसे अविच्छेद्य अंग बन जाते हैं कि उनसे टूटकर अलग होने की आशंका किसी को स्वप्न में भी नहीं होती। तभी एक दिन बज्रपात की तरह अक्रूर का व्रज में आगमन होता है और वे कंस के निमन्त्रण पर कृष्ण को रथ पर चढाकर मधुपुरी ले जाते हैं। कृष्ण वहां पहुंच कर कंस का वध करते हुए कुब्जा को प्रेम का दान देकर देश की राजनीति में इस प्रकार लिप्त हो जाते हैं कि गोपियों की सुधि भी नहीं आती। इसके बाद का प्रसंग हिन्दी साहित्य में 'भ्रमरगीत' के नाम से विख्यात है और अपनी सरसता, मधुरता और मार्मिकता की दृष्टि से विश्व साहित्य में अनुपम् है। मनुष्य और प्रकृति की संवेदनशीलता का सामंजस्य इस गीत में अद्भूत रुप से प्रतिफलित है –

"देखियति कालिन्दी अति कारी
कहियो पथिक जाय उन हरि सौंभह
विरह जुर जारी॥"

कृष्ण भक्ति का एक सर्वथा नवीन और विलक्षण रुप राजस्थान की राजरानी मीरा की रचनाओं में व्यंजित होता है। दरद-दिवानी मीरा की वाणी में आराधना और उत्सर्ग, समर्पण और विसर्जन का अनोखा मिश्रण है। उसने गिरिधर गोपाल को केवल आराध्य ही नहीं, प्रेमी के रुप में भी जाना था। एक ऐसा प्रेमी जिसकी सेज फूलों से वेष्टित नहीं कांटों से सज्जित है और जिसको रिझाने के लिए उस राजरानी को लोकलज्जा की धूल उडाकर नाचने की आवश्यकता पड गयी थी–

"मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई,
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई"।

मीरा के गिरिधर गोपियों के नंदलाल की तरह निष्ठूर और बेपीर नहीं। वे तो वरावर मीरा के हृदय में निवास करनेवाले हैं। कभी वे अदृश्य रहकर विष के प्याले को अमृत में परिणत कर देते हैं तो कभी प्रकट होकर प्रिया के साथ फिरमिट, खेलने की साध पूरी करते हैं। इसमें जैसे जीवन की समग्र चेतना ही प्रिय का सान्निधय प्राप्त करने के लिए मचल उठी है।

इस काल के केवल हिन्दू कवियों ने ही श्री कृष्ण की भक्ति की गंगा का अवगाहन, उनकी भुवनमोहिनी लीलाओं का गायन नहीं किया बल्कि अनेक मुसलमान कवि भी इस रुपमाधुरी पर सौ-सौ जान से कुर्वान हो गये। इन कृष्णभक्त मुसलमानों मे पठान रसखान अग्रगण्य हैं जो कृष्ण के प्रेम में इतने पगे हैं कि अगले जन्म में भी मनुष्य होने पर गोकुल की

ग्वालन, पशु होने पर नन्द की गाय, पत्थर होने पर गोवर्धन पर्वत और पक्षी होने पर यमुना के किनारे कदंव के वृक्ष पर बैठने की कामना करते हैं। इतना -ही नहीं वह तीनों लोकों का राज छोड आठों सिद्धी और नवोनिधि को भुलाकर नन्द की गाय चराने में परम सुख मानते हैं–

"या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहुं पुर को तजि डारों।
आठहुं सिद्धि नवोनिधि को सुखनंद की गाय चराय विसारौं॥
नैनन से रसखान जवै व्रज के वन वाग तडाग निहारों
केतिक ही कुलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।

और पराकाष्ठा तो तव हो जाती है जब वे कहते हैं–

"नंद के कुमार कुर्वान तोरी सूरत पर हौं तो मुगलानी पै हिन्दुआनी ह्वै रहूंगी मैं।

रीतिकाल में आकर भक्ति की प्रेरणा क्षीण एवं शिथिल पड गयी, किन्तु समस्त रीतिकालीन काव्य में नायक और नायिका के रुप में वार-वार कृष्ण और राधा का ही नाम आता है। मगर अनेक चित्रण में हृदय की वह तन्मयता और भावनाओं की गहराई नहीं लक्षित होती, जो भक्तिकाव्य का प्राण है। यह नाम स्मरण महज औपचारिक है। एक प्रकार का सामाजिक कवच मात्र है जिसकी ओट में वासना का खेल खेला जा सके।

भारतेन्दु-हरिश्चन्द्र कृष्णभक्ति-परम्परा के लगभग अन्तिम छोर पर खडे हैं, इसलिए वे अनायास ही अपने काव्य में परम्परा का सारा माधुर्य समेटे हुए हैं। एक ओर उनके कृ[illegible] सम्बन्धी पदों में सूरदास जैसी तन्मयता और आत्मनिवेदन की प्रधानता है तो दूसरी ओर कवित्त सवैयों में रसखान की आत्मीयता और पारदर्शिता भी। गोपियों की दीन दशा का चित्रण करते हुए कवि लिखते हैं –

"भूली-सी भ्रमी सी चौंकी जकी-सी थकी सी गोपी।
दुखी-सी रहत कछु नहीं सुधि देह की।
मोही लुभाई कछु मोहक सौं खाए सदा।
विसरी सी रहै नेकु खवर न गेह की।
प्रेममाधुरी (भारतेन्दु)

भारतेन्दु के वाद आधुनिक काल में कृष्ण काव्य की दूसरी महत्वपूर्ण कडी हरिऔध हैं। केवल भाषा और छन्द ही नहीं यहां कवि के दृष्टिकोण में भी पर्याप्त नवीनता है। 'प्रियप्रवास' के कृष्ण न तो परब्रह्म के अवतार हैं और न "गोपीपीनपयोधरमर्दन चंचल कर युगशाली" ही। वे गांधी -युग के उदात्त नायक हैं जो सेवा और आत्मत्याग के आदर्श को सर्वोपरि मानते हैं। यहां कृष्ण की अलौकिक अमानवीय लीलाओं को भी बुद्धिसंगत व्यवहारिक रुप देने का प्रयास है। प्रियप्रवास का ही दृष्टिकोण कुछ संशोधनों के साथ द्वारिका प्रसाद मिश्र के कृष्णायन में अपनाया गया है। तुलसी के रामचरितमानस की शैली में प्रणीत 'कृष्णायन' अब तक की कृष्णचरित संबंधी सबसे विशाल प्रबन्ध काव्य है, जिसमें कृष्ण के व्यक्तित्व के पूर्ण वैविध्य को उभारने का आयोजन है। यहां कृष्ण प्रमुखतः एक कर्मयोगी और आर्य जाति के नेता के रुप में चित्रित हैं। उनका उद्देश्य है भारत व्यापी राष्ट्रीयता का निर्माण करना। वे युधिष्ठिर से कहते हैं–

निहित राज्य महँ जनकल्याना।
होतु न तासु-दान-प्रतिदाना॥
लिन्ह तुम्हार पक्ष मैं यही रण।
ततहु ताता अनुराग न कारण॥
जनहित कर मुनि राज्य तुम्हारा।
तजि प्रण चक्रहुं मै कर थारा॥

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त मुख्यतः रामभक्त कवि होते हुए भी कृष्णचरित के प्रति उदासीन नहीं रहे। उनके 'द्वापर' के कृष्ण माखनचोर और राधावल्लभ भी हैं तथा नवीन क्रान्ति के विधायक भी। बलराम की उक्ति है –
प्रस्तुत रहो कृष्ण नूतन मख रचने ही वाला है।"

इतना ही नहीं कृष्ण के मनमोहक व्यक्तित्व चरित्र और अद्‌भुत लीलाएं इतनी आकर्षक है कि ईसाई वन चुके धर्मविरोधी वंगला कवि मायकल मधुसुदन दत्त भी कृष्ण की मनभावन लीला का गायन करने से नहीं चूके–

"नाभि छे कदम्ब मूले
मुरली वजाई
चल सखी त्वराकरि
देखिंगे प्राणेर हरि
व्रजरतन"

मानवतावादी मूल्यों के पृष्ठपोषक डा.धर्मवीर भारती ने कृष्ण से संबंधित दो पुस्तकें लिखी है। 'अंधायुग' शीर्षक काव्यनाटक और 'कनुप्रिया' नामक लघुप्रबन्ध।

इनमें प्राचीन कथावस्तु में नई संवेदन ढाली गयी है। 'अंधायुग' में गांधारी के शाप को कृष्ण के द्वारा स्वीकार किया जाना कवि के विचारों में आमूल परिवर्त्तन ला देते हैं और न चाहते हुए भी कृष्ण के देवत्व की महिमा को स्वीकार करने पर कवि को बाध्य कर देता है–

"अठारह दिनों के इस भीषण संग्राम में
कोई नहीं, केवल मैं ही मरा हूं करोडों बार।
x x x x
जीवन हूँ मैं
तो मृत्यु भी तो मैं ही हूं मैं
शाप यह तुम्हारा स्वीकार है"।

'कनुप्रिया' में कवि सृष्टि के स्वाभाविक विकास के लिए पुरुष के साथ नारी का योग आवश्यक मानता है। कनुप्रिया की उक्ति है–

"और जन्मान्तरों की अनंत पगडंडी के
कठिनतम मोड पर खडी होकर
तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ
कि इस वार इतिहास वनाते समय
तुम अकेले न छूट जाओ"।

यह कृष्ण के साथ राधा के अभिन्न संवंध की सर्वथा नवीन और युग-सापेक्ष व्याख्या है। इसी प्रकार आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री की 'राधा' शीर्षक प्रवन्ध भी इस कडी की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है जिसमें कनुप्रिया की तरह राधा के अकिंचन उत्सर्ग को दर्शाया गया है। इस प्रकार हिन्दी के कवियों ने कृष्ण के व्यक्तित्व में अन्तर्निहित सम्भावनाओं को पहचाना और उसे मार्मिकता से व्यंजित किया है।

साहित्य

"तरुनी खेती": एक वैचारिक तरंग

शारदा अधिकारी
पद्मकन्या कैम्पस

पुरुष प्रधान विश्व समाज व्यवस्था के मूलभूत अहंकार को उद्घाटित करने के लिए अहंवादी सोंच के परिणाम स्वरुप इस उपन्यास का जन्म हुआ है। शायद इस उपन्यास में मैं विषयवस्तु से यथार्यवादी शैली से प्रयोगवादी और दृष्टि से परिवर्तनवादी हूँ" कहते हुए अपने उपन्यास 'तरुनी खेती' को सटिक समालोचना सहित प्रस्तुत करने वाले सरुभक्त 'नेपाली साहित्य' में सुपरिचित नाम है। प्रयोगवादी कवि के रुप में नेपाली काव्यविधा में स्थापित सरुभक्त ने, नेपाल के आधुनिक उपन्यास के क्षेत्र में भी 'एक अभिनव की आत्मकथा', 'पागलवस्ती' और 'तरुनीखेती' नामक तीन उपन्यासों की वगिया बनायी है। अभीतक के कनिष्ठ उपन्यास तरुनी खेती के पढने से उठे वैचारिक तरंग इस लेखन का विषय बना है।

नेपाली समाज में नेपाली मिट्टी और यदि कहा जाए तो पृथ्वी के अधिकांश भू-भाग में व्याप्त पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था और इससे अपनी समस्याओं का विश्लेषणात्मक प्रस्तुति इस उपन्यास में किया गया है। विश्व के सभी धर्मों में सुगम, सरल और मनोरम माना गया आश्रम अर्थात् जीवन यापन विधि गृहस्थाश्रम को अन्ध विश्वास के कारण किस तरह वंशपरम्परा की निरन्तरता में सीमित कर दिया गया है ? गृहस्थ जीवन का मूल धर्म-मर्म ही सन्तान प्राप्ति है और इसमें भी पुत्र प्राप्ति है। पुत्र की प्राप्ति न होने से जीवन व्यर्थ होता है, ऐसी मान्यता से विश्व समाज किस तरह बंधा हुआ है ? जनसंख्या की कमी से प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का सदुपयोग न होने के कारण जनसंख्या वृद्धि के लिए सृष्टिक्रम को निरन्तरता देने हेतु परापूर्व काल में स्थापित मान्यताओं का अंधानुसरण कर वहुजन संख्या के चलते पृथ्वी का अस्तित्व समाप्त हो रहा है। आज की अवस्था में भी उसी रुप में स्वीकार करने पर उससे उत्पन्न समस्याओं को परोक्ष रुप से उद्घाटित करने वाले इस उपन्यास में विश्व समाज में व्याप्त पुरुषवादी हुंकार को भी नंगा किया गया है। नेपाली समाज से लेकर विश्व समाज तक के गहन विषय को समेटने वाले इस उपन्यास का कथानक अधिक ही पारदर्शक है।

उपान्यास के ऊ पात्र के पैदा होने से उसका पिता खुश है। ऊ बढता जाता है और तरुण (युंवा) होता है। उसकी भी शादी कर दी जाती है। कुछ वर्षो के दाम्पत्य जीवन के बाद भी वह पिता नहीं बन पाता है। सन्तान प्राप्ति के लिए नायक पूजा-पाठ, दान-धर्म सभी कुछ करता है। फिर भी सन्तान प्राप्ति में असफल होता है। नायक की दूसरी शादी होती है, इससे भी वह पिता बनने में सपफल नहीं होता है। लम्बे समय तक पिता न बनने पर वह पुनः

इलाज के साथ ही धर्मकर्म की ओर प्रवृत होता है। वहुत समय के वाद शंकास्पद तरीके से उसकी दूसरी पत्नी को तीन वेटी और एक वेटा होता है अन्तर्मन में शंका का वादल मंडराने के वावजूद भी वाध्य रुप में उन सन्तानों को अपना मानकर उनके लालन-पालन में अपने आप को वह डूवो देता है। वेटी की विवाह करने का समय आने पर उसका सन्ताप वढता जाता है। मझली वेटी की शादी करता है, वडी वेटी रोगी अवस्था में ही मर जाती है और छोटी वेटी को उसके प्रेमी से वचाकर घर से दूर राजधानी में लाकर उसका विवाह कर देता है और अन्ततः छोटे वेटे के प्रति भी अपने कर्तव्य को पूरा कर अपनी इहलीला समाप्त करता है।

इस प्रकार कथावस्तु से वने इस उपन्यास में मानव जाति की सृष्टि परम्परा को मूर्त रुप दिया गया है और इसी परम्परा की निरन्तरता को ही मानव जीवन की सार्थकता मानने वाले मनोविज्ञान तथा धर्मशास्त्र की मान्यता को भी स्पष्ट किया गया है। मनुष्य एक पौधे के रुप में जन्म लेता है और वढते हुए वृक्ष वनता है, फिर उसमें फल लगते हैं अर्थात् उसके फल रुपी बच्चे होते हैं, उनका पालन-पोषण कर उसे वृक्ष वनाते हैं और उसमें भी फल लगने के लिए उसकी शादी कर देते हैं। अपने द्वारा वनाए गए वृक्ष में फल लगने पर पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्य का इतिश्री मान संतोष की सांस लेते हुए इस संसार से विदा लेते हैं और यदि वच्चे नहीं होते तो असन्तुष्टि में अपना पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। व्यक्ति अपना उत्तराधिकारी और उसके भी उत्तराधिकारी पैदा करने और कराने में ही सन्तुष्ट होता है, क्योंकि इससे उसके मनोविज्ञान और धर्मशास्त्र दोनों की ही परिपूर्ति होती है व्यक्ति में अन्तर्निहित असीमित काल की जिजीविषा, सन्तान के चेहरे में संतुष्टि प्राप्त करती है। उसकी जिजीविषा अनन्त काल की होती है, लेकिन जीवन अल्पायु है, इसी से वह अपने रज और वीज से धारण किए गए शरीर और उसकी सृजनाओं में अपनी जीवनेच्छा की तृष्टि खोजता है।

और यह मनो वैज्ञानिक यथार्थ है, शायद इसी से, इसे आधार मानकर वनाये गये प्रायः सभी धर्मों के धर्मशास्त्र में गृहस्थ जीवन का मूल धर्म सृष्टि क्रम में निरन्तरता देने में सहभागी होना माना गया है। इस तरह मनोवैज्ञानिक तथा धार्मिक दृष्टि से जीवन का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना गया सन्तान प्राप्ति ही, मानव जीवन का लक्ष्य है और इस लक्ष्य को प्राप्त किए विना जीवन सार्थक नहीं हो सकने वाला संस्कार मानव जीवन को किस तरह जकडे हुआ है, और इसकी अप्राप्ति से जीवन किस तरह विकृत मार्ग को अपनाने की कोशिश करता है, ऐसे सार्वजनीन विषय को इस उपन्यास में उकेरा गया है।

एक ओर यह उपन्यास अस्थायी जीवन की वंश परंम्परा पूर्ति का मोह दर्शाता है तो दूसरी ओर पुरुष की भोगवादी धारणा को आगे वढाता है। मृत्यु से अभिशप्त मानव जीवन, जीवन पर्यन्त भोग का इच्छुक है। अपने विविध इच्छा आकांक्षाओं को निर्विघ्न रुप में पूरा करना चाहता है। उसके विभिन्न एष्णाओं में से यौन एषणा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। इसकी पूर्ति वह किसी भी हालत में करना चहता है, और इसकी पूर्ति में यदि किसी प्रकार की वाधा अडचन होती है तो वह हिंसक भी बन जाता है। इस यौन मनोवैज्ञानिक यथार्थ के उद्घाटित करनेवाले इस उपन्यास में मूल रुप में पुरुष का अहं, नारी के प्रति उसकी धारणा तथा व्यवहार को भी

अत्यन्त ही स्पष्ट रुप में उठाया गया है।

उपन्यासकार सरुभक्त ने सार्वनामिक पात्र ऊ को इस उपन्यास का नायक बनाया है और उस पात्र के नामाकरण के माध्यम से ही आज के अधिकांश पुरुष प्रधान समाज में नारी केवल भोग की वस्तु है, और इसे कैसे भोगा जाता है, इस दृश्य को दिखाया है। नारी केवल पुरुष की काम वासना को शान्त करने और उसके वंश परम्परा को कायम रखने के लिए वच्चा पैदा करने का एक यन्त्र मात्र है। पुरुष प्रधान समाज के इस नंगे यथार्थ को नंगा किया गया है। पिता के घर में रहने तक वह पिता के संरक्षण में रहती है। अपने अन्दर की चाहना को अपने ही घर में व्यक्त नहीं कर पाती है। पिता की पसन्द, न जंचने के वावजूद भी मौनता का वरण करना ही उसका सही चरित्र है। पिता और पति के पसन्द को ही अपना चयन मान चुपचाप आत्मसमर्पण करना और पति की सभी इच्छाओं को अपना समझ उसे पूरा करना ही पत्नी का सच्चरित्र है। पुरुष प्रधान समाज में नारी को मनुष्य के रुप में न देखने के तथ्य को स्पष्ट करने के लिए उपन्यासकार सरुभक्त ने प्रत्येक नारी पात्र के लिए खेत नाम दिया है। नारी को मनुष्य न मानने के कारण ही समाज वेटी के जन्म पर दुःख व्यक्त करता है। और वेटे के जन्म पर खुशी मनाता है। विश्व के प्राय: सभी कोने में और नेपाल में व्यापक रुप से मिलनेवाले इस सामाजिक संस्कार की प्रस्तुति इस उपन्यास में यथार्थ रुप में हुई है, इस अर्थ में प्रस्तुत उपन्यास पुरुष प्रधान समाज का दस्तावेज ही वन गया है। नेपाली समाज के अधिकांश पुरुषों में अन्तर्निहित मनोविज्ञान को उतारे गये इस उपन्यास में सामाजिक मूल्य और मान्यताओं का विश्लेषण कर युगानुकूल समयानुसार की अपनी धरती, देश और समाज के प्रति के दायित्व को पूरा करने के समय में हजारों वर्ष पहले की परिस्थिति के अनुकूल बनाए गए धर्मशास्त्र की मान्यताओं का अन्धानुकरण करनेवाली आज की पीढी भी पृथ्वी के लिए अनावश्यक बोझ बनने जा रही है जैसे निराशावादी स्वर भी सुनने को मिलता है।

इस तरह, इस उपन्यास में शून्यवादी जीवन दृष्टि भी छाया हुआ है। मुनष्य का जीवन समुद्र की लहर जैसी है। समुद्र के पानी से निर्मित लहर।

लेकिन क्षण भर में ही समुद्र मे विलीन हो जाता है। इसी तरह मानव जीवन भी जन्म लेता है, वडा होता है, पुन: जन्म देता है, वडा करता है और फिर शून्य में विलीन हो जाता है। मानव जीवन का भूत और भविष्य शून्य है। केवल वर्तमान का अस्तित्व है। इस दर्शन को भी इस उपन्यास में दर्शाया गया है।

वर्तमान समाज में दिखाई पडने वाली व्यापारिक प्रवृति, प्रेम का अवमूल्यन, प्रत्येक सम्वन्ध के साथ जकडा हुआ है। निजी स्वार्थ जैसी विसगतियों का अंकन भी इस उपन्यास का उल्लेखनीय पक्ष है।

एक ओर जहां इसमें नायक को 'ऊ' सर्वनाम नाम दिया गया है और अन्य पुरुष पात्रों के लिए भी भैया, पडोसी, मित्र, वावू जैसे विशेष नाम से पुकार गया है, वहीं दूसरी ओर नारी पात्र के लिए, खेत, छोटी खेत, पौधा, और मादा जैसे निर्जीव नाम का प्रयोग कर उपन्यासकार ने समाज में नारी के अस्तित्व को किस रुप में स्वीकारा गया है ? उस तथ्य को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। यथार्थ के इस रुप को उद्घाटित करने के क्रम में नारी को निर्जीव वस्तु के रुप में प्रस्तुत करना उसके जैविक

अस्तित्व के प्रति भी आंख मूंद लेना प्रयोगवादी, आधुनिक उपन्यासकार के लिए उचित नहीं है ।

यह सच है कि समाज में नारी की मानसिक अस्मिता को उचित स्थान नहीं दिया गया है । वहुसंख्यक नारी को पुरुष की तोता वनकर रहने के लिए वाध्य होना पड रहा है, फिर भी उसके शारीरिक अस्तित्व को नकारा नहीं जा सका है । नारी के इस पक्ष को ढककर हेयपात्र के रुप में, वस्तु के रुप में पेश करने में उपन्यासकार के मन में कहीं नारी के प्रति वितृष्णा या विद्रोह की भावना तो काम नहीं कर रही है ? ऐसे प्रश्न भी उठ सकते हैं। नारी प्रति के समाज मनोविज्ञान को मुख्य विषय वना कर लिखा गया यह उपन्यास विश्व के सभी जगहों के पुरुष प्रधान समाज का प्रतिनिधित्व करता है ।

विश्व के प्रतिनिधि पात्र तथा प्रतिनिधि स्थान के प्रयोग से, सभी जगहों के पाठकों को अपने परिवेश की अनुभूति देने में सफल यह उपन्यास, जिस किसी भी भाषा में अनुदित किया जाएगा, उसी भाषा की एक मौलिक कृति वन सकती है ऐसी विशेषता है इसमें ।

तृतीय पुरुष शैलीयुक्त वर्णन तथा विश्लेषणात्मक प्रस्तुति वाले इस उपन्यास की भाषा भी उल्लेख्य पक्ष है काव्यात्मक भाषा इसे और मधुर वनाने में सफल हुआ है । प्रत्येक संवाद और प्रत्येक पंक्ति में पाठक को कविता का स्वाद देने वाले इस उपन्यास में उपन्यासकार का कवि व्यक्तित्व का प्रभाव भी इस उपन्यास को उत्कृष्टता प्रदान करती है ।

जार्ज बर्नाड शॉ

अंग्रेजी साहित्य में जार्ज वर्नाड शॉ का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं। निःसन्देह जार्ज वर्नाड शॉ शेक्सपियर के वाद सवसे वडे नाटक सम्राट हैं। उन्होंने अपनी ख्याति न केवल एक नाटककार के रुप में वल्कि एक महान् नेता, उपन्यासकार एवं समालोचक के रुप में अर्जित की है। परन्तु मुख्य रुप से उनकी लोकप्रियता का आधार स्तंभ उनका अभिनय सावित हुआ। उनके द्वारा लिखे गए अभिनय विभिन्न भापाओं में अनुवादित एवं जगह-जगह रंगमंचित हुए। आधुनिक युग में संसार का कोई भी भाग इनके लोकप्रिय पाठकों से अछूता नहीं है। ये (१८९२ से १९४९ तक) लगभग अर्धशताव्दी तक अंग्रेजी साहित्य में ज्योतिपूंज वनकर चमकते रहे। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इनकी रचनाएं विक्टोरियन युग से आधुनिक युग तक किसी न किसी रुप में परिवर्त्तनों का सूक्ष्म आकलन करती रही।

जार्ज वनार्ड शॉ का अधिक समय खासकर जवानी का अमूल्य समय इंगलैण्ड की धरती पर बीता। यद्यापि वे आयरलैंड के नागरिक थे। उनके पिता का नाम जार्ज कार शॉ था। ऐच्छिक वनवास ने उनके मन में राष्ट्र के प्रति जागरुकता की भावना भर दिया। उन्होंने अपनी शक्तिशाली कलम से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं का सूक्ष्म वर्णन एवं विश्लेषण किया। दुब्लिन के वाल्यकाल की अवस्थाओं को वदलकर उनमें वर्ग एवं धार्मिक अन्तरों का समावेश करा दिया। वे कभी मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करते थे। उनका लालन पालन रोमन कैथलिक प्रोटेस्टेन्ट की तरह चर्च के सन्स्कूल में हुआ। लेकिन कुछ ही दिनों पश्चात क्रिश्चयनिटि (ईसाई धर्म) से उन्हें वितृष्णा हो गयी। कैथोलिक वच्चों के वीच उनका विद्यालीय जीवन वहुत दुःखद एवं शर्मनाक सावित हुआ। उनकी भावनाएं धार्मिक एवं सामाजिक चेतना लानें की थी। प्रेटेस्टेन्ट लोग सभ्य एवं शासकवर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे परन्तु शॉ गरीव थे। उनके पिता जार्ज कार शॉ अनाज के असफल थोक विक्रेता थे। उन्होने सभ्य समाज में जीने की भरपूर कोशिश की परन्तु असफल रहे। शॉ परिवार परंपरावादी नहीं था। जार्ज कार शॉ की शराव पीने की वुरी आदत ने न केवल जार्ज वनांड शॉ की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचायी वल्कि पारिवारिक ढांचा को ही चरमरा दिया। यही कारण था कि जार्ज बनार्डशॉ ने आजीवन शराव न पीने की कसम खायी परंतु उनके पिता की हास्य क्षमता ने जार्ज वर्नाड शॉ के मस्तिष्क में हास्य के लिए एक अमिट छाप छोड दी।

शॉ की मां एक विदुषी महिला थी। उनका वैवाहिक जीवन शरावी पति के कारण सुखमय नहीं बीत सका। फलस्वरुप उन्होंने अपनी सारी शक्ति और क्षमता संगीत-विकास में लगा दी। शुरु-शुरु में शॉ ने अपनी मां से संगीत के वारे में खासकर लव आफ ओपेरा के वारे में वहुत कुछ सीखा। उनकी माता स्वयं एक कुशल गायिका भी थी। उन्होंने अपने शिक्षक जार्ज जन मन्टुलियर ली के साथ

दुब्लिन में संगीत विकास के लिए वहुत समय व्यतीत किया। परंतु परिस्थितिवश वे वहां नहीं टिक पायी सदा के लिए। १८७२ ई. में श्रीमती शॉ लण्डन अपने दो पुत्रियों एवं शॉ के साथ आयी। १८७१ ई. में जार्ज वर्नाड शॉ १५ वर्ष की अवस्था में विद्यालय छोड चुके थे। विद्वान के रुप में उन्होंने अपनी ख्याति भी आर्जित नहीं की थी। वाद में शॉ ने जो कुछ भी आर्जित किया वह अपने स्वाध्याय अनुभव, विचार , संगीत एवं अभिनय की क्षमता के वल पर किया। सर्वप्रथम दुब्लिन में उन्होंने जमीन-विक्रेता के यहां खजान्ची का कम किया। १८७६ ई. में उन्होंने लण्डन में एक टेलिफोन कंपनी में नौकरी कर ली (१८७६-१८९२)। शुरु-शुरु में उन्होंने लंडन में स्वाध्याय, सार्वजनिक भाषणों में अपना समय व्यतीत किया। वे पी.वी.शेली एवं अपने दोस्त हेनरी सल्ट से काफी प्रभावित हुए। उन्होने वहुत सारे महत्वपूर्ण दोस्त वनाये उनमे प्रमुख थे सिडनी, वियट्रिस, वेभ, विलियम मौरीश, इलेनर कार्ल्स (कार्ल्समार्क की वेटी)। उनकी दोस्ती ने उनमें कला एवं बुद्धिमता के प्रति जागरुकता जगायी। १८८० इ.०में डिवेटिन सोसाइटी वहुत ही लोकप्रिय था। शॉ इसमें शामिल हुए और महत्वपूर्ण विषयों पर भाषण दिये। वाद में उन्होंने पांच उपन्यास लिखा परंतु दुर्भाग्यवश वे उपन्यासकार के रुप में स्थापित नहीं हो सके। वाद में उनके उपन्यास विभिन्न पत्रिकाओं में छपे। उन्होंने उपन्यासकार की अपेक्षा पत्रकार के रुप में ज्यादा ख्याति प्राप्त की। उन्होंने सर्वप्रथम समालोचक के रुप में द वर्ल 'के लिए १८८५ ई. में काम किया। १८८५ ई में उन्होंने पालमाल गजेटी के लिए समीक्षा एवं दस्टार के लिए संगीत समालोचना लिखी। वे महान् संगीत समालोचक के रुप में स्थापित हो गए। उसके वाद वे द सटर्डे रिम्यु' का समालोचक वने। उनकी समालोचना से "आवर थियटर्स इन द नाइन्टीज" के रुप में महत्वपूर्ण दस्तावेज के रुप में लण्डन के चलचित्र घरों के लिए उस समय में प्रकाशित हुई।

१८८२ ई.में शॉ ने महान् अमेरीकन लेखक हेनरी जार्ज का भाषण समाजवाद पर सुना। उन्होंने 'दासं कैपिटल' पुस्तक का अध्ययन किया और सामाजिक प्रजातंत्र संघ में सम्मिलित हो गये। १८८४ ई.में विलियम मोरिस एवं इलेनर मार्क्स के साथ वे फेवियन समाज में शामिल हो गये। शॉ, वेम्स, सिडनी, वियट्रीस फेवियन समाज के प्रमुख सदस्य थे जिनका मुख्य उद्देश्य था संवैधानिक तरीकों से समाजवाद लाना। इसी के कारण वाद में शॉ वहां की निचली सदन के सदस्य भी निर्वाचित हुए। उन लोगों ने 'लण्डन स्कूल आफ इकोनोमिक्स' की स्थापना की और शॉ ने अपनी प्रतिभा से समाज को वहुत लाभान्वित किया। १८८९ ई में शॉ ने 'फेवियन एजेन इन सोलिज' नामक पुस्तक लिखी। वाद में उन्होंने राजनीति एवं शिक्षा के महत्त्व और संवैधानिक सुधार पर वहुत कुछ लिखा। सामाजिक क्राति एवं समाज में नारियों की भूमिका पर भी उन्होंने वहुत कुछ लिखा। शॉ 'क्रियटिव रिभोल्युशन' के महान् प्रवर्तक थे। उनकी किताव 'मैन एण्ड सुपर मैन' की नायिका एनन मानवीय शक्ति की ज्वलंत उदाहरण है। इनकी नायिकाएं मानवीय शक्ति से वहुत ही सन्निकट है। मिसेज जार्ज 'गेटिंगमेरिज' में एवं 'मेजर वारवारा' में जोन्स की भावनायें क्रान्ति की भूख जगाती है।

वर्नाड शॉ भौतिकवादी थे। उन्हें सार्वभौमिक सत्ता एवं मृत्यु पश्चात जीवन में विश्वास नहीं था। उनकी विचारधारा में मोक्ष, स्वर्ग, नरक अपनी लौकिक समाजवाद (सेक्युलर

समाजवाद) के लिए जरुरी था। सामुहिक मोक्ष उनके लिए पृथ्वी पर स्वर्ग के समान था। मेजर बारबारा का मुख्य विषय मोक्ष है। 'एन्डोकल्स एण्ड द लायन' में उन्होंने रोम के शहीदों का साम्राज्यवाद का वर्णनकिया है। 'सेन्टजोन' में उन्होंने अपना विरोध मध्ययुगीन चर्च के प्रति दर्शाया है। ऐन्डोकल्स एण्ड द लायन में शाँ ने अपना विरोध क्रिश्चयन सिद्धांत एवं उसकी त्रुटियों के प्रति दर्शाया है। मोक्ष के प्रति जो सिद्धान्त है उसका उनके विचार में भगवान अपने आप में पूर्णता एवं समाप्ति का नाम नहीं बल्कि यह उद्देश्य का नाम है जिसे मानव जाति हमेशा पाने के लिए प्रयत्न करता है।

शाँ ने अपनी समालोचना 'द सटरडे रिभ्यु' में लण्डन के शौकीन थियेटर का पर्दाफास किया है। उनीसवीं शती के प्रारंभ में चलचित्र और अभिनय आनंद का मुख्य श्रोत माना जाता था। शाँ का सर्वप्रथम नाटक था 'विडोअर्स हाउस' जो १८९२ ई. में स्वतन्त्र छविगृह में मंचित हुआ परन्तु सेंन्सर ने इसे प्रतिवन्धित कर दिया। पुस्तक के आर्म्स एण्ड द मैन, कैनडिडा, द डेभिल्स डिसिपल भावों को जागृत करनेवाली है। ऐतिहासिक अभिनय के रुप में उन्होंने 'द मैन अफ डेस्टिनी, सीजर एवं क्लेओपात्रा' लिखा है। वे देश विदेश घूमे और संसार के महान् हस्तियों से साक्षत्कार लिया है।

१८९८ ई. में शाँ चारलोर पायु के साथ विवाह के वंधन में बंध गए। वे वहुत रोमांटिक विचारधार के व्यक्ति थे । प्रथम विश्वयुद्ध के वाद उनकी पुस्तकें व्यवसायिक रुप में बहुत सफल हुई। सफलताएं उनकी कदम चुमने लगी। 'मैन एण्ड सुपरमैन, द डाक्टर्स डेलिमा, द मेजर बारवारा एवं पिमेलियन' मिल का पत्थर सावित हुई। प्रथम विश्वयुद्ध के परिणाम से वे बहुत मर्माहत हुए। इसके लिए उन्होंने इंगलैण्ड और जर्मनी दोनों को दोषी ठहराया। यही कारण था कि हर्टब्रेक हाउस में उन्होंने समाज बर्बादी के कगार पर खडा है इसका वर्णन किया। उनकी अंतिम कृतियां राजनैतिक विषयों पर लिखी गई है।उनमें प्रस्तुत है द एप्पल कार्टस आंन द राक्स, द सिम्पलटन आफ अनइक्सपेक्टेड आइजल्स गुडकिंग चार्ल्स गोल्डेन डेज इत्यादि। हास्य अनेक नाटक का मुख्य विषय था। उनकी पुस्तकों मे विचारों का हास्य , बुद्धिमानी, एवं रसिकता का भंडार है। १९२५ ई. में उनकी प्रसिद्धि एक कुशल विद्वान एवं अभिनयकार के रुप में हुई और उन्हे नोवल पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। काल के मजबूत पंजो से भला कौन वचा है। सेन्टलारेंस में ४ नवम्वर १९५० में ९४ वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया।

राजदेव राय

(व्याख्याता)

ललितपुर महाविद्यालय, कुपनटोल

काठमाण्डू।

(धुस्वां सायमी जी का दो किश्तों में बटे इस लघु उपन्यास का पहला भाग हम पहले अंक में दे चुके हैं। बांकी का अन्तिम भाग इस अंक में प्रस्तुत है।)

एक चिथड़ा आदमी

लघु-उपन्यास

कभी विचार तरंगित होता है। वह एक आदमी जो एक नहीं रह गया था, अब एकदम सिकुड गया है। उसका सपना सिमट गया है। मेरे ही वृत्त परिधि पर सदा जागते-सोते घूम रहा है। यही वजह है कि उसके स्वभाव को उसकी सीमावन्धता को उसमें से काट कर हटाने के लिए मैं जान वुझ कर उससे अलगाव करने में जूट जाती हूं। मुझ को इसके लिए जूझना पडता है। उसी दिन, मैं, विना संकल्प से न हटे।

कुछ दोस्त पहुँच गए कुछ ने ताने भी दिए पर मैं अविचलित रही। मैं उसकी श्रद्धा करती हूं। उसकी पूजा करती हूँ। वह समझता नहीं। वह सोचता है कि श्रद्धा और पूजा दे-कर मैंने उसे पत्थर का भगवान वनाना चाहा। वह क्या जाने। मेरे प्यार की परिभाषा यही है। मेरी चाहत की पहचान यही है। मैं प्यार को देहगाथा के दायरे में बांधना नहीं चाहती हूँ। मुझे लगता है वह भी प्यार को इससे अलग मानता है। वरना उस दिन....... नहीं नहीं मैं उस दिन को भूल जाना चाहती हूँ। उस दिन को सदा याद रखना चाहती हूँ। आखिर मैंने खुल कर अपने प्यार को जता दिया

वजह उससे भेंट न हो जाए इसलिए दोस्तों के साथ सैर-सपाटे के लिए चली गयी। यह जान-कर कि यह उसको पसन्द नहीं है और शायद वह मुझसे नफरत करने लगे। मैं नहीं भूल सकती वह दिन।

आकाश में बादल हैं। चारो तरफ पहाडियां हैं। दूर नीचे एक नदी वह रही है। कभी कभी बूंदा-बांदी भी हो जाती है। पर मैं उससे दूरी बना-कर एकदम नजदीक हो जाती हूं। सब अपने में मस्त हैं। मैं भीड में अकेली हो गई हूँ। चुपचाप भगवती मन्दिर के अन्दर चली जाती हूं। मैं दोस्तों से घिरी नहीं हूं। मैंने भगवती से एक ही वरदान चाहा। मैं उसके काम में साथ दे सकूं। मेरे कारण वह अपने कार्यपथ के

था। पर मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। इसीलिए तो घवराहट में वेचैन होकर हम जव साथ निकलने लगे तो उससे पहले मैं निकली मानों कि मैं भाग रही हूँ। मुझे अभी भी याद है। जव मैं प्रांगण में पहुँची तो मुझे अपनी भूल का एहसास हो गया था। मैं भौचक्की सी खडी रह गई थी। उसके अपने मुझे देख रहे थे। और स्वयं वह उलझन में पड गया था। उसके चेहरे पर एक वेचैनी थी लोगों ने क्या सोचा होगा। विना कोई अपराध किए वहअपनों के कटहरे में खडा था। यह उसकी आदत है। भूल किए बिना भय खाता है। लगता है वह सदा अपने को अर्थी पर रख अपना जीवन जीता है।

भय !

यह उसके जीवन का एक अंग है। वह भय खाता है। सदा खुद से भी भागता रहता है। पर मैं, उसे भगोडा नहीं समझती। वह भागता है। हां भय से। किसी को चोट पहुँचाने के डर से। वह चोट पहुँचाने से भागता है। वह चोट खाया ऐसा आदमीं है जो दूसरों को चोट न देने की कोशिश में भागता है। मैं अब जानती हूं। उसका भटकना, उसका भागना कोई अपराध नहीं। पाप नहीं। शायद पापी या अपराधी होता तो भागता नहीं। भय नहीं खाता। बदलती दुनियां में सब परिभाषाएं बदल गयी हैं। किसी की जिन्दगी में रात कभी नहीं होती तो कोई ऐसा आदमी भी होता है जिसको सवेरे के प्रकाश में नए सूर्य में भी अंधेरा ही मिलता है। उजाला उसके लिए सदा अस्त हो गया होता है।

वह। मेरा वह। सबका वह। अपने लिए ऐसा ही सोचता है। शायद समझता भी है। हां एक बात भूली जा रही थी। वह सबसे स्नेह रखता है। सब उसकी प्रशंसा करते हैं। मुझे इससे जलन होती है। इर्ष्या का भाव आ जाता है। पर मैं जानती हूं, वह मुझसे .....स्नेह ही नहीं प्यार और श्रद्धा भी करता है। अपना एक अभिन्न अंग, आत्मा ....आदि आदि मानता है। इसके कारण लोग मेरे अपने ही लोग मुझसे जलते हैं, और साजिश करते हैं। कोई ऐसी अवस्था बने जिससे हमारे रिश्तों में तनाव आ जाए। हमारे व्यक्तित्व में टकराव हो जाए और अस्तित्व के चिथडे-चिथडे हो जाए।

विचार, इसका प्रवाह जारी रहा। सारे तट टूट गये थे। पहाडियों से टकरा कर वातावरण में उसकी आवाज गूंजित हो रही थी। प्रवाह और गूंजन के साथ गहराई और अधिक गहरी होकर अंधेरी खाई में डूबती जा रही थी। मैं नहीं चाहती थी कि एक दीवार विचारों को रोकने, बाधा देने, तोडने, उखाडने को खडा हो जाए।

फिर

एकाएक ऐसा लगा आदमी के चाहने या न चाहने से कुछ नहीं होता। हालात खेल-खेल देती है। आदमी को तमाशा बना देती है। वह भी हालात के हाथ परिस्थिति की पकड में एक व्यूह-चक्र में पडा अभिमन्यू हो गया था। एक रेत में उलझी मछली बन गया है। अन्तर इतना है, और, हालात को ठीक बनाने के लिए जुझते हैं, वह भागता है। सच में वह भगोडा है। वह हालात से जूझने का संकल्प क्यों नहीं करता। क्यों नहीं मुझको लतियाता है। वह चाहे तो कुछ भी करने में समर्थ है। पर करता नहीं। कायर है। बुजदिल है।........। हिजडा है।

नही

वह अपने को प्रतीक्षा में रखता है। यातना व्यथा सब सहता है। वह अजीब सा आदमी है। सोचता है। वह ऐसा प्यासा है जिसके पास पानी को आना ही पडेगा। पर उसकी प्यास ऐसी है समुद्र के पानी से भी नहीं बुझ सकती। प्यास बुझाने में नहीं, प्यास बढाने में वह उत्साहित होता है। आनन्द मनाता है। हां कभी-कभी मुझे लगता है आदमी समस्या के समाधान करने की दौड में अधिक समस्याएं खडी कर लेता है। इसलिए आदमी के पास कोई विकल्प नहीं। प्रतीक्षा। इन्तजार। पर यह मैं नहीं कर सकती। मैं सडी मछली बनना नहीं चाहती। उसको भी बनाना नहीं चाहती। फिर भी उसके ऐसे तेवर मुझे अच्छे नहीं लगते और तब मेरी श्रद्धा मेरा प्यार, घृणा

में और नफरत में वदलने को तैयार हो जाता है। मैं इसको रोकती हूँ पर कब तक रोक पाउंगी ? मुझे खुद पर से भी अब तो विश्वास टूटने लगा है। कभी-कभी तो अपने प्रति, उसके, सबके प्रति मेरे अन्दर खीझ होने लगती है , क्षोभ होने लगता है। घबरा कर घर के आंगन में आ जाती हूँ। सीढी चढती हूँ। एक कदम आगे सडक है और जो सडक मेरे पावों को उसके घर तक ले जाने को तैयार है। उत्सुक है। चंचल है। पर मैं अपनी चाहत को थाम लेती हूँ। पावों को जबरदस्ती मोड कर छत पर चली जाती हूँ। हादसे की हकीकत से घबरा जाती हूं। शान्त होने की कोशिश करती हूँ।

आकाश !

सर के उपर खुला आकाश है। मेरे विचारों को पहचान वह फैला आकाश अपने को थका-कर सिकुडता जाता है। मैं थकित आकाश को देखने लगी। उसकी थकान भरी शून्यता से कुछ पल के लिए मेरे विचार, मेरी भावना में भी शून्यता फैल गयी है। मुझे नींद सी आने लगी। दिन भी धीरे-धीरे सोने की तैयारी में लग चुका था। धूप खेतों से गुजर-कर पहाड की चोटियों में उलझी पडी थी। .....मुझ को उससे नफरत ही करनी होगी। मुझे उससे प्यार है ..... वह चीथडा आदमी नहीं है ..... वह टूटा विम्ब नहीं है ..... वह यादों का अवशेष नहीं है ...... वह किसी शिलाखण्ड का अभिलेख नहीं है ...... पर मुझसे संभाला नहीं जाता ..... यह आदमी कैसा है ......। आकाश की शून्यता
रात के अंधेरेपन से भरने लगी थी। मेरी शून्यता को फिर उसकी याद भरने चली आयी। एक खटका सा हुआ। देखा नानी चाय लेकर मेरे सामने खडी थी मेरे विचारों को मेरे अन्दर के भूकम्प की ज्वालामुखी को वह जान सके इस भय से मैं उनसे अपनी नज़र को चुराने लगी उन्होंने कुछ नहीं कहा। थोडी देर खडी रही फिर चुपचाप जाने लगी। फिर रुक गयी और लौट आयी। पता नहीं क्या हुआ नानीको। मेरे साथ बैठ गयी। एकाएक अपनी गोद में मेरे सिर को रख दिया और तब मैंने पाया नानी की आंखे आंसुओं से भरे थे। मेरी आखों में आंसू छलछला उठे। नानी ने दर्द भरे स्वर में कहा "तेरे रोने से मेरी आत्मा को दुःख होता है।

नानी के ऐसा कहने पर मुझे मेरी स्वर्गीया मां की याद आई और मेरा दिल तडप उठा। प्रवाहित पानी को एक धार मिल गया मैं रोने लगी और अपने आप से कहने लगी-- मा होती तो आज मेरे उलझे विचारों को सुलझाने का मार्ग दिखा देती। पर एकाएक एक विजली चमकी और मैं ने सोचा, मां समस्या के उलझन से ही मरी थी। वह क्या मेरी मदद कर सकती ? नहीं, अपना नहीं कर सकी, बेटी का जरुर करती। मां है आखिर मेरी मां। और तब मैं अपने को रोक नहीं सकी नानी और मैं इस तरह रोने लगी मानों मां अभी-अभी मरी
है।

नानी और मैं कुछ देर वाद ही छत से नीचें उतरने लगी। सब ओर यादों की भीड थी। सभी भावनाएं शून्यता में जमने लगी। आदमी सिर्फ यादों के सहारे भावना में बहकर जी नहीं सकता। नीचे जब पहूँची, माहौल वदल चूका था। एक भीड जो दिमाग पर छा गई थी वह खो गयी। बहन भाई सबके सब घर लौट चुके थे। मेरे पापी मन को एक चीज खटक गया। मेरे साथ नानी मां उपर थी लेकिन किसी ने तलाश नहीं किया। व्यस्तता

भरी इस दुनियां में किसी को किसी के लिए समय नहीं। दुनियां से कोई उठ जाए फिर भी किसी के पास वास्ता करने का समय नहीं है। कुछ माह पहले उसकी मां मरी थी। मैं उससे मिलने गयी थी पर आश्चर्य हुआ- उस समय जब मैंने पाया कि उसकी मां की मौत पर मुझे उससे अधिक दुःख था, वह दुःखी नहीं दिखता था। पर अन्दर से दुखी अवश्य होगा। मेरी मां मरी थी तो मैं दुःखी हुई थी पर आज तो उसकी याद से दुःखी हो रही हूँ। मुझे फिर रोना आया। पता नहीं इस आंसू को क्या हो गया है। आज बार-बार बहे जा रहा है। नहीं, मुझे इस तरह भावना में नहीं बहना चाहिए। अभी जीवन जीना बांकी है। नानी के उम्र तक। एकाएक मुझे हंसी आ गयी। क्यों मैं बार-बार नानी की आइने में अपने को देखती हूँ। मां नहीं है। नानी ही मेरी मां है, और मां तो सदा बेटी के दिल की आइना होती है। वह तो पथप्रदर्शक, मसीहा सभी कुछ होती है। मां मेरी मर चुकी है। नानी मेरी मां है। नानी और मां के चेहरों में मैं उलझने लगी। वर्त्तमान और अतीत के संगम में लडखडाने लगी। न हीं मुझे अतीत में, नही वर्तमान में जीवन जीनां है।

नानी मेरा वर्तमान है और वह....हाँ वह शायद मेरा भविष्य है। मैं उससे नफरत करती हूँ। मैं उसे प्यार करती हूँ। मैं उससे भागती हूँ। मैं उसे पाना चाहती हूँ। और तब अपनी भावना से विचार से भयभीत हो, घबराकर जब सामने देखती हूँ तो वहां हम उम्र लडकी एक खडी है। बिखरे बाल, सोंच में डूबी हुई।

यह कौन है ? होगी कोई मेरे स्कूल के दिनों की सहेली। पर इस हालत में। शायद गांव से आयी होगी। उसी समय बहन और भाई कमरे में आ गए। उनके आते ही उनकी बातों से सब कुछ अतीत वर्तमान और भविष्य सब मिट गया।

अगले दिन नववर्ष आरम्भ था। मुझ से उनदोनों ने दक्षिणकाली पिकनिक ले जाने का वादा ले लिया।

पर वह चिथडा इन्सान मेरे दिल और दिमाग से मिट नहीं रहा था। फिसल नहीं रहा था। चिथडा आदमी।

नाटक

व्यक्ति विसंगत

अशेष मल्ल

(मञ्च के एक कोने में एक आदमी लेटा हुआ है, और कुछ नहीं है। व्यक्ति 'क' का प्रवेश)

व्यक्ति क:- (चलते-चलते लेटे हुए आदमी को देखता है) लाश। किसकी लाश ? (दर्शक की ओर) आप लोग कितनी देर से यहां है ? यहां लाश नहीं देखा ? किसने की हत्या ? मुझे पता है आपमें से कोई भी मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देगा ? मेरा प्रश्न ही अधुरा है। शायद अनावश्यक प्रश्न। केवल एक जिज्ञासा। चलते-चलते, राह में अचानक लाश देखने पर उठी जिज्ञासा है यह। लेकिन आश्चर्य ? क्यों कोई नहीं बोलता ? आप लोग हत्या देख-कर भी मौन क्यों हो ? किसी ने तो देखा होगा। देखने वाला नहीं बोलता, बोलने वाला नहीं देखता। सब देख ही रहे हैं।

दर्शक 'क'- देखना अपराध नहीं है।

व्यक्ति 'क'- देख कर भी न बोलना ? (क्या है ?)

दर्शक 'क'- बोल कर कुछ न होना ? (क्या है ?)

दर्शक 'ख' - आप चुप रहिए। यहां किसी ने कुछ नहीं देखा।

व्यक्ति 'क'- यह लाश भी ?

दर्शक 'ख'- हां यह लाश भी।

व्यक्ति 'क'- लेकिन आपलोग वहीं हैं और लाश यहीं है।

दर्शक 'ख'- जिस समय हत्या हुई हो सकता है हम नींद में हो।

दर्शक 'क'- हो सकता है याद ही न हो।

व्यक्ति 'क'- हो सकता है कोई कहने के पक्ष में भी न हो।

(व्यक्ति ख और ग काप्रवेश)

ख- क्या है ?

ग- इनसान।

व्यक्ति क- नहीं लाश।

ख- कैसे मरा यह ?

व्यक्ति क:- हो सकता है इसकी हत्या की गई हो।

ग- क्यों ?

व्यक्ति'क'- होगा कोई कारण।

ख- कौन है यह ?

व्यक्ति'क'- होगा कोई।

ख- आपने हत्या होते हुए देखी ?

व्यक्ति'क'- मैने नहीं, उनलोगों ने....... (दर्शकों की ओर संकेत करता है)

दर्शक'क'- यह सरासर झूठ है

ख- फिर सच क्या है ?
व्यक्ति-क'- सच, यह मृत्यु ! इसके अलावा कोइ सच नहीं।
ख- और, हत्या ?
व्यक्ति'क'- एक अनुमान ही है वस।
ग- हत्या नहीं भी हो सकती है। आत्महत्या भी तो हो सकती है।
ख- हार्ट एटेक भी हो सकता है।
व्यक्ति क- मृत्यु के वहुत से कारण हो सकते हैं। अनुसंधान का विषय है यह।
ख- अनुसन्धान का कोई अर्थ भी है ?
व्यक्ति क- शायद नहीं है।
ग- पुलिस को खवर की ?
दर्शक क- आवश्यक नहीं है।
ग- क्यों ?
व्यक्तिक- गिद्ध भूखे हैं।
ग- (लाश देखते हुए) लगता है,व्राह्मण है।
ख- हूं! नहीं नहीं, नेवार जैसा है।
व्यक्तिक- हां ? लेकिन यह व्राह्मण, नेवार, कुछ नहीं है।
ख- क्या है फिर ?
व्यक्ति क- इन्सान।
ग- कोई तो होगा इसका अपना ?
व्यक्ति क- (दर्शक की ओर देखते हुए) नहीं है कोई ?
दर्शक क- हमारी वस्ती काआदमी नहीं है।
दर्शक ख- हम नहीं पहचानते इसको।
ग- शायद कोई यात्री होगा।
ख- नौकरी की तलाश मैं निकला होगा।
ग- नौकरी न मिलने पर आत्महत्या की होगी।
ख- घर में वालवच्चे होंगे।
ग- भूखे होंगे
ख- पत्नी विधवा हो गई।
ग- कौन पालेगा अव ?
व्यक्ति क- आप लोग यहीं रहेंगे ?
ग- रहने का अर्थ ?
व्यक्ति क- मैं जा रहा हूं।
ग- कौन रोक रहा है आपको ?
व्यक्ति क- लाश अकेला पडेगा करके...।
ख-यह अव अकेला ही है, कोई नहीं है इसका।

(घ और ङ का प्रवेश)

घ- क्या हुआ है ?
ङ-लगता है कोई मर गया है।
घ- कैसे मरा होगा ?
ग- पहचानने वाला कोई नहीं।

ङ- मरा भी है या ?
व्यक्तिक- (अचम्भित हो-कर) हाँ , जिन्दा भी हो सकता है।
ङ- शराव पी के लेटा भी हो सकता है।
घ- वेहोश भी तो हो सकता है।
ख- लगता है वारिश होगी।
ग- चलो चले ? दूर पहुँचना है।
व्यक्ति क- मै भी जा रहा हूँ।
ग- जाइए।
ङ- चोट लगी होगी। अस्पताल ले चलें तो शायद वच जाए ?
ख- रास्ते में ही मर गया तो अपयश होगा।
ग- पुलिस केस हो सकता है।
ख- झमेला हो सकता है।
घ- हां यह भी है।
व्यक्तिक- लेकिन साक्षी (दर्शक की ओर दिखाते हुए) वे लोग हैं।
दर्शक क- हमने आंखें मूंद रखी है।
दर्शक ख- अंधेरा होने को है सोने जा रहे हैं।
ङ- लगता है थोडी जान वांकी है, अस्पताल ले जाना चाहिए।
घ- तुम्हें क्यों तकलीफ हो रही है ?
ङ- मेरा भाई भी तो हो सकता है।
घ- शक्ल देखी ? (दोनों देखते हैं)
ड.- अरे ! यह तो मेरा भाई जैसा ही है।
घ- फिर तो चलो चलो जल्दी उठाओ ले चलें अस्प्ताल (दोनों उठाने की कोशिश - करते हैं लेकिन छोड देते हैं)
ङ- धत ! कितनी मिलती है शकल ?
घ- हूवहू भाई की तरह।
ङ- कैसे, विल्कुल ही शक्ल मिलती है।
ख- चलना नहीं है ?
ग- चलना है, लेकिन किधर ? समय भी तो काटना है।
ख- मूंगफली- सूंगफली कुछ नहीं है ? चलो न खरीदें।
ग- वारिश होने लगी है, लगता है सभी दुकानें वन्द हो गई हैं।
घ- एक वार हमारे मुहल्ले में ऐसा ही केस हुआ था घनश्याम का।
ङ- वह तो वच गया था।
घ- समय पर ही अस्पताल ले गये थे, इसलिए।
ङ- पुलिस समय पर ही पुहंची थी न।
घ- घनश्याम मन्त्री जी का भतिजा जो था।
ङ- शुक्र है, वचा।
घ- आजकल तो कैसा मोटा हो रहा है।
ङ- कस्टम में जो है।
घ- घनश्याम ने एक और मकान बनाने की जमीन ली है न ?
ङ- पता नहीं।

घ- कहीं यह सांस तो नहीं ले रहा ?
ङ- वह....नहीं केवल भ्रम हो रहा है।
ख- सिगरेट है ?
ग- माचिस नहीं है।
व्यक्ति क- मृत्यु कितनी बेइमान होती है। सबको धोखा दे जाती है।
ख- इसका कोई नहीं है ?
ग- इसका यह भी अपना नहीं है।
ख- मुझे कभी-कभी डर लगता है। मैं भी कभी इसी तरह मर गया तो ?
ङ- जबतक मौत नहीं आती कोई नहीं मरता। यह भी नहीं मरेगा। अभी तक नहीं मरा है जाने कितनी देर और जीएगा यह ?
ख- जाने कितने सपने रहे होंगे इसके ?
ग- हमारे जैसे ही।
घ- राधेश्याम अभीतक नहीं आया।
ङ- वैसे, कहां गया होगा ?
घ- अभीतक तो आ जाना चाहिए था।
ङ- कहीं रास्ते में इसी तरह मर तो नहीं गया ?
घ- इतनी जल्दी नहीं मरेगा वह, लम्बी उम्र है।
ख- कितना बजा है ? देखो तो।
ग- तीन
ख- शाम तो हुई नहीं है।
ग- बादल छाने से अंधेरा जैसा लग रहा है (च का प्रवेश)
च- आप लोगों ने श्याम प्रसाद को देखा ?
ग- कौन श्याम प्रसाद ?
घ- यही तो नहीं है ?

(च देखता है और घबराने लगता है)

च- हां...यही है श्याम प्रसाद। क्या हुआ श्याम को ? किसने पीटा ? किसने मारा ? (च रूआंसा हो जाता है)
व्यक्ति क- अब रोने-कलपने से कोई फायदा नहीं।
च- (रोते हुए) श्याम ? किसने मारा तुमको ?
घ- मौत सभी की होती है। एकदिन सभी को मरना पडता है
ङ- हमें भी।
ग- धैर्य करो।
च- कलतक तो हम साथ थे (रोता है) श्याम ? मेरे श्याम।

(श्याम का प्रवेश, उसको देख-कर च अचम्भित हो जाता है)

श्याम- क्या हुआ ?
च- तुम ? श्याम। तुम जिन्दा हो ? फिर यह कौन है ?
श्याम - कौन ?
च- (हंसता है) मैं तो इसे तुम सोच-कर ...(सभी हसते हैं)
श्याम- मुझे जिन्दा ही मार दिया।
च- (खुश होते हुए) भाग्यवान हो। तुम्हारी उम्र बढी।

घ- कभी-कभी ऐसा ही होता है।
च- अगर सच में वह लाश तुम्हारी होती तो ...।
श्याम- अबतक राख हो चुकी होती।
घ- चलें, बारिश होगी फिर।
ङ- चलो...(घ और ङ जाते हैं)
श्याम- यह कैसे हुआ ?
च- पता नहीं।
श्याम- कौन है यह ?
च- पता नहीं।
श्याम- कैसे कल्पना की कि मैं हूँ ?
च- अन्दाज से
ग- प्यास लग रही है (दर्शक की ओर) पानी दीजिए न एक ग्लास।
ख- चलो रास्ते में ही पियेंगे।
ग- चलो फिर। आज भी अच्छी तरह से समय बीता ।
ख- किधर चलना है।
ग- कहीं भी चलो।
ख- वहीं ?
ग- ठीक है।

(ख और ग जाते है) ।

च- सुबह से तुम्हें ढुंढ रहा हूँ।
श्याम- कभी कभी खो जाने का मन करता है।
च- रात को पार्टी है। और लोग भी आयेंगे।
श्याम- मैं पीना छोड़ चुका हूँ।
च- कोई बात नहीं, जमघट ही तो है।
श्याम- चलो।

(दोनों चले जाते हैं)

व्यक्ति क- क्या देखा ?
दर्शक क- नाटक।
व्यक्ति क- और
दर्शक ख- नाटक
व्यक्ति क- केवल नाटक

(व्यक्ति 'क' हंसते हुए जाता है, कुछ पल के लिए मञ्च सुनसान हो जाता है। थोडी देर के बाद मञ्च की एक ओर सोये से व्यक्ति में हरकत होने लगती है, उठता है ओर दर्शक की ओर देखता है)

व्यक्ति- क्या हुआ मुझे ? कौन हूँ मैं ? कहां हूँ मैं ? यहीं तो हूँ मैं, क्यों अंधेरा है चारों ओर ...बत्ती जलाओ ,जलाओ बत्ती। क्यों अंधेरा है ... मै कौन हूँ ? कौन हूँ ?
(चिल्लाते-चिल्लाते फिर गिर पडता है।
व्यक्ति 'क' का प्रवेश)
व्यक्ति क- लगता है अब कि यह सचमुच ही मर गया होगा।
(कोई नहीं बोलता, पर्दा गिर जाता है।

मूल:: नेपाली
अनुवाद- प्रमिला उप्रेती

कहानी

"शिकंजे"

–डा. सुरेन्द्र मोहन प्रसाद

"साओन का महीना पवन करे सोर "। "हम त जवई भोला नाथ कामर ले के तोर" । मंदिर पोखर में जल क्रीडा करते हुए लडकों के होंठों पर यह गीत सस्वर मुखर था ।

मंदिर पोखर-एक अवशेष भर । उथला-उथला सा छितराया भादों में डुवाह हो जाता हैं। जमोट तक दिखाई नहीं देता। मंदिर के कंगूरे शेप हैं । धूप में चमकते हैं।असली नेपाली सोने का चक्र लगा रखा है। चहारदीवारी ढह गयी है। उसकी जगह वघनोंचा के झाडों ने ले लिया है । जिनमें सारे दिन कचवच्चिया कच-कच करती रहती है।

पोखर के भिंडा पर, पाकड की जड परं वैठा, तने से देह टिकाए वावूलाल की भूखी आखें सव देख रही हैं ।....होरिलवा ने नया गमछा, गेरुआ रंग की गंजी ओर जांघिया खरीदी है । पाकड की निचली डाल पर चौपेत कर रखी हुई है। नहाकर पहनेगा। कामर वाला गीत उसी का अविष्कार है । ...भटठा में काम करता है। सावन-भादो में भटठा वाले एडवान्स भी तो दे देते हैं। उसी का पैसा होगा ...पैसा क्यों न वचेगा ? हर दो-तीन साल पर अपनी जनानी को मार-पीट कर वेलगा देता है । "जोरु न जीता, अल्ला मिआ से नाता" । फिर कहीं से किसी को लाकर विठा लेगा...लफंगा है लफंगा ।.....कामर लेकर जाने से पाप थोडे ही धुल जाएगा ।

भउचनमा पास जाकर वैठ गया है । वह भउचनमा की रंगत पहचानता है । उसे खइनी चाहिए । हथेली में खईनी सोंट कर रखी सो वैसे ही पडी है। मलने का सुरता ही नहीं रहा है। असल भाव से खइनी मलना शुरु करता है....पाप धुले या न धुले इसे कौन जानता है। मुदा वावा वैदय नाथ पर जल ढालने से आत्मा को संतोप तो होता है। मिजाज टन्न हो जाता होगा। साल भर रोग-विरोग तो दूर रहेगा ...।

हथेली पर चांटी मार कर उसने दूसरी हथेली पर फेरा बदली की और एक चुटकी उठाकर उसकी बढी हुई हथेली पर डाल दिया । ......चालीस कोस का रास्ता है। लोग सुल्तानगंज में वावा अजगेबीनाथ का दर्शन कर गंगाजल भरते हैं। कामर को एक बार कन्धा पर उठा लेने पर नीचे नहीं रखना होता है । वावा धाम पहुंच कर ही भुंइयां पर रखाएगा ।...होरिलवा भींगी धोती को पाकड की डाली में खूंट वांध कर पसारते हुए कह रहा है -"पूरे के पूरे दू सौ लगेगा। वारह रुपैया त सूल्तान के किराए है। फेनू खाए-पीए के अलग से । उहां पर पंडा - परसादी में भी तो खरच है" भउचनमा खूव

जोरों से सिर हिलाकर कहता है- "होरिल भाई। उहां का इलाइची दाना में असली इलाइची होता है। हमार सव ला परसादी लेले आइएगा न। होरिल हंस देता है मानो कह रहा हो-"धततेरी की। वोला भी तो इलाइची दाना के लिए"। वोलता है-"अरे भाई, पेडा लायेंगे पेडा। उहां का पेडा वडा नामी होता है" दीपन तिवारी चाय वाले के वेंच पर पालथी मार कर वैठे रहते हैं, उन्हें फोकट में चाय चाहिए। ग्राहकों से फराजत होने पर अनन्त साह एक प्याली उन्हें पिला ही देता है। वहीं से वे चिल्लाकार पूछते हैं- "की, रे। चालिस कोस का चलनाइ पार लग जाएगा, होरिल ?"होरिलवा टटककरे वोली में जवाब दागता है -"ववाजी, उ त आदमी थोडे चलता है। भोला वावा पार लगाते हैं"

सवकी वोली वन्द हो जाती है। सभी इस जवाब को भीतर ही भीतर गुन रहे हैं।

वाबुलाल सुलग उठता है। ...उसकी कभी नहीं सुनी भोला वावा ने। वह रोज ही नहा कर, पीपल के नीचे पडे रेलवई पत्थर वाले भोला बावा पर एक लोटा जल ढारता रहा है ....भोला वावा उसके लिए भांग खाकर "सुखला सावन भरला भादो"सोये रहे हैं। वरौनी में भेंट के साथ वनिहारी करने गया था तो बस सपरता रह गया। तीन महीने में एक बार भी जोग नहीं लगा और वचे खुचे पैसे लेकर घर लौट जाना पडा। रेलवई से तो वस-चार पांच घंटे का रास्ता था....उसने पलथी बदली। धोती चर्र से फट गयी। घुर कर देखा। खोंच लगी थी। पुरानी धोती है। आखिर कव तक साथ देगी। वस चले तो वह गेरुआ रंग की ही धोती पहने.....पर जाने का ब्योंत बैठे तब न....कहने को तो चार-पांच वैठे हैं,...... वनिहारी करते हैं। सांझ को सव लौटेंगे। आटा, चावल और कभी-कभी सगौती लाकर अपनी अपनी मउगी के हाथ में थमाकर पासीखाने चल देंगे तो रात वीते लौटते हैं। लौट कर वाजारु वोली में अपनी जनानी पर रोव झाडेगें। उसका खाना पीना चारों में वंटा है। वे सब मिलकर जुगाड करते हैं। छोटका खइनी लाकर दे देता है....वह उन्हें कभी नहीं टोकता। टोकने से तो अपना जनमा भी गाली दे बैठेगा। ....रात भर ओसारा में चटइया पर पडा-पडा वह लोक परलोक का चूर मिलाया करता है। अधरतिया में हंफनी वढ जाती है। खांसी शुरु हो जाती है। वैठे बेठे रात गुजर जाती है....

....मानचन चौकीदार का पहरु वह रात भर हांकता रहता है। उसके टोला में वह कभी कभार आ जाता है। टोकने पर हंस कर कहता है-"ओन्ने से वावूलाल कक्का का खोंकी पहरा देता है। वोलो, कभी कक्का के टोला में चोर चहरी का दाव लगा।"....अनत साह के कहने पर वह बेलपत्र पीस कर पीता था। उसी ने वताया कि भोला बाबा पर चढा हुआ बेलपत्र पीने से दमा खत्म ....उल्टे दम फूलने लगा। वडका ने डांटा भी था और वाजार के खेराती अस्पताल से मिकचर लाकर दिया था...जाडा और वरसात में हंफनी वढ जाती है। गर्मी में थोडा दम धराता है...जब तो, कोई काम भी नहीं अढाता है। सब कहते हैं -तोहर चार गोराम लछमन भरत सत्रोघन हओ। राजा दशरथ अइसन परल रह "।.....राजा दशरथ का दमा था या नहीं यह बाबूलाल नहीं जानता पर उसका बडा बेटा कहता है- "खा आउर परल रह।"

..... मुदइया मन है जो पडा रहना ही नहीं चाहता। मेहरारु के मरते ही घर न जाने कैसा हो गया। अब पुतोह सब का राज है। इसलिए वह मंदिर पर सारे दिन बैठा रहता है ...इ कोई जिन्दगी है। बिना काम के जिन्दगी....मरदे न त बरदे"। बेकार मर्द और बूढा बैल कसाई का होता है। उसे तो कसाई के हाथ नहीं बेचा किसी ने। दो जून खाना तो देते ही हैं ....

उपर की डाल पर कौआ कांव-कांव कर रहा है। साले को किसी का बैठना भी नहीं सुहाता। भागे बच गया नहीं तो उसने तो टिका के बीट किया था। दुपहरिया होते ही मरद लोग मंदिर के चबूतरे पर चलदेते हैं। घाट छोडना होगा।

...अब जनानी लोग निहाएगा। उ लोग का बेलंगन नहीं होना चाहिए फकरा रोज अनन्त साव बोलता है। उसकी पुतोह इसी बेला खाना लेकर आती है। उसके साथ और औरतें भी आती हैं पीछियारी टोले की। अब एक घंटा अनत साह का पोता दूकान देखेगा। अनत साह अपनी थाली लेकर मंदिर के चबूतरे पर चला जाता है। ...

....उसका भी खाना लेकर मंझली आती होगी। घुटनों पर हाथों का जोर लगाकर वह उठा और चबूतरे पर चला गया। उतरवारी चबूतरेपर इस समय छांह रहती है। जब से मंदिर पर चापाकल लगा है तब से लोहार पटटी के मरद लोग भी अपनी थाली यहीं ले आते हैं। खा-पीकर चापाकल में थाली धोकर घर को यहीं से आवाज देते हैं और कोई बाल बच्चा आकर थाली ले जाता है।

.....मझली खाना ले आयी है। बिना बोले वह थाली और लोटा सामने चबूतरे पर रख देती है। लोटे में पानी नहीं है। उसे खुद जाकर चापाकल से भरकर लाना होगा। मंझली अपना दउडा उठाकर माथे पर रखती है। वह पतोही में पक्की सडक पर जाकर साग सब्जी बेचेगी। फिर सांझ को लौटेगी।....आज मेहरारु होती तो पानी लाकर सामने रखती। थाली उठाकर ले जा कर मांज लेती...दम फूलने पर पीठ सहलाती .....एक दिन ऐसा था कि भुरुकवा उगते ही वह कुदाल चलाना शुरु करता तो किरण फूटते-फूटते चार-पांच कटठा तामकोड कर रख देता था। फिर पनपिआई खाकर हरवाही करने चला जाता। मांथा पर सूरज हो जाता तो इसी पाकर के नीचे सुस्ता कर यहीं पोखर में नहाता था और अंगोछा पहन कर भींगी धोती लिए घर लौटता था। उस समय छोटका चार-पांच बरस का था। वह दौडता हुआ आता था तो उसके डांरा का झुनझुन्ना झुन्न-झुन्न बोलता था। मेहरारु कुंए से बाल्टी भर पानी खींच लाती और वह छोटका के साथ ओसारा पर खाता। छोटका को रह रह कर गारा लगता था। उसको घोटें-घोटें पानी चाहिए। लोटा मुंह में नहीं सम्हरता था तो उसकी मां चुल्लू से पानी पिला पिला कर गारा छुडाती थी

.....अब छोटका ट्रक पर काम करता है। रात को लौटता है तो भूत बना रहता है। गयी रात वह कुंए पर नहाता है, तब खाता है। वह भी नशा करता है। रात को घोघिया-घोघिया कर बोलता है...कमाने वाले चार-चार और पैसा एक भी दिखाई नहीं देता। वह तो अकेला था और ये तो चार हैं.....अभी तक घर के अलावा बारी-झाडी के लिए भी एक धुर जमीन

नहीं हो पायी, माल मवेशी के लिए तो सिहन्ता लगा रह गया। एक पाठी भी नहीं पोस पाया। .....मुखिया उसको फुसलाता था -"सरकारी करजा ले लो। हम दिलवा देंगे।" भगवान की बडी कृपा थी जो वह चंगुल में नहीं फंसा।...... करजा के नाम से उसको होलदिली होने लगती है। घुसकुनमा के जन्म के वखत भोला साह से पांच सेर चाउर लिया था। पैंचा पर था। सोचा था धनकटनी के बाद चुका देगा। भादों में ऐसा पानी आया कि उसी वख्त रुपोली वालों ने अपना गांव वचाने के लिए गण्डक वाला वांध काट दिया जिससे सारे गांव में पानी रेल गया। बाल वच्चा सबको लेकर मंदिर के ऊंचास पर सबको जाना पडा . .धान की तो फसल ही गल गयी। मुदा गांव भी तो निचास पर है। पानी आता है तो निकलने का रास्ता ही नहीं।.....भोला साह का पैंचा डेढी में बदल गया और डेढी की नकदी हो गयी। वैशाख आते-आते साव जी ने सधाने के लिए सारे दिन अफार तोडवाया। वाल वच्चे सभी ने रव्वी की कमैनी, पिटिआ की तव जाकर सधा। कई दिन तो भूंजा फांक कर रहना पडा था।. ...चन्दर ने भी तो सरकारी करजा लिया था। निशान लगाया सौ रुपए पर और घर पहुंच कर शेष रहा पचास। वेचारा कपार पीट कर रह गया। रात को निशा खाकर मुखिया और उसके खानदान वालों को गाली पढता रहा। दूसरे ही साल उसकी गाय नीलाम हो गयी और नीलाम खरीदी मुखिया ने।...खाने पर मक्खी भिनकने लगेगी पानी ले आना चाहिए धूप वडी टेस है। वडी तापिश है। नंगे बदन पर लूत्ती जैसी लगती है। अंगोछा ओढ कर पानी लाना होगा...खा पीकर थाली मांज कर रखना है। यह फूलवाला लोटा उसको ससुराल से मिला था। कन्दे पर की धारी मांजते-मांजते चिकनी हो गयी है, लोटे का भीतरी चमचम करता है। वह पूरी हथेली घुसाकर मांजता है। अब साला इतना फैल लोटा कहाँ मिलेगा। वेटा लोग के पास है...भुचकुन्नी। मुश्किल से चार अंगुली ही घुस पाती है। मंझली आएगी तो लोटा थाली ले जाएगी। वह आज देर से जाएगा। रह रह कर होरिलवा की गेरुआ रंग की गंजी आंखों में कोंह जाती है। ...मंझली आज किचकिच करेगी। उसे थाली पहुंचा देनी चाहिए...जाने दो आज उठने का मन नहीं हो रहा है...वह कोई जवाव नहीं देता। नहीं अडाता है तो खांसना शुरु कर देता है-खों...खों

चवूतरे पर ठाकुर जी की दिवाडी के सामने अंगोछा विछाकर दीपन तिवारी लेटे हैं। चिल्लाकर वोलते हैं- "रे बवुललवा, ओन्ने" जाके थूक खखार फेंक। ई देवथान हय। अपने जानते वह इधर कभी नहीं थूकता। घोंट जाता है। देह फरहर रहने पर उठकर वाहर चला जाता है। ...

...ई. दीनपन तिवारी...अपना घर दुआर छोडकर सारा दिन यहीं अंगोरते रहते हैं। सबसे कहते रहते हैं। -"भगवान के चढावा चढाओं तव कल्याण होगा"...."सरग और नरक...उसका मन पिच्च से थुकने को होता है। पर वह घोंट जाता है। भगवान की मुर्ति के नाम पर बस लछमन जी हैं। रामजी और सीताजी को चोर चुराकर ले गए। पीतल की मुर्ति थी। लछमन जी की वांह भी छैनी से काट कर ले गए। फिर भी लोक चौकठ के भीतर फूल पत्ती और एक दो पैसा फेंक देते हैं। अगनी, रोज पांच पैसा चढाती है। उसका दुलहा रेलवई में चलती

गाडी में खाना पकाता है। अगनी आती है तो दीपन तिवारी उसकों चराणामृत के लिए जरुर पूछते हैं।

....सांझ होगी और घंटी डुलाकर, सव वटोर कर दीपन तिवारी घर चले जाते है मंदिर का पल्ला ओढगा देते हैं। वहां है ही क्या जो चोर चहरी आवे। ....दीपन तिवारी गाँजा भी पीते हैं। जव कभी ढुन्मुनमा कहीं लम्वा हाथ मार कर गाव लौटता है तो चार पांच दिन रमन चमन रहता है। फिर दफादार-पुलिस उसको पकड कर ले जाती है। दीपन तिवारी कहते हैं कि उसको सजा हो ही नहीं सकती सत्यनारायण भगवान की पूजा का प्रताप है। पर साल दीपन तिवारी के पोटासी में आकर ढुन्दुनमा ने सत्यनारायण भगवान की पूजा की थी और सारे गांव को न्योता था ....उसने भी शीतल, प्रसाद और चुरमा खाया था...उस रात उसका दमा वढ गया था...

उसके मनमें भी सरता लगा है कि वह भी कभी ऐंसी पूजा करता। संक्षेप में ही सही पर पन्द्रह वीस रुपया तो लग ही जाएगा......साला गमछा भी तो अव पांच रुपए में आता है...। रुपयों पर सारी चिन्तना ठमक कर रहगयी ....पांच का नोट देखे एक जमाना हो गया। उसको कोई उधार पैंचा भी नहीं देगा। सभी जानते हैं कि उसका पैंचा करजी उसके वेटे चुकानें वाले नहीं। किसी को भी एक अधेला नहीं देंगे। जो कमाते हैं सब खा पीकर वरावर कर देते हैं। यहाँ तक की जात विरादरी का भी भोज नहीं दिया। कहने पर मुंह बिचका देते हैं। भात काटते हैं तो काट दें.....कौन नून सतुआ देते हैं ....अपना खटना अपना खाना,....मरने पर कंधा देने नहीं आएगा...मंजिल जाने पर सीधा चाहिए......नही चाहिए ऐसी विरादरी......

उसका वकार वन्द हो जाता है अपना वूता नहीं तो सोच कर ही क्या होगा "कापर करुं सिंगार, पिया मोर आन्हर"....

होरिलवा की टोली पूरी तैयारी के साथ मंदिर पर आ गयी है। तीन जने और हैं जो दूसरे-दूसरे गांव के हैं। एक तो मेंथुरापुर के कुइसा पासी का वेटा ही है ....उ उसको क्या कमी है....वारहो मास असमानी का पैसा वरसता है।.....सवके हाथों में एकरंगा लपेटा हुआ कामर है...चांदीवाला गोटा भी लपेटा हुआ है दोनों किनारे पर भुनभुना लगाए हैं ....चलेगा तो भुनभुन की आवाज होगी.....क्या सान से टोपी तिरछा कर पहने हैं....होरिलवा पान वाले के आइने में टोपी को फेर वदल कर वार-वार ठीक कर रहा है ...पाकेट वाली गंजी वनवाई है....झोला में और समान सव ठूसें हैं ....चाय पीकर मुंह हाथ धो रहे हैं....अभी समय है....मुझफ्फरपुर से रातवाली गाडी पकडेंगे ......लोगों की भीड जुट आयी है....कठकिंगरी ने होरिलवा को पैसा दिया है। पोते के लिए लुटकुनवाला वध्घी मंगवाएगी....अनायास वावूलाल का हाथ फेंटा पर चला जाता है...एक दसपइसहिया ही वचा है....दे दे तो शंकर भगवान पर चढा देगा होरिलवा...तीरथ जा रहा है...वेइमानी नहीं करेगा...मुदा..हंस दिया तो......चारचार वेटा का वाप और एक दो रुपैया का जोगार नहीं....मंझली भी तो पताही से नहीं लौट रहीं.....न हो एक वार मांग कर देखता......साइद दे ही दे.....होरिलवा टहकार वोली में वोल लगाता है "वो...ल...व...म.... सारे लडके वच्चे दुहराते हैं-वोलवम। उसका मन उपर नीचे होने लगा है। लगता है

भीतर से कुछ फूटकर वाहर हो जाएगा। ऐसा भितरिया घाव जो जन्मजन्मान्तर से उसके भीतर पक रहा है। मन होता है ...वह भी वच्चों की तरह जोर से आवाज लगाए "वोलवम"आवाज ही नहीं निकलती। लोग वाग क्या सोचेंगे-वूढवा से अव वर्दासत नहीं हो रहा है। इन लोगों का उत्साह उसके कलेजे को मथने लगा है। पैर अनजाने पीछे घीसकते जा रहे हैं-घर की ओर...एक हाथ में थाली लोटा सम्हाले वह घर की ओर घिसकने लगता है.....क्या होगा देखकर....देखना था सो देख लिया....देखने से मन और भी दुखाता है.....जिसको साधन है......समरथ है वही वोलवम् जाएगा....मन को लाख वुझाए मन समझने को तैयार ही नहीं है। मवाई हुई वांस की करची हाथ छोडते ही फुनगी छुनें लगती है...इसको तोडना ही होगा....फट्टाक से। घर का ओसारा उसे जैसे न्योता दे रहा है। यहीं पर हलुआई के चुल्हे जैसी गरमाई मिलती है......सुसुम-सुसुम सेक। कोने में गुठिआई हुई उसकी चटइआ खडी है....उसकी भी कमर टेढी हो गयी है.....वह भी उसी की तरह झुक गयी है। लगता है वह कुटेम आ गया है। वडकी पुतोह निर्भीक सी टांग पसारे वैठी है। छोटकी एकाग्र होकर उसके वालों से जुंए निकाल-निकाल उसकी हथेली पर रखती जा रही है। पहले छोटकी की नजर पडती है दोनों सकपका कर वडवडाती हुई अंगई में चली जाती है। कुवेला में लेटना अजगुत सा लगता है पर उसको खडे होने की शक्ति नहीं....मन इतना थक गया है कि हँफनी वढती जा रही है। चटाई पसार कर उसने पुआल वाला गेरुआ सिरहाने लगा लिया है....तनि दम पच जाए तो उठेगा.... न होगा तो दुअरे पर खरहरा लगा लेगा।.....दम सम्हार में नहीं आ रही है ......खांसी नहीं हो रही है .....केवल हँफनी वढती जा रही है....अपनी मेहरी होती तो इस तरह देखकर जरुर टोकती-पुछती। पतोहुओं को क्या फिक्र शायद जाता चला रही है आंगनमें....उसकी घरघराहट उसकी पीठ में सुनाई देती है.....सांझ और वढती जा रही है....उठकर वैठने का साहस न हो रहा है....कोई आकर जवर्दस्ती उठाकर वैठा देता ....पीठ दवा देता.....तो....दवाने वाली तो फरदो पर चिता चढ गयी ....उसकी साथ तो जल गयी.....परन्तु अपने मन की साथ तो उसे आज भी जलाए जा रही है ओटा से नीचे लोटा लुढका पडा है.....कोई दो घूंट पानी ही पिला देता ....वह पतोहू को पुकारना चाहता है....जाते की घरघराहट वढ जाती है....उसकी आवाज में दम ही नहीं.....दोनों पोते नंग-धडंग करची पर कागज की पन्नी खोसे वोलवम हयहये" करते डंडा उठा कर चिल्ला रहे हैं। वह चीखकर कहना चाहता है- वोलवम। भुजुंगा ठाकुर की भांती उसकी सांस गेंगिआ रही है......कोई चटाई घिसका कर ओटा के नीचे उतार देता तो...चल चलन्ती की बेला आ गयी है। होरिलवा का कामर.....पोते का करची वाला झंडा ....वोलवम्.....उसकी आखें ठाठ पर जाकर अटक गयी। ठाठ में मूंज की रस्सी के वन्हन पर वन्हन....उसने अपने हाथों सारे वन्हन वान्हें थे......नहीं, वह वन्हन के नीचे सांस नहीं छोडेगा।

अंतिम शक्ति लगाकर उसने करवट वदलने की चेष्टा की ....पट्ट हो गया.....

जाते ही घरघराहट वन्द हो गयी थी। दोनों पोते उसकी पीठ के पास आकर खडे हो गए थे।

नवगीत

-पाण्डेय आशुतोष

प.चम्पारण, विहार

फिर वैसी ही वात ?
जो पिछले दिन तुम मुझे कह गये !

दुनियां भर का दर्द समेटे रोना धोना !
सारी रात शहर का चक्कर देकर सोना !
वचपन कागज की कश्ती में तैराये-
अब माटी का झुनझुना वजाने से क्या होना

उन के घर वरसात ?
कि जिन की भितों पर शहतीर रह गये !

चलते फिरते लोगों पर विश्वास करोगे,
तो जीवर भर विना भूल के व्याज भरोगे,
डोम खरीदेगा तुमको, हरिचन्द मत बनो
उन की तरह जिओगे तो सौ रोज मरोगे।

उतने ही आघात ?
कि जितने नम माटी के घडे सह गये !!

पूछा था मुझ से जब उनके दल जाना था ?
दिखे न तुम को तंतु क्योंकि विखरा दाना था
पछताने के लिये समय कब रुकता प्यारे
तुम जानो, किसको देना-किसको पाना था

ढेले पर था पात
मगर सब तूफानों के संग बह गये !!

श्री केदारमान व्यथित को पुरस्कार

—अखिलेश मिश्र *

स्वीकार करो
यह पुरस्कार अर्पित तुमको!
केदारनाथ!
प्रसादेच्छु अर्पित करते हम पुष्पांजलि!
आश्रय दे तव नीलकण्ठ में
इन हारों को करते पवित्र
करते सम्मानित पुरस्कार!
छूकर तुमको वह हुआ धन्य।
हे काव्य जगत के मूर्धन्य शिखर!
यह बौना जग
जूझेगा वर्षों कल का दिन—
फिर पाने को वह उच्च शीर्ष!
थकित, चकित जग
करता अभिनन्दन विस्मित प्रतिपल
जर्जर शरीर यह ठिगना कद
कैसे भर लेता विराटत्व
वनकर सर्वाधिक सुदृढ सेतु द्वय देशों को
जोडता अटूट वन्धनों में।
हे उदारमना!
कैसे छिटकाते हो दधीचि का ओज
तनिक-तनिक सी ठेस पर चिटक जाती अस्थियों से!
जीवन मंथन से जो निकला अमृत सब तो तुमने दान किया
और समस्त हलाहल निज कण्ठ में ढाल लिया, हे करुणामय!
सम्भव ही नहीं वने कोई क्षुद्र हृदय
साक्षात व्यथित!
चुल्लू भर वेदना से छलक उठेगा तुच्छ हृदय
नीर वन् आंखों से
आह वन ओठों से

पर-
शान्त चित्त तुम करते सब कुछ आत्मसात!

कैसे समेटता है सागर भर व्यथायें
यह अंजुरी भर हृदय
वेदनाओं की सहस्त्र धारायें कैसे समाती हैं
कवि-ब्रहम के कमण्डल में
फिर-
स्नेह दृष्टि की कितनी धारायें वहती सबको छूकर
कोई न उपेक्षित, वंचित
शिव दर्शन को व्यग्र उमा,
मधुर मिलन की कल्पना मात्र से रोमांचित कपोल,
भ्रमरों के चुम्वन से संकुचित कली
या
झोंको से विचलित सम्भ्रम-सम्भ्रम दौडती चीटियों की पंक्ति !
स्नेहसिक्त करते सबको हे अजातशत्रु !
अपशव्दों के अंकुश वाला काराप्रहरी
सडे-चावल काली-दाल परोसता जेल-भृत्य
या
प्रियतम सपनों को कुतरकर अनगढ चित्र वनाता दीमक !
हे ओजवान, इक हल्की सी हुंकार तुम्हारी
भगा डालती डटकर वैठी विद्वेप भावना, लघुता मन की !
हे शय्या-शायी, तुम अचलप्राय
पर,
अद्भुत तेरा स्वच्छन्द वेग
गतिमान चित्त छू छू लेता उत्तुंग शिखर
वर्तुल लहरें
जन जन का मानस

वनाता एक अदृश्य भावना-सूत्र
बंध जाते जिसमें कोटि पुरुष द्वय देशों के
हे अमर सेतु द्वय देशों के, जनमानस के
करो यह अभिनन्दन स्वीकार !

*प्रथम सचिव, भारतीय राजदूतावास

'सूरज'

–उत्तम नेपाली

रोज की तरह
रात का जाना
और
सुवह का आना
लगा रहता है
मगर
हर सुवह
एक जैसी नहीं
तो
रात एक जैसी
कैसे हो सकती है।
एक सुवह थी
उजली-उजली
सफेद चादर जैसी
वह चमकी थी
खिली थी
गुलाव की कली जैसी॥
वहुत दिनों के वाद
एक सुबह
ऐसी भी आई
जव सूरज
आकाश में
उगना भूल गया था
वह सुवह न रात थी
न रात-जैसी ही थी
पता नहीं,
वह क्या थी!
दूसरे दिन-नया
एक छोटा सा
अच्छा सा
सूरज
नयें आकाश में खिला था।

रास्ता

धुस्वां सायमी

रास्ता,
किधर जाता है
यह मैं कभी सोचता नहीं हूँ।
वस
चलते रहने को
मुझे कोई न कोई रास्ता चाहिए।
हाँ, मैं
उस क्षण
अपना पैर रास्ते से हटा लूंगा
जव
रास्ते की मंजिल
मेरे पावों की आंख को दिख जाएगा
मुझे,
कहीं ठहर जाना
लक्ष्य को पाना अच्छा नहीं लगता है
अभी
विश्राम की नहीं
मुझे व्यस्तता की जरुरत है।
क्योंकि,
हर नजर से
मैं अपने को मुर्दा नहीं मानता
पानी
प्रवाह में ही
जीवंत होता है नदी कहलाता है।
और
ठहराव की कुंठा में
पानी जहरीला तक वन जाता है।
फिर
नीलकण्ठ नहीं हूँ
जहर में अस्तित्व मेरा मिट जाएगा
वस
कोई भी रास्ता
चलता हुआ रास्ता मेरी प्रवृद्धि
रास्ते बंद होने पर
जीवन को बंदी खाना वना लेता है
क्योंकि
मुझमें पंख नहीं।
जिस से मैं आकाश मार्ग अपना सकूं
इसलिए
मुझे वढते रहने में रुचि है।

क्रान्तिवीर

जे.एन. जिज्ञासु
जनकपुरधाम

क्रान्तिवीर पैदा कर वच्चा
जो हमको राहत दे दे
लडने की जो शक्ति खो गयी
शक्ति वही वापस दे दे।

रोते हैं नगरों के वासी
आंखों की जनता है प्यासी
जमघट. भाषण; भोज, चियर्स
देश वन गया अय्याशी।

क्रान्तिवीर नव ज्योति जगाए
योग्य एक नायक दे दे
लडने की जो शक्ति खो गयी
शक्ति वही वापस दे दे।

साध्य नहीं, साधन भी नहीं
भाषण के वलपर नाज करे
साथ नहीं देती जनता तो
गुण्डों के वल पर राज करे।

क्रान्तिवीर तुम इस भूतल पर
कोई एक साधक दे दे
लडने की जो शक्ति खो गयी
शक्ति वही वापस दे दे।

पौरुष, गरिमा, महिमा अपनी
विश्व मंच पर चमक रही
आज उपेक्षित आक्रोशित है
आग क्रान्ति की धधक रही

क्रान्तिवीर मन हृदय जागे,
ऐसा हमें ज्ञान का वर दे दे
लडने की जो शक्ति खो गयी
शक्ति वही वापस दे दे।

हे जन्म भूमि

-मिथिलेश कुमार झा

हे जन्म भूमि
प्रणम्य तूं
नमन करुं
या चुमन करूं
मन है किंकर्तव्यविमूढ
हूं जो मूंढ
दो आर्शीर्वचन
श्रृजन करूं
वनू सपूत
रहने न दू अछूत
परिचय कर
कर अमर
ज्योति प्रखर
वने हमारा लहर
यह भ्रमण वर्ष
मनाउ अति हर्ष

हे जन्मभूमि..........
दो आर्शीवाद
न रहे विवाद
कर सवको आवाद
मिटायें विषाद

हे जन्मभूमि..........
दो हमारा अधिकार
वर्षाओ स्नेह-प्यार
हों पी हम मन्त्र-मुग्ध
शीतल करें तन्त्र दग्ध

हे जन्मभूमि..........
तेरे आंगन मे विश्व शिखर
चढ लोग इस पर हों अमर
दें अमरत्व, भिखारिणी तूं
शिव तेरा, शिवधारिणी तूं

हे जन्मभूमि..........
दो वातसल्य प्रेम
न छोडू नेम
न पसारु हाथ
रहे सवका साथ

हे जन्म भूमि..........

जी भर हंस लो, होली आई

-प्रो. डा. सूर्यदेव सिंह 'प्रभाकर'

जी-भर हंस लो, होली आई
सभी ओर फगुनहट वह गई, सभी ओर खुशियाली छाई ॥
जी भर हंस लो, होली आई ॥

X X X X

कहीं मचल कर कोयल बोली-'होली आई, होली आई ।
सबकी सोयी आशा जागी, थिरक उठी सपनों की टोली ।
आसमान का मन खिल उठा; धरती ने ले ली अंगराई ॥
जी-भर हंस लो होली आई ॥

X X X X

बूढों में आ गई जवानी, लौटी भूली-याद, पुरानी ।
नाच गई नयनों के आगे, वचपन की रंगीन कहानी ।
नवयुवती का रुप चुराकर, वुढिया भी मन में लहराई ॥
जी-भर हंस लो, होली आई ॥

X X X X

यह होली चमकाने वाली सदियों की एकता हमारी ।
सबसे हमें मिलाने वाली इस होली की है वलिहारी ॥
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई-हम सब सचमुच भाई-भाई ॥
जी-भर हंस लो, होली आई ॥

स्पन्दन

–सुमाया राई

तुम और मैं सृष्टि के पुञ्ज,
श्रृजन, समृद्धि के हम कुञ्ज ।
रंज विरंग रस माधुर्य,
विखेरी है प्रकृति ने चेत चातुर्य ॥
देख सुन्दर दृश्य मनोहारी,
जाऊं मैं तो वारी-वारी ।
फैली है सुगंधी मेरे जीवन में,
तुम ही मेरी इस वगीया के माली ॥
सुन्दर, सरस, समीर भोर,
हृदय स्पन्दन जागे तुझ ओर ।
सलिल, शुभ मंगलमय इच्छा ,
रहे प्रीत अमर तब तक, जबतक-
करे अम्बर और धरा प्रतीक्षा ।

हिन्दी-नेपाली कवि गोष्ठी

महाराजाधिराज श्री ५ वीरेन्द्र के ५३ वें शुभ जन्मोत्सव के सुखद उपलक्ष्य में डा. कृष्णचन्द्र मिश्र अकादमी ने काठमाण्डू में हिन्दी-नेपाली कवि गोष्ठी का आयोजन किया। इसके प्रमुख अतिथि मा.मंत्री श्री रामविलास यादव ने त्रैमासिक हिन्दी भाषा की पत्रिका 'हिमालिनी' का विमोचन करते हुए वताया कि स्व.डा.कृष्णचन्द्र मिश्र ने अपनी विद्वता से हिन्दी को वढाया था। आज भी उनके नाम पर स्थापित अकादमी के विद्वत लोग इस कार्य में संलग्न हैं। उन्होंने हिमालिनी के सम्वन्ध में अपने उद्‌गार उद्‌भासित करते हुए कहा कि हिमालय के नाम पर इस पत्रिका का जो नामाकरण हुआ है, मुझे विश्वास है कि हिमालय के शिखर से लेकर तराई के सरहद तक तमाम लोगो की भावना इसमें प्रतिविम्वित होगी। इसकी लोकप्रियता अवश्य बढेगी।

हिन्दी भाषा के सम्वन्धमें उन्होंने कहा-हिन्दी काठमाण्डू घाटी और नेपाल के प्रत्येक छोट-बडे शहरों में वोली जाती है। इसके साथ ही चाइना वोर्डर के इलाकाई पहाडी बस्तियों के लोग भी अच्छी हिन्दी वोलते हैं। नेपाल में सभी क्षेत्र के और सभी वर्ग के लिए हिन्दी जन भाषा रही है। इसकी प्रगति और सम्मान को आगे बढाना हमारी आत्मा की आवाज है।

प्रमिला उप्रेती द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वन्दना से प्रराम्भित इस गोष्ठी में आमंत्रित साहित्यकारों और साहित्य प्रेमियों का अभिनन्दन करते हुए अकादमी के महासचिव डा. सूर्यनाथ गोप ने कहा कि आज का यह कार्यक्रन पहला

तो नहीं है क्योंकि अकादमी ने दशहरा की पूर्व संध्या में भी कविवर श्री केदारमान व्यथित को उनकी काव्य रचना "तेवर कविता का सन्दर्भ आज का" शीर्षक काव्य पर पुरस्कार घोषित कर उन्हें सम्मानित किया था । उन्होंने भाषा के सम्बन्ध में बताया कि भाषा को संकीर्णता में बांधना मुनासिब नहीं है। भाषा तो केवल विचार अभिव्यक्ति का माध्यम है। मनुष्यता की ऊंचाई को छुने के लिए जो भी माध्यम सुलभ हो उसी के माध्यम से अपने अनुभव को सामान्य जन तक पहुंचाना चाहिए । अकादमी के बारे में उन्होंने कहा कि यह संस्था समन्वयवादी संस्था है। यह नेपाली और हिन्दी का मिलन स्थल है, संगम है।

अकादमी के अध्यक्ष प्रो.डा.वीरेन्द्र प्रसाद मिश्र ने मन्तव्य व्यक्त करते हुए कहा– अभी अकादमी शैशवावस्था में है। यह कवि, साहित्यकारों का स्वागत करना चाहता है । पुरष्कृत करना चाहता है। क्योंकि साहित्यकार ही राष्ट्रीय धरोहर के उन्नायक होते हैं। इन्हीं के द्वारा सभ्यता और संस्कृति प्रतिबिम्बित, प्रत्यावर्तित और पल्लवित होती है। जिस राष्ट्र में कवि और साहित्यकार का आदर नहीं होता, वहां की सभ्यता व संस्कृति कदापि समृद्ध नहीं हो सकती है।

उद्योगपति श्री महेश कुमार अग्रवाल ने साहित्यकर्मी को राष्ट्रीय गौरव बताते हुए कहा कि राष्ट्र की आर्थिक उन्नति में भी साहित्य का योगदान होता है। समाज को अनुशासित रखने में साहित्य की भूमिका अग्रणी होती है। समाज के हर पहलु में इसके माध्यम से गति प्राप्त होती है । साहित्य के विकास के लिए हमारे आर्थिक क्षेत्र में संलग्न लोग भी अभिप्रेरित हैं । इसकी सफलता की मैं कामना करता हूं।

कवि गोष्ठी के प्रथम सत्र का संचालन मैंने किया था। दूसरे सत्र में अच्युतरमण अधिकारी ने नेपाली-हिन्दी मिलाकर या यों कहें संगम भाषा में कार्यक्रम प्रारम्भ किया । मीना कर्ण के विद्यापति पदावली से गोष्ठी की शुरुवात हुयी । नेपाली के रोमाण्टिक कवि श्री काली प्रसाद रिजाल अपनी कविता 'तिम्रो मुस्कान' से श्रोता को रोमांचित किया । गजलकार श्री ज्ञानुवाकर पौडेल ने अपनी हिन्दी गजल और नेपाली गजल सुनाकर सम्पूर्ण साहित्य प्रेमी को साहित्य की गहराई में डुबो दिया । कवि श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह ने 'शिष्टता' शीर्षक शब्दों से श्रोता को सिंहासन पर सुशोभित किया । प्राज्ञ धुस्वा सायमि ने अपनी कविता 'कुत्ता अपनी जात को भूल आदमीयता अपना लिया है' सुनाया । इसी तरह सुश्री पारुल जैन की कविता 'लोग क्यों जमा हैं ?', लालानाथ सुवेदी की 'पोखरा' शीर्षक की छन्दवद्ध कविता की प्रस्तुति साहित्य-प्रेमी और साहित्यकारों को गुदगुदा गयी। पशुपतिनाथ पर पठित श्री अखिलेश मिश्र की अत्यन्त भावुक कविता मंच के रौनक में चार चान्द लगा गयी । हिन्दी कवि श्री सीताराम प्रकाश अग्रहरीं ने अपनी 'सम्भावना और सपना' प्रस्तुत किया और सपना को सम्भावना में वदलने की जिम्मेदारी काव्य-प्रेमी पर छोड दिया। समस्या और उलझन में पडे श्रोता की चिन्ता सदन से छूमंतर की तरह तव गायब हो गयी जब भारती शर्मा ने चन्द्रकला रचित नेपाली गीत को लतामंगेशकर की सुरीली आवाज में प्रस्तुत किया।

रिता उपाध्याय की ' नतमस्तक छु त्यागप्रति' कविता की प्रस्तुति के वाद नेपाली के ख्याति प्राप्त साहित्यकार, 'फेरि एउटा परिवर्तन' शीर्षक कविता सुनाने वाले कवि क्षेत्र प्रताप अधिकारी ने कवि कालीप्रसाद रिजाल के सदन से बाहर चले जाने पर उन्हें लक्षित कर व्यंग्यात्मक ढंग से कहा कि मेरे पास उनकी तरह रोमांटिक कविता तो नहीं है, परन्तु थोडी-थोडी वैसी ही

होगी। अधिकारी जी की राजनीतिक व्यंग्य परक कविता सुनकर श्रोताओं ने अनेक बार ताली बजाई और वाह-वाह के शब्दों से सभागार गूँजित होता रहा। फिर दिनेश यादव, राधा यादव, चेतना धमला, मुकेश सिंह आदि ने अपनी अपनी सुन्दर रचनाएं प्रस्तुत की।

मदन धनावत ने अपनी कविता के माध्यम से लोगों को हिन्दी के प्रति जागरुक किया तथा श्रीमती भुवन ढुंगाना ने भी अपनी नेपाली और हिन्दी कविता का पाठ कर श्रोताओं का मन मोह लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नेपाली के प्रख्यात कवि श्री माधव प्रसाद घिमिरे ने की थी।

-प्रस्तुती -बसंत कुमार विश्वकर्मा
उप प्राध्यापक त्रिभुवन विश्वविद्यालय
काठमाण्डू।

साजन का घर

-माला रानी

बेटी चली परदेश साजन के देश
साजन के देश चली उठे घूंघटा
मन में लिये हजार उत्कण्ठा

दिल में नवरंग लिये तन को सजाये
सपनों के राजकुमार आंखों में बसाये

सखियन के संग बचपन बीताये
आंखों से आंसू बार-बार ढ़लक जाये

वावा का आंगन मां की गोद छोडके
सपनों का रंग लिये दूर देश चली
भैया की प्यारीं चांद सी वहना
मैके को छोड साजन की गांव चली

स्वास्थ्य

साक्षात्कार

और्थोडौन्टिक्स दन्त चिकित्सा के नये आयाम

डा. प्रवीण मिश्रा एक और्थोडौन्टिस्ट हैं तथा इन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन शिक्षावृति अन्तर्गत और्थोडौन्टिक्स मे एम.डी.एस तथा डेन्टोफेशियल और्थोपेडिक्स मे पोष्ट डौक्ट्रल की उच्च शिक्षा प्राप्त की है। एक दन्तविशेषज्ञ के रुप में अनेक शोध-पत्र राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत कर चुके हैं। असामान्य दन्त विन्यास को विना चीडफाड किये ही सही रुप देकर चेहरे के सौन्दर्य को वढाया जा सकता है। इस प्रक्रिया को और्थोडौन्टिक्स के नाम से जाना जाता है तथा इस प्रक्रिया द्वारा नेपाल में भी दन्त-चिकित्सा की शुरुआत हो चुकी है। प्रस्तुत है इस प्रक्रिया के विशेषज्ञ डा. प्रवीण मिश्रा से एक साक्षात्कारः–

प्रश्न-डा.प्रवीण, हिमालिनी के इस अंक में आपका स्वागत है। आजकल चेहरे के सौन्दर्य को बढाने में औथोंडौन्टिक्स प्रक्रिया का उपयोग किया जा रहा है। सर्वप्रथम तो आप हमारे पाठक-गण को कृपया औथोंडौन्टिक्स तथा डेन्टोफेशियल प्रक्रिया के बारे में जानकारी दें।

उत्तर-औथो का अर्थ है सही स्थान तथा डौन्टिक्स का अर्थ है दाँत सम्बन्धी अर्थात वह प्रक्रिया जिसके द्वारा दाँतों को सही स्थान दिया जाय। इसी प्रकार दाँत और हड्डियों को विना चीडफाड के मिलाने की प्रक्रिया को डेन्टोफेशियल और्थोपेडिक्स कहते है। यह दन्त चिकित्सा का एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है जो कि दाँत को सही बिन्यास देकर चेहरे की सुन्दरता को वढाने मे वहुत ही सहायक सिद्ध हुआ है।

(डा. प्रवीण मिश्र)

प्र.-दाँतो के असामान्य विन्यास के मुख्य कारण क्या है?

उ.- दाँतों के असामान्य रुप से वाहर निकलने के कारण चेहरे का कुरुप दिखना एक सामान्य समस्या है। इसके कई कारण हैं -बचपन में लम्वे समय तक अंगूठा चूसना, जीभ का अनियन्त्रित होना आदि। इसका एक मुख्य कारण वंशानुक्रम भी है जिसमें वच्चे जन्म से इस असामान्य प्रकृति को लेकर पैदा होते हैं। यह असामान्यता कई प्रकार की होती है ऊपर या

नीचे के दांतों का अधिक वाहर निकलना, ऊपर के जवडे का सामान्य होना व नीचे के जवडे का छोटा होना, ऊपर के जवडे का छोटा तथा नीचे के जवडे का वडा होना तथा चेहरे के ऊपर की मांसपेशी में गडवडी होना इत्यादि ।

प्र-क्या एक आम आदमी इन असामान्यताओं को स्वयं समझ कर एक औथोडौन्टिक्स के पास इलाज के लिए आते है ?

उ. आमतौर पर लोग यह तो पता कर ही सकते हैं कि दांत के सही जगह पर नहीं होने के कारण चेहरा सन्तुलित नहीं है लेकिन सही कारण का पता लगाना मुश्किल है।

प्र. इन समस्याओं के निदान के लिए आप क्या करते हैं ?

उ. इसके लिए कुछ खास तरीके हैं। जैसे दांत का नमूना, चेहरे का एक्स-रे और फोटोग्राफ तथा वढते वच्चों के हाथ का एक्स-रे लिया जाता है। इसके अलावा आवश्यकता पडने पर अन्य जांच भी की जाती हैं।

प्र.निदान हो जाने पर आप इलाज की कौन-कौन सी प्रक्रिया अपनाते हैं ?

उ. निदान से हमें यह पता चल जाता है कि गडवडी का खास कारण क्या है ? तथा उसी अनुसार इलाज किया जाता है। यदि विश्लेषण से पता चला कि दांतो का आकार बडा है जिसके कारण या तो दांत वाहर निकला हुआ है या फिर कुकुरदत्ता हो गया है , और बच्चे का विकास वाकी है तो हम सपोर्टिंग वोन को बढाते हैं। परन्तु पूर्ण विकास के वाद के मरीज का एक खास दांत निकालकर वांकी दांतो को सही जगह पर मिलाते हैं। इससे दांत का विन्यास ठीक हो जाता है । और चेहरा सुन्दर दिखने लगता है।

प्र. क्या बिना चीडफाड के भी हड्डी को बढाया जा सकता है ?

उ. विल्कुल यदि समस्या को सही वक्त पर पहचान लिया जाय तो विना चीडफाड किये ही हड्डी को जरुरत के अनुसार वढाया जा सकता है। यह उस वक्त संभव है जव मरीज बढने के क्रम में हो। लडकों में यह शारीरिक विकास अक्सरहां १४-१५ साल तक तथा लडकियों में १३ साल तक होती है। इस समय का लाभ उठाते हुये हम खास किस्म के उपकरण तैयार कर समस्या का निदान करते हैं। जैसे यदि ऊपर का जवडा वडा और नीचे का जबडा छोटा हो तो एक विशेष प्रकार के उपकरण से नीचे के जवडे को आगे लाया जा सकता है।

प्र.यदि शारीरिक विकास पूरा हो चुका हो और दांत निकला हुआ हो तो क्या इलाज संभव है ?

उ. उस स्थिति में भी हम चेहरे के सौन्दर्य तथा सन्तुलन को वनाने के लिए दांत को भीतर ले जाते हैं। दांतों को भीतर ले जाने के लिए जगह की आवश्यकता होती हैं जो कि खास दांत को निकाल कर वनाया जाता है और फिर दांतों को सही जगह पर ले जाया जाता है। यह काम स्थायी अथवा अस्थायी उपकरण लगा कर किया जाता है।

प्र. इस प्रकार के इलाज के लिए सही उम्र क्या है ?

उ. वैसे तो वच्चे के पैदा होते ही जरुरत के अनुसार इलाज शुरु कर दिया जाता है। कटे होंठ और कटा तालू के मरीज का इलाज पैदा होने के तुरन्त वाद शुरु कर दिया जाता है।कुछ अन्य समस्यायें जो अंगूठा चूसने व जीभ के अनियन्त्रित होने से होती है, उनका इलाज ६से ९ वर्ष की उम्र में किया जाता है। फिर १०-१२ वर्ष के शारीरिक विकास के वक्त जवडे की हड्डी को

बढाया अथवा आकार को बदला जा सकता है। दांत को भीतर ले जाने अथवा मिलाने का काम किसी भी उम्र मे किया जा सकता है

यह एक गलत धारणा है कि दांत में तार लगाकर अन्दर ले जाने का काम केवल १२-१३ साल की उम्र तक होता है। यह इलाज ५० वर्ष की उम्र के लोगों में किया जा सकता हे। अन्तर सिर्फ इतना है कि कम उम्र में इलाज करने से जल्दी लाभ होता है तो अधिक उम्र मे समय कुछ अधिक लगता है।

प्र. इस इलाज की सीमा अवधि क्या है ?

उ. आमतौर पर मरीजों का सहयोग वहुत ही आवश्यक है। इस उपचार के दौरान कुछ आवश्यक उपकरण तथा रवर इत्यादि दिये जाते हैं जो कि मुख के अन्दर मरीज अगर नियमित रुप से न लगाये तो इलाज सफल नहीं हो सकता है। डाक्टरों द्वारा दिये गये सुझावों का सही ढंग से पालन करना वहुत जरुरी होता हैं। साथ ही यह इलाज उनलोगों में थोडा मुश्किल हो जाता है, जिन्हें मसूढ़ों की वीमारी होती है या उसके कारण सपोर्टिंग बोन कम हो जाता है।

प्र. क्या यह इलाज कष्टकारक होता है ?

उ. आमतौर पर यह कष्टदायक नहीं होता है मगर इलाज शुरु होने के पहले कुछ दिनों में कुछ अजीव सी अनुभूति होती है। ठीक उसी तरह जैसे नया चश्मा लगाने पर । बीच में किसी प्रकार की परेशानी होने पर डाक्टर उसका इलाज तुरन्त कर देते हैं।

प्र. तार लगाकर दाँत का इलाज कराते वक्त किन विशेष बातों का ध्यान रखना जरुरी होता है और इसकी औसत अवधि क्या है ?

उ. सवसे आवश्यक है दाँतो की सफाई। यह ध्यान रखना होता है कि दाँतो में न तो गन्दगी जमने पायं और ना ही उसमें गढ्ढा हो। इसके लिए यह जरुरी है कि खाने के तुरन्त वाद व्रश किया जाय। इसके लिए हम खास किस्म के व्रश की सलाह देते हैं। दूसरी खास वात यह है कि दाँतों पर पट्टी लगे रहने की अवस्था में कडी चीजें न चवाई जाये कडी चीजें चवाने से दाँतों पर लगे क्लीप टूटने की पूरी सम्भावना होती है। जिससे इलाज का समय वढ सकता हे। औसतन इलाज में दो साल लगता है परन्तु शारीरक विकास के वक्त विकास अन्वेषण किया जाय तो यह अवधि वढकर तीन साल तक भी हो सकता है। वैसे समस्या गंभीर न हो तो यह इलाज १ से डेढ वर्ष में भी हो सकता है।

प्र. डा. प्रवीण आपने दाँत सम्वन्धी समस्याओं व उनके इलाज को हमारे पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर हमारा ज्ञान वर्धन ही नहीं अपितु समस्याओं के प्रति सचेत भी किया है। अन्त में आपसे यह जानना चाहूंगी कि यह इलाज कुछ महंगा है इसका कारण क्या है ?

उ. इस उपचार मे प्रयोग होने वाली सभी उपकरण विदेशों से मंगाये जाते हैं। तथामुख के अन्दर उपयोग किये जाने वाले प्रत्येक उपकरण की गुणवत्ता का खास ध्यान रखना पडता है इन्हीं सव कारणों की वजह से यह उपचार थोडा महंगा है। जिस दिन नेपाल और भारत में इन उपकरणों का निर्माण शुरु हो जायगा यह उपचार स्वतः सस्ता हो जायगा।

—आभा मिश्रा

ज्ञान की बातें

चोरी के अन्न से महात्मा की बुद्धि भ्रष्ट हुई

आजकल पैसे का महत्व इतना बढ गया है, कि किसी भी प्रकार से घर में पैसा आना चाहिए। धनवान व्यक्ति को ही समाज में सम्मान मिलता है। आज प्रतिष्ठा पूछ उसी की है। फलस्वरुप 'चोर-पूजा' प्रवृति को बढावा दी जा सकती है।

समाज में प्रतिष्ठा तथा सम्मान-प्राप्त एक बडे व्यापारी थे। उन्होंने धनार्जन के लिए अपने निजी व्यापार के अतिरिक्त और भी कई मार्ग ढूढ निकाले थे। इस क्रम में उन्होंने रेलवे स्टेशन के अधिकारियों से तथा जहाजघाट के कर्मचारियों से अपना हिसाव-किताव बैठा रखा था। स्टेशन पर या जहाज घाटो पर पडा हुआ दूसरों का माल वे रात को ट्रक से उठवा लिया करते थे। अधिकारियों के साथ व्यापारी बन्धु को इससे वहुत फायदा होता था। इस तरह अवैध धंधे से वे खूब धनाढ्य होते जा रहे थे। चूंकि समाज में धर्मात्मा माने जाने के कारण दान पुण्य भी करते थे। साधु-सेवा में भी कोई कमी नहीं रखी थी। एक दिन स्टेशन से उपयुक्त प्रकार से ट्रक में माल आया था, उसमें दस बोरे चावल भी थे। उसी दिन एक विरक्त साधु उनके घर आए। व्यापारी महाराज साधु सेवी थे ही, अत: आदरपूर्वक उन्हें भीतर ले जाया गया। महात्मा जी को भोजन कराया गया। उस दिन घर में उसी चावल की खीर बनी थी, महात्मा जी ने भी वही खीर खायी। उसके बाद विश्राम करने के लिए महात्मा जी को अपने कमरे में ले गये जहां वे नोट गिन रहे थे। नोटों की गड्डियां इधर उधर विखरी पडी थीं। विरक्त महात्मा जी के सम्वन्ध में तो इसकी शंका थी ही नहीं कि वे नोट चुरा लेगें यही सोचकर व्यापारी बाबू भोजन करने चले गए। बाद में महात्मा जी का मन विगडा। उन्होंने दस हजार नोटों की एक गड्डी उठा ली और व्यापारी बाबू से विदा मांग चले गए। रात्रि को आकर जब बावू जी ने नोट गिने तो दस हजार कम थे। महात्मा जी पर संदेह करने का कोई सवाल ही नहीं था। बेचारे नौकरों की शामत आयी। उन्हें मारा-पीटा जाने लगा। और पुलिस वुलाने की धमकी भी दी गई। महात्मा जी रोज प्रात: पेट साफ करने के लिए त्रिफला लिया करते थे। सबेरे शौच में कल की खीर का वहुत सा अंश मल वनकर निकल गया तव कहीं जाकर महात्मा जी की वुद्धि में निर्मलता आई। निर्मल ज्ञान के विवेक में नोट चुराने के अपने कृत्य पर वे पश्चाताप करने लगे। सोचा वहां मुझ पर संदेह नहीं किया गया होगा। बेचारे नौकर सताए जा रहे होंगे। फिर वे सोंचने लगे कि मेरे जैसा विरक्त के मन में यह लालच कैसे पैदा हुआ। और मैंने चोरी क्यों की ? महात्मा जी झोली उठाए और बाबूजी के घर पहुंचे। नौकरों को निर्दोष बताते हुए, झोली से निकाल कर गड्डी दी। व्यापारी खुशी के साथ ही आश्चर्य भी व्यक्त कर रहा था। उसे विश्वास ही नहीं था कि महात्मा जी के पास से नोट की गड्डी मिलेगी।

महात्मा जी ने कहा- भाई नोट मैं ही ले गया था, पर मेरी वुद्धि विगडी क्यों? कल तुम्हारे यहां भोजन किया था, उसमें कोई चोरी की चीज तो नहीं थी न? अव बाबू को स्मरण आया कि चावल तो चोरी के थे। बाबूजी सोंचने लगे कि जरा सी चोरी के पदार्थ से विरक्त महात्मा जी का वुद्धि भ्रष्ट हो सकती है तो चोरी करने और चोरी के पदार्थ खाने से तो मेरी बुद्धि तो सदा के लिए ही भ्रष्ट हो गयी होगी। वे ग्लानिपूर्वक पश्ताचाप में डूब गए। इस तरह, महात्मा जी की परिवर्तित वुद्धि ने व्यापारी की वुद्धि निर्मल कर दी। अव वे शुद्ध सात्विक वृति के व्यापार का आश्रय ग्रहण करने के लिए दृढ संकल्प थे। आजकल के व्यापारी, कर्मचारी, अधिकारी नेता एवं साधु-महात्मा प्राय: सभी की बुद्धि विगडी हुई है। सभी ठग विद्या में महारत हासिल कर चूके हैं। झूठ वोलना धोखा देना नीचा दिखाना, ठगना आदि तो साधारण वात है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस का मूल कारण क्या है? इसका प्रधान कारण है अन्यायआर्जित पैसे का अन्न खाना और दूषित आहार विहार। इसलिए कहा गया है "जैसा अन्न, वैसा मन्न"।

साभार: कल्याण

क्या आप जानते हैं मधुमक्खियां भी नृत्य करती है

मधुमक्खियों के इस नृत्य की जानकारी सबसे पहले जर्मन जीव-विज्ञानी कार्ल वान फ्रिश ने दुनिया को दी। पहले तो इन्हें पागल कहा गया। लेकिन जब इनकी बातों को सच पाया गया तो इन्हें इस खोज के लिए वर्ष १९७३ में नोवेल पुरस्कार भी दिया गया। इनके अनुसार, मधुमक्खियां कव नृत्य करती हैं। मधुमक्खी अपना भोजन फूलों के परागकण से वनाती है। मधुमक्खी के छत्ते से परागकण की खोज में कुछ विशेष मधुमक्खियां ही वाहर जाती है इनको मार्ग दर्शक कहा जाता है। मार्गदर्शक मधुमक्खी जब भोजन के भंडार को देखकर वापस आती है तव इसकी सूचना छत्ते के अन्य सदस्यों को एकविशेष नृत्य के द्वारा देती है मधुमक्खी इस विशेष नृत्य को दो प्रकार से करती है। पहले प्रकार के नृत्य में मधुमक्खी सिर्फ गोल गोल घूमती है, और दूसरे प्रकार में यह अपने उदर को दाएं बाएं हिलाते हैं।

इसका नृत्य कूटभाषा की तरह काम करता है भोजन श्रोत की दूरी यदि एक सौ मीटर से कम होती है तो मार्गदर्शक मधुमक्खी इसे वताने के लिए गोल नृत्य करती है। भोजन श्रोत की दूरी एक सौ मीटर से अधिक होने की स्थिति में अंग्रेजी के '8' शक्ल में नृत्य करती है। गोल चक्कर वाले नृत्य से केवल भोजन श्रोत की दूरी के वारे में पता चलता है, जवकि उदर के दाएं-वाएं हिलने वाले नृत्य से भोजन की मात्रा एवं यह किस दिशा में हैं, इसका पता भी चलता है मार्गदर्शक मधुमक्खी के इस नृत्य में छत्ते की श्रमिक मधुमक्खी भी भाग लेती है और थोडे समय के वाद सारी श्रमिक मधुमक्खी परागकण लाने के लिए उड जाती है।

— सुमिता

नेपाल

क्या आप जानते है?

(१) नेपाल के संविधान २०४७ में कितने भाग, धारा और अनुसूचियां हैं।

—२३ भाग, १३३ धारा और ३ अनुसूचियां

(२) नेपाल में कितने मंत्रालय है?

-२७

(३) काठमाण्डू वागवजार स्थित पद्म कन्या कालेज के भवन का नाम क्या है?

-रत्नदीप भवन

(४) पशुपति मन्दिर के सामने के वसहा को किसने वनाया और कव ?
-जगत जंग, वि.स.१९३७ (सन् १८८०)
(५) साप्टा किस संगठन से सम्बिन्धत है ?
-सार्क
(६) 'सर्पदंस' पुस्तक के लेखक कौन हैं ?
-तारिणी प्रसाद कोइराला
(७) 'माइती नेपाल' नामक संस्था क्या काम करती है ?
-देह व्यापार के लिए वेची गई लडकियों का उद्धार करना
(८)'चोनाम' किस जाति का मुख्य पर्व है ?
-चेपांग जाति का
(९) नेपाल के किस जिले में सवसे कम वर्षा होती है ?
-मुस्तांग जिले में
(१०) 'पण' और 'पुराण' नामक मुद्रा किस काल की है।
-लिच्छविकाल
(११) नेपाल की वजट में विदेशी सहयोग ? आर्थिक वर्ष वि.सं. २०५३/५४ में नेपाल को विदेशी अनुदान के रुप में १४ अरव रुपए और विदेशी ऋण के तहत २६ अरव रुपए दिए गए इस तरह कुल मिलाकर ४० अरव विदेशी रुपए नेपाल के वजट में समावेश किया गया।
(१२) नेपाल के साथ परराष्ट्रसम्बन्ध कायम करने के सिलसिले में ११० वां राष्ट्र के रुप में मेसेडोनियां है। यह दौत्य सम्वन्ध छह जनवरी १९९८ को वना। नेपाल का सबसे पहला परराष्ट्र सम्वन्ध १७ मई १९३४ ई. में संयुक्त अधिराज्य से कायम हुआ था।

भारत

(१) भारत में रेडियो सेवाका प्रसारण कव से हुआ था ?
-सन १९२७
(२) भारत के महान सम्राट अशोक का राज्यरोहण कव हुआ था ?
-ई. पूर्व वि.सं. २७३ में
(३) भारतीय तक्षशिला वर्तमान में कहां है ?
-पाकिस्तान में
(४) ऑपरशन टाइगर से क्या वोध होता है ?
-भारतीय सेना द्वारा काश्मीर राज्य में उग्रवादियों के विरुद्ध चलाया गया अभियान
(५) सप्तर्षि समूह में कौन-कौन ऋषि आते हैं ?
-काश्यप, विश्वामित्र , गौतम , आत्रि , जमदग्नी, भारद्वाज और वशिष्ठ।

अन्तर्राष्ट्रीय

(१) संसार का सबसे वडा विमान स्थल कौन सा है, और कहां है ?
-किंग अव्दुल अजीज अन्तर्राष्ट्रीय विमान स्थल साउदी अरेविया।
(२) दक्षिण एशिया का सवसे वडा राजमार्ग पाकिस्तान में वनाया गया है ? इसका नाम क्या है ?
-इस्लामवाद से लेकर लाहौर तक के इस राजमार्ग की लम्बाई ३४२ कि.मी. है। इसमें छह लाइन है इसके निर्माण में पाकिस्तानी मुद्रा ३० अरव रुपए का खर्च है इस राजमार्ग का नामविकास राजमार्ग है।
(३) १७ मील लम्बा भारत और श्रीलंका के वीच वना हुआ रेत और चट्टान के पुल का नाम क्या है ?
-आदम का पुल
(४) रोम में पोप का निवास स्थान जो १०९ एकड में फैला है । प्रसिद्ध सेन्ट पीटर गिरजाघर यहां है और उसे एक स्वतन्त्र राज्य माना जाता है, उसका नाम क्या है ?
-वेटीकन नगर
(५) व्रिटिश प्रधानमंत्री का देहात स्थित निवास स्थान का नाम क्या है ?
-चीकर्स

घर परिवार

'घर परिवार' यह एक ऐसा नाम है जो सभी के लिए आवश्यक है। जब पशुपक्षी जानवरों के लिए भी यह जरुरी है तो इन्सानों की तो बात ही मत पूछिए। दिन-भर जितना ही कामकाज, भागदौड या घूमफिर ले शाम को तो अपने नीड में उन्हें लौटना ही है। छोटा सा घर, मुस्कुराती पत्नी, बुजुर्ग मां-बाप, छोटे भाई बहन और नन्हें से बच्चे कितनी सुखद कल्पना है, यदि यह हकीकत है तो इसका कहना क्या। दुःख तो इस बात की है कि, जमाने की इस भागदौड में लोग मकान तो बनाते जा रहे हैं लेकिन घर से अलग होते जा रहें हैं। आज छोटे मकान नहीं बल्कि बडे से बडे मक़ान नजर आएगें। परिवार के नाम पर किराएदार की जमघट लगी रहेगी। वही पर अपने परिवार के लोग दूर रहेंगे या कभी कभार अतिथि के समान दिखाई पडेंगे। दुनियां विकास पथ -पर जिस तेजी के साथ बढती जा रही है, उसी तेजी के साथ परिवार भी टूटता जा रहा है। जिस तेजी से दिमाग का विकास हो रहा है,उतने ही वेग से दिल का ह्रास भी होता जा रहा है। ऐसी हालात में स्वाभाविक है परिवार का टूटना। परिवार को टूटने से तभी बचाया जा सकता है जबकि दिमाग के साथ ही दिल का विकास हो, उसमें भावना हो।

यांत्रिक युग में दिमाग तो यांत्रिक हो ही गया है, दिल भी यांत्रिक बन गया है। भावनाएं मर गयी है। रिश्ते, नाते सभी सीमित हो गए हैं। प्यार हमेशा का संबंध जज्बाती न होकर सम्पत्ति का व्यापार बन गया है। कर्तव्य से अधिक अधिकार की बात होती है। अतः जहां तक देखने को मिला है, उससे यह स्पष्ट होता है कि परिवार के टूटने के कुछ खास - खास कारण हैं। जैसे सास, बहू का आपस में न मिलना, सम्पति के कारण भाइयों के बीच मनमुटाव होना, आधुनिकीकरण का होड और कर्तव्य की अपेक्षा, अधिकार को अधिक महत्व देना आदि। अगर हम सभी ध्यान देकर इन बातों पर सोचे तो समस्या का समाधान किया जा सकता है। आजकल संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार लेता जा रहा है। सभी अलग और स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। ठीक है, सभी को अपने ढंग से जीवन जीना चाहिए लेकिन सचमुच एकल जीवन जीनेवाले खुश हैं? यह पूछने की नहीं बल्कि सोचने की बात है। ताली दोनों हाथों से बजती है। इसे बजाने में दोनों हाथों की खास भूमिका होती है। इसलिए सभी को दो-दो कदम आगे बढने चाहिए आज तो सभी समझदार हैं, खुद सोच सकते हैं।

कुछ जरुरी बातें, जिस पर अमल करें

–घर आई नयी बहू पर, परिवार की जिम्मेवारी धीरे-धीरे डाले।

-बहू के कामों में मिनमेख न निकाले। गलती पर प्यार से समझाएं।

-बहु अगर अपने कर्तव्यों को निभाती है तो ससुराल वालों को चाहिए कि उसके अधिकार का ख्याल करें।

–सास को चाहिए की बहु को परायी न समझ कर उसे अपनी बेटी के समान समझे।

–भाइयों को अधिकार से अधिक कर्तव्य का खयाल करना चाहिए। क्योंकि कर्तव्य करने पर अधिकार स्वतः मिल सकता है। लेकिन अधिकार जताने से कर्तव्य का पालन नहीं हो सकता।

–छोटी-छोटी बातों को मन में न रखकर भाइयों को चाहिए कि आपस में प्यार से सुलह करें।

–जमाने की दौड में शामिल होना अच्छी बात है ? लेकिन इसे आपसी प्रतिस्पर्धा के रुप में न लें।

–अपने परिवार के लोगों को आगे बढते देखकर इर्ष्या न करें बल्कि खुशी के साथ उसकी मदद करे।

–बहू को भी घर के सभी लोगों के मान सम्मान का ख्याल करना चाहिए।

–नये परिवेश में घुलमिल करने में समय लगता है इसलिए बहू को धैर्य रखना चाहिए।

– संगीता

"झटपट बनाइए और गरमागरम खाइए

धनियां मटर पुलाव

सामग्री

चावल -२०० ग्राम

मटर-१०० ग्राम

धनियापता -खडे चम्मच ताकी कटी हुई

नमक-स्वादा नुसार

विधि-

नमक के उबलते पानी में चावल को नर्म होने तक पकाएं। चावल पकने के लगभग ५ मिनट पहले मटर मिलाएं और पकाएं। चावल का मांड (आतिसिक्त, पानी) छानकर अलग कर दें धनियां पत्ता मिलाएं। केला और चिकेन करी के साथ सर्व करे।

ब्रेड रोल

सामग्री:

ब्रेड-एक पौण्ड

आलू-४ बडे उबले हुए

मटर-१०० ग्राम

प्याज-१ बारीक कटी हुई

धनिया पता -१ मुट्ठी

तलने के लिए घी या तेल

सुजी-१ कप

नमक-स्वादानुसार

विधि

उबले हुए आलू को मसल ले और मटर का छिलका निकाल लें। कडाही में तेल डालकर गरम करें और तेजपत्ता डालें। तेल गरम हो जाने पर कटी हुई प्याज डाले और भुरा होने तक भुने फिर मसले हुए आलू मटर, नमक और सब्जी का मसाला हल्का सा डालकर भुने फिर धनिया पत्ता डालकर निकाल लें। मिश्रण तैयार हो गया और एक वरतन में पानी डालकर उसमे ब्रेड भिंगोएं और हाथ दवाकर पानी निकाल दें। फिर उस ब्रेड के अन्दर तैयार की गई मिश्रण को भरकर ब्रेड को गोल कर ले और सूजी को एक प्लेट मे फैलाकर उस गोल की गई ब्रेड को सूजी में लपेटें। इसी तरह से सारे ब्रेड को तैयार करती जाएं।

फिर एक पैन में तलने का तेल या घी को गरम करें जब तेज गरम हो जाय तो तैयार की गई ब्रेड रोल को लाल होने तक तल लें। आपका ब्रेड रोल तैयार है। इस ब्रेड रोल को टोमाटो के साथ खाएं।

–मीना कर्ण

प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है प्रत्येक वस्तु प्रकट एवं लोप होता है आनन्दमय शान्ति उस समय तक प्राप्त नहीं होती जबतक कोई व्यक्ति जीवन और मृत्यु की वेदना से उपर नहीं उठता।

–बुद्ध

बच्चों का संसार

बच्चे जितने प्यारे और सुन्दर होते हैं उतने ही नटखट भी। उनका प्यारा और मासूम चेहरा उनके चंचल, नटखटपन से और ही खूबसूरत हो जाता है। आप जितने भी तनाव में या थके हों बच्चों की चंचलता सभी कुछ पल भर में दूर कर देती है।

"बच्चों का संसार" उनके ही हाथों से लिखी गई प्यारी-प्यारी रचनाओं से भरे होंगे। अगर आपके भी बच्चे कुछ लिखते हों तो उनके प्रोत्साहन में हम सहायक बनेंगे। हमें आशा है, आप अपने बच्चों की रचनात्मक प्रवृति के प्रति जागरुक होंगे और उनकी रचनाएँ हमें जरुर भेजेंगे। (सं.)

इक्कीसवीं शताब्दी के बच्चे

—सोनल राज

वीसवीं शताब्दी पार करके हम इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर रहे हैं ।इक्कीसवीं शताब्दी यानि विज्ञान की आधुनिकता की शताब्दी। इक्कीसवीं शताब्दी में विज्ञान इतना विकास कर चुका होगा कि मानव पूर्णतः वैज्ञानिक उपकरण पर सीमित हो जाएगा। आदमी के शरीर की कोई उपयोगिता नहीं रह जाएगी, मात्र उसकी उंगलियों कि उपयोगिता शेष रह जाएगी। उंगलियों से बटन ऑन और ऑफ करना ही सिर्फ मुनष्य का काम रह जाएगा।

आज जब विज्ञान की प्रगति अपने शीर्ष पर है, बच्चों की दशा पहले की ही तरह है। सूर्य की पहलीकिरण के साथ छोटे गरीब बच्चे या तो गंदगी से प्लास्टिक चुनते हुए नजर आते हैं। या बडे घरों में काम करते हुए। क्या यही है हमारी इक्कीसवीं शताब्दी की कल्पना ? कहां तो सबने सोचा है कि इक्कीसवीं शताब्दी पूर्णतः एक नई शताब्दी होगी। लेकिन लगने लगा है कि हम सब की सोच अब गलत और आधारहीन साबित होगी। सब नारे लगाते घुमते है कि "बच्चे देश के कर्णधार हैं, उनका विकास कीजिए।" लेकिन बच्चों के विकास के लिए अभी तक कदम उठाए नहीं गए हैं। अगर उठाए भी गए हैं, तो वे महत्वपूर्ण साबित नहीं हुए हैं।

बच्चे यानि देश का भविष्य जब बच्चों की दशा इस तरह दयनीय है तो क्या देश का विकास सम्भव है ? बच्चें गंदगी उनका शरीर बीमारियों का घर बन जाता हैं और वे पूंजीहीन बच्चे इन बीमारियों से छुटकारा पाने में असमर्थ होते हैं। चाहे जितनी गर्मी हो या सर्दी ये गरीब बच्चे आकाश को चादर मान और धरती को बिस्तर मान सोते हैं। ये गरीब बच्चे अच्छी शिक्षा तो दूर, साधारण सी प्राथमिक तह की शिक्षा भी नहीं प्राप्त कर सकेत हैं। क्या यहीं हैं देश के भविष्य और एइक्कीसवीं शताब्दी के बच्चे ? क्या ये इक्कीसवीं शताब्दी के लिए एक ज्वलन्त प्रश्न नहीं है ?

अभी गरीब बच्चों की हालत जानवरों की तरह है तो क्या हम उनकी हालत में सुधार की कल्पना कर सकते हैं ? वो भी उस वक्त, जब पूरा कार्य वैज्ञानिक उपकरण पर निर्भर हो. जाएगा। अभी तो पूंजीपति लोग गरीब बच्चों का किसी तरह भी पालन-पोषण कर देते हैं, उन्हें अपने घरों में नौकर की तरह रख कर लेकिन क्या इक्कीसवीं शताब्दी मेंउनका भविष्य उज्जवल होगा ?

प्यारा हिन्दुस्तान

—नेहा

हम भारत के नन्हें-मुन्हें सिपाही,
करेंगे देश की रक्षा
लडेंगे हम हिम्मत से
होने न देंगे इस पराधीन
देश हमारा सबसे प्यारा,
प्यारा हिन्दुस्तान
ऊंचे-ऊंचे पर्वत,
हैं इसके पहरेदार
कोयल करती हमारा मनोरंजन
छेड कर मीठी तान
झर-झर वहता झरना
मिटाता हम सबकी प्यास
पेंड बचाते हमको गर्मी में,
देकर ठंडी छाया
पर हम आज के मानव ने
काट-काट कर इसे नष्ट कर डाला है
विनाश के ये रास्ते
हमनें स्वयं बनाए हैं
इससे बचने के लिए,
हमें फिर से पेड लगाने हैं
वातावरण को बचाकर,
गंदगी हटाकर ,
अपने प्यारे हिन्दुस्तान को,
इन्द्र की अमरावती की तरह
सुन्दर और मनमोहक बनाना है।

हम आज के विद्यार्थी

—सौरभ

हम आज के विद्यार्थी
कल एक अच्छा नागरिक बनेंगे
दूसरों को भी अच्छा
बनना सिखाएंगें।
भ्रष्टाचार का विरोध करेंगे।
रिश्वत कभी न किसी को लेने देंगे
हम आज के विद्यार्थी
खूब पढेंगे-खूब पढेंगे
अपने देश का मान बढाएंगे।
साहित्य संस्कृति हो
या हो विज्ञान टेक्नोलोजी
सभी क्षेत्रों में इसे
हम आगे बढाऐंगे।
गरीबों की मदद करेंगे।
आपस में दोस्तों को
कभी न लडने देंगें
मेहनत की रोटी खाएगें
और चारों ओर
शान्ति फैलाएगें
हम आज के विद्यार्थी।

विविध समाचार

सम जयन्ती

बालकृष्ण सम फाउन्डेशन ने राजधानी में एक साहित्यिक समारोह का आयोजन कर ९६ वां सम जयन्ती मनाया। समारोह के प्रमुख अतिथि, राज परिषद के अध्यक्ष भूपालमान सिंह कार्की ने इस मौके पर "एक अमर प्राज्ञ वालकृष्ण सम" नामक ग्रन्थ का लोकार्पण किया जिसमें ८० वरिष्ट व्यक्तियों की रचनाएं हैं। समारोह को सम्वोधित करते हुए उन्होंने सम द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यो की चर्चा की।

प्रा. घटराज भट्टराई ने कहा कि सम का अध्ययन न करने वाले व्यक्ति नेपाली साहित्य के विद्यार्थी नहीं वन सकते हैं। इसी तरह उपन्यासकार सुन्दर प्रसाद शाह दुःखी ने साहित्यकार सम की प्रतिभा को विराट वताया। फाउन्डेशन की अध्यक्षा इन्दिरा प्रसाईं के स्वागत भाषण से शुरु इस समारोह में सदस्य-सचिव नरेन्द्र राज प्रसाईं ने धन्यवाद ज्ञापन किया था।

पोखरा का पहला ललित कला पुरस्कार

कला साहित्य और संगीत के क्षेत्र में साधनरत प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पोखरेली युवा सांस्कृतिक परिवार ने एक ललित कला पुरस्कार की स्यपाना की है। यह पुरस्कार सर्वप्रथम ७२ वर्षीय कलाकार कृष्ण प्रसाद श्रेष्ठ को दिया जाएगा।

श्री श्रेष्ठ की रुचि वचपन से ही चित्रकला में थी। इनके पसन्द की चित्ररचना का माध्यम पानी रंग है। कलाकार दुर्गा वराल ने १५ हजार रुपए और पोखरा के युवा सांस्कृतिक परिवार ने १० हजार रुपए का एक कोष खडा किया है। प्रत्येक दो वर्ष में उत्कृष्ट कला साधक को ५ हजार रुपए का यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

बच्चे उद्विग्नता के शिकार

ऐसा कहा जाने लगा है कि आजकल के अधिकांश वच्चे उद्विग्नता के शिकार हैं। इसी सिलसिले में एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन किया गया, जिसमें पाया गया कि टेलिविजन देखने वाले अधिकतर वच्चे अक्सर उद्विग्न रहते हैं

पर्दे पर दिखाई देने वाले चित्रों और असली दुनियाँ में हमेशा गडमड चलती रहती है। अध्ययन के वाद यह पाया गया है कि ४७ बच्चों का यह कहना था कि वे उस देश में रहना चाहेंगे जहां की जीवन शैली बहुत तेजतरार और आक्रामक होती है। नौ फीसदी बच्चे घर से भागे होते हैं। १६ प्रतिशत वच्चों का कहत्ता था कि उनके पडोस में मरने वालों में वहुतों की हत्या की गई है। ७.५ फीसदी वच्चे हथियार का भी इस्तेमाल कर चुके हैं। आखिर ये बच्चे

उद्विग्नता के शिकार कैसे हुए यह सोचने वाली बात है , क्योंकि वच्चों की ऐसी स्थिति खतरे का सूचक है। अन्तर्राष्ट्रीय माध्यम से चौकाने वाली वात सामने आई कि बच्चों को इस हालत में पहुंचाने वाला और कोई नहीं अपने ही घर के हैं और वह है सभी का अपना टेलिविजन । पूरी दुनियाँ के अवोध छोटे-छाटे वच्चों पर टेलिविजन के अध्ययन के वारे में यह चौकाने और खिन्न करने वाले तथ्य उस रिपोर्ट का हिस्सा है जो इसी वर्ष जारी की जाएगी ।

भारत समेत २३ देशों के १२ वर्ष की आयु के ५ हजार वच्चों की राय के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की गई है जिससे यह जाहिर होता है कि ९१ प्रतिशत वच्चे औसतन तीन घंटे रोज टेलीविजन देखते हैं। पच्चास फीसदी बच्चे स्कूल या अन्य वाहरी क्रियाकलाप में भाग न लेकर केवल टेलीविजन पर अपना समय व्यतीत करते हैं। प्रथम अन्र्राष्ट्रीय सर्वेक्षण से यह पता चला है कि मिडिया वच्चों में अपसंस्कृति फैलाकर उनके अवचेतन में हिंसा को प्रतिष्ठित करता है। अन्तर्राष्ट्रिय सर्वेक्षण से यह पता चला है कि टेलीविजन पर रोजाना एक घंटा ऐसे धारावाहिकों को प्रसारित किया जाता है जिसमें हिंसा के दृश्यों को रोमांच के नाम पर या विजेता वनने की प्रेरणा के साथ परोसा जाता है। अध्ययन से यह पता चलता है कि विश्व भर के २६ फीसदी बच्चे मारधाड वाले कार्यक्रमों के नायकों जैसा बनना चाहते हैं। १८.५ फीसदी वच्चे गायकों और संगीतज्ञों को अपना आदर्श मानते हैं। लेकिन इनमें लडकों और लडकियों का अलग-अलग नजरिया है।

बछड़े की प्रतिकृति

अमर्रीकी वैज्ञानिकों ने बछड़े की प्रतिकृति 'क्लोन' तैयार की है। ये वैज्ञानिक इससे पहले भेड का क्लोन तैयार कर चुके हैं। इनका कहना है कि विश्व में पहली वार वछड़े की यह प्रतिकृति तैयार की गई है। वर्जीनिमा में ब्लैक सर्ज के पी.पी.एल थेरापिर्यूटिक्स आई.एन सी ने ४४.१ किलोग्राम की यह वछड़ा प्रतिकृति तैयार की है, जिसका नाम पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति के नाम पर थामस जेफरसन रखा गया है। यह कंपनी एडिनवर्ग (स्काटलैंड) के पी.पी.एल की एक शाखा है, जहां साल भर पहले भेड की प्रतिर्कृति डौली तैयार की गयी थी।

कवि जिज्ञासु को साहित्य सम्मान

जनकपुरधाम निवासी जय नारायण झा "जिज्ञासु"को बम्वई भारत स्थित जागृत प्रकाशन ने भारत की आजादी की पचासवीं स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर इनकी हिन्दी गीत गजल तथा साहित्यिक लेखन क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए "साहित्य सौरभ" सम्मान प्रदान किया है। श्री जिज्ञासु को बधाई।

साहसिक यात्रा

अपने देश से किसे प्यार नहीं होता। अपना देश जैसा भी हो जरुरत पडने पर सभी जान दे सकते हैं । देश की रक्षा के लिए सेना होती है ? लेकिन साधारण से साधारण जनता भी इसके प्रचार-प्रसार के

लिए तत्पर रहते हैं।

ऐसा ही एक साहसिक कारनामा नेपाल, काठमाण्डू के तीन युवकों ने कर दिखाया है। नेपाल भ्रमण वर्ष १९९८ के प्रचार -प्रसार के लिए १ सौ १३ दिनों तक लगातार सार्क देशों का साइकल से साहसिक यात्रा करने वाले किरण भक्त माली, मणिराज लावती और मृगेन्द्र मिश्रा हैं। इन लोगों ने कार्तिक माह के २२ गते से अपनी यात्रा की शुरुआत की थी और इस भ्रमण के दौरान इन लोगों ने ७११० किलोमीटर की दूरी तय की।

बालश्रम के विरुद्ध एक अभियान

आज के वच्चे कल के भविष्य यह कहने की वात नहीं वल्कि महसूस करने की वात है। यह सच है कि इसके सम्वन्ध में सभी-देशों में लम्वे-चौंडे भाषण दिए जाते हैं। वच्चों के अधिकार की लिष्ट तैयार की जाती है, लेकिन वस ...उसे फाइल में वन्द कर दिया जाता है। इसका परिणाम क्या होता है ? वच्चे उसी दयनीय स्थिति में है। जिस हाथ में कलम-कांपी होनी चाहिए वह हाथ मजदूरी करता है। इतना ही नहीं जानवरों की तरह काम करने के वाद भी उन मासूमों को भूखं ही रहना पडता है। सभी देशों में उनका शोषण किया जा रहा है।

नेपाल शिक्षक मंच का प्रथम राष्ट्रीय महाधिवेशन

इसी २०५४ साल फाल्गुण १,२,३ गते के दिन भैरहवा (सिद्धार्थनगर, रुपन्देही गौतम बुद्ध की पावन नगरी है) में नेपाल शिक्षक मंच का पहला महाधिवेशन सम्पन्न

हुआ। ने.शि.म. की स्थापना २०४८ साल में हुई थी। उस समय कुछ शिक्षकों ने एक केन्द्रिय तदर्थ समिति वना कर इसे चलाया था। उन शिक्षकों को इसे पंजीकृत कराने हेतु तीन वर्ष तक लगातार संघर्ष करना पडा था। फलस्वरुप आज यह मंच शिक्षा के लिए वहुत महत्वपूर्ण सावित हुआ है। इसके कुछ महत्वपूर्ण कार्यो में से शिक्षक किताबखाना, टाइम वाउण्ड प्रमोशन, शिक्षा में दिखी त्रुटियों पर अवाज उठाना, प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने के लिए आवाज उठाना जैसी अनेक महत्वपूर्ण वातों की ओर इस मंच को आवाज उठाना है। भाषा की. समस्या यह है कि कुछ मातृभाषा के शव्द और पाठ्यक्रम में रखे गये शव्द पढाने तथो उच्चारण में शिक्षकों को कठिनाई आती है। वच्चों एवं शिक्षक दोनों को मुश्किल हो जाता है। अत: ऐसे शव्दों को पाठ्यक्रम से हटाने के लिए आवाज उठाई जा रही है। इस अधिवेशन का उद्घाटन माननीय मंत्री हृदयेश त्रिपाठी ने किया।

अशोक पाण्डे

राजर्षि जनक प्रतिभा पुरस्कार

वीरगंज में हाल ही में सुसम्पन्न द्वितीय नेपाल राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के समुद्घाटन समारोह में हिन्दी की विशिष्ट सेवा के लिए डा. कृष्णचन्द्र मिश्र, त्रिभुवन विश्व विद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष को मरणोपरान्त राजर्षि जनक प्रतिभा पुरस्कार २०५४ से सम्मानित किया गया।

जनकपुर वौद्धिक समाज द्वारा स्थापित एवं प्रथम वार प्रमुख अतिथि, प्रतिनिधि सभा के सम्माननीय सभामुख रामचन्द्र पौडेल के कर-कमलो द्वारा डा. मिश्र के सुपुत्र सच्चिदानन्द मिश्र को राजर्षि जनक प्रतिभा पुरस्कार की राशि नगद्‍ रु.२५,०२५/- (पचीस हजार पचीस रुपए) एवं चांदी का जानकी मंदिर प्रदान किया गया।

जनकपुर वौद्धिक समाज द्वारा ३ मार्च को इसकी घोषणा की गई थी। सुयोग्य पिता के योग्य सुपुत्र साच्चिदानन्द मिश्र ने सम्मान के लिए आभार प्रकट करते हुए पुरस्कार की रकम रु.२५०२५ सहित रु. ५१,००१ /- राजर्षि जनक प्रतिभा कोष के लिए प्रदान करने की घोषणा कर सवों में और अधिक उत्साहभर दिया।

महाकवि निराला जयन्ती पर काव्य सन्ध्या आयोजित

जनकपुरधाम, महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के जन्म शताव्दी के अवसर पर उनके जन्मदिवस वसन्त पंचमी १ फरवरी को जनकपुर वौद्धिक समाज द्वारा काव्य सन्ध्या का आयोजन किया गया।

शहीद दुर्गानन्द वाचनालय में आयोजित काव्य सन्ध्या के आरंभ में प्रमुख अतिथि अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय सचिव, डा. भुवनेश्वर गुरुमैता सहित अनेक साहित्यकारों ने महाकवि निराला तथा उस युग के महाकवि जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानन्दन पन्त को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित किया। प्रमुख अतिथि डा. गुरुमैता ने कहा- हमें भाषाई विवाद में नहीं उलझ कर महापुरुषों के जीवनी से प्रेरणा ग्रहण कर

रचनात्मक कार्यों द्वारा आगे वढना चाहिए। उन्होंने महाकवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला और सुमित्रानन्दन पन्त को हिन्दी साहित्य की महान् विभूति वताया। डा. गुरुमैता ने आगे कहा-निराला जी आधुनिक तुलसी दास थे, जो अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य के भण्डार को वढाए थे।

उन्होंने निराला जी से व्यक्तिगत सम्पर्क तथा उनके जीवनी के कई महत्वपूर्ण संस्मरण व्यक्त कर साहित्यकारें को मन्त्रमुग्ध कर दिया। डा. गुरुमैता ने आगे कहा- नेपाल और भारत दो निकटतम पडोसी ही नहीं हम सहोदर हैं। दोनों देशों के बीच जनस्तर पर अनन्तकाल से चले आ रहे मैत्री सम्वन्ध को साहित्यकारों को और आगे वढाना चाहिए। उन्होंने अपने छात्र जीवन का संस्मरण व्यक्त करते हुए कहा- सन् १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन के क्रम में फुलपरास में सातवीं कक्षा में पढते हुए १३ अगस्त को वहां थाना पर झण्डा फहराया था और आठ वर्ष वाद जव सन् १९५० में नेपाल में निरकुश शासन की समाप्ति के लिए सशस्त्र संघर्ष हुआ तो अनेक मुक्ति वाहिनी को पनाह देकर उनके अवैध हथियार सुरक्षित रखने एवं विस्फोटक पदार्थ घटनास्थल तक पहुंचाने में सहयोग पहुंचाया था।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के मानार्थ सदस्य सुन्दर झा शास्त्री ने कहा- महाकवि प्रसाद और निराला जी भारतीय स्वाधीनता संग्राम के जागरण कवि थे। जिन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा जन-जागरण लाने का काम किया। साहित्यकार उदयनारायण झा ने कहा- कवि एवं साहित्यकारों के भृजनात्मक भावना को आत्मसात कर हमें आगे वढना चाहिए। काव्य सन्ध्या की अध्यक्षता करते हुए जनकपुर वैद्धिक समाज के अध्यक्ष राजेश्वर नेपाली ने कहा- महाकवि निराला अपनी रचनाओं के द्वारा भारतीय स्वाधीनता संग्राम में जन-जागरण लाने में काफी सफल रहे। उनकी वहुचर्चित कृतियों परिमल, गीतिका, नये पत्ते, वेला आदि काव्य संग्रह उन्हें अनन्त काल तक जीवित रखेगा। महाकवि निराला का १५ अक्टुवर १९६१ ई. को निधन हुआ था। काव्य सन्ध्या में डा.गुरुमैता, सुन्दर झा शास्त्री, राजेश्वर नेपाली, जयनारायण झा जिज्ञांसु, रुद्रनारायण झा, सरयुग चौधरी, डा. रेवती रमण लाल आदि साहित्यकारों ने काव्य पाठ कर कार्यक्रम को सरसता प्रदान किया।

—राजेश्वर नेपाली

विचार गोष्ठी

साहित्य और इलेक्ट्रोनिक मिडिया

भारतीय स्वतन्त्रता के स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय हिन्दी प्रतिष्ठान और भारतीय दूतावास द्वारा संयुक्त रुप से "साहित्य और इलेक्ट्रोनिक मिडिया विषय पर वैचारिक गोष्ठी काठमांडू में सम्पन्न हुई।

गोष्ठी का उद्‌घाटन सूचना तथा संचारमंत्री महंथ ठाकुर ने किया। स्थानीय विकास मंत्री गजेन्द्र नारायण सिंह ने समापन वक्तव्य में विश्व में बढती इलेक्ट्रोनिक मिडिया के प्रभाव को देखते हुए साहित्यकारों एवं इलेक्ट्रोनिक मिडिया से सम्वद्ध लेखकों को नये दृष्टकोण रखने की आवश्यकता दर्शायी।

भारतीय राजदूत के.वी. राजन ने अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि नेपाल-भारत के बीच के मैत्री संबंधों की सबसे मजबूत कडी साहित्यिक और सांस्कृतिक संबंध रही है। भारत और नेपाल के मूर्द्धन्य साहित्यकार अपने विचार एवं सुझावों द्वारा दोनों देशों की मित्रता को और अधिक मजबूत बनाने में योगदान देंगे।

हिमांशु जोशी ने भारत-नेपाल के बीच आनादिकाल से विद्यमान मैत्री सुसम्बन्धों की चर्चा की और कहा कि नेपाल आने पर मुझे यह कभी नहीं लगता है कि मैं परदेश में आया हूं।

उन्होंने इलेक्ट्रोनिक मिडिया के बढते प्रभाव को स्वीकार करते हुऐ कहा– इलेक्ट्रोनिक मिडिया आज विश्व में ही अपना प्रभुत्व जमा चुकी है। इससे साहित्य के प्रचार में भी योगदान पहुंचा है परन्तु इलेक्ट्रोनिक मिडिया पर जिन लोगों का प्रभुत्व रहा है, वे सिर्फ उससे अधिक फ़ायदा उठाना चाहते हैं। अच्छे साहित्यकार को इलेक्ट्रोनिक मिडिया में काम करने का अवसर मिलने पर, वे सुसंस्कृत सन्देश भी उसके माध्यम से दे सकते हैं और दे रहे हैं।

मनोहर श्याम जोशी ने भी इलेक्ट्रोनिक मिडिया के बढते प्रभाव के साथ साहित्यकारों में तादात्म्य स्थापित कर साहित्य के विकास में काम करने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने भी स्वीकार किया कि इलेक्ट्रोनिक मिडिया विशुद्ध साहित्यिक माध्यम नहीं रहने पर भी आज इससे साहित्यकार अछूता नहीं रह सकता।

साहित्यकार एवं पत्रकार कमलेश्वर ने इलेक्ट्रानिक मिडिया में जुडकर काम करने से प्राप्त खटी-मिट्ठी अनुभवों को रखते हुए कहा कि इलेक्ट्रोनिक मिडिया में सिर्फ बुरे लोग ही नहीं होते, अच्छे साहित्यकारों की रचना भी उसमें प्रश्रय पाती है। कुछ फिल्म निर्मांता लेखकों से अपनी इच्छानुसार की कहानी भले ही लिखा लें परन्तु कुछ ऐसे भी निर्मांता होते हैं जो पटकथा में लेखक का लिखा एक शब्द भी उनकी अनुमति बिना नहीं बदलते।

नेपाल की ओर से यादव खरेल, नीर शाह, रामचन्द्र गौतम, डा. दुर्गा प्रसाद भण्डारी, प्रकाश सायमी, चेतन कार्की आदि ने इलेक्ट्रोनिक मिडिया के प्रभाव और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। प्रकाश सायमी ने तो इतना तक कहा कि हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा को अलग रखकर नेपाल में अच्छी फिल्म बन ही नहीं सकती। यज्ञ निधि दहाल ने इलेक्ट्रोनिक मिडिया के प्रभाव को साहित्य और संस्कृति को विकृत करनेवाला माध्यम बताया।

भारतीय दूतावास के प्रथम सांस्कृतिक सचिव श्री अखिलेश मिश्र द्वारा सफल संचालन किया गया तथा हिन्दी प्रतिष्ठान के सचिव श्री अनिल कुमार झा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस समारोह का समापन हुआ।

–शुकेश्वर पाठक

रिपोर्ताज

राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन

राजर्षि जनक की नगरी और मां जानकी का जन्मस्थल जनकपुर धाम में जनकपुर बौद्धिक समाज नामक संस्था स्थापित है। यह संस्था, पहली बार अपनी ही नगरी में प्रथम नेपाल राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया और दूसरी बार क्रान्ति

नगरी वीरगंज में "द्वितीय नेपाल राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन" का आयोजन किया।

दो दिनों का यह सम्मेलन दो-दो चरणों में विभाजित था। पेश है, सम्मेलन की झांकियां। वीरगंज के महावीर धर्मशाला के प्रागंण में इस राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। नेपाल और भारत के साहित्यकार तथा विद्वानों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। वीरगंजवासियों की कार्यक्षमता और तत्परता ने इस सम्मेलन को सफल बनाने में अहम भूमिका निर्वाह की।

सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के अवसर पर प्रमुख अतिथि सभामुख रामचन्द्र पाडेल तथा सम्मेलन के अध्यक्ष राजेश्वर नेपाली ने सरस्वती की तस्वीर पर पुष्पांजलि की और वीरगंजवासी स्व. विश्वनाथ प्रसाद गुप्त जिन्होंने जीवन पर्यन्त हिन्दी की सेवा की थी, उनकी तस्वीर पर श्रद्धासुमन अर्पित की। समारोह के प्रमुख अतिथि सभामुख ने विधिवत दीप प्रज्वलित कर

समारोह का उद्घाटन किया जहां जयनारायण झा ने मातृवन्दना का गान किया।

प्रधानमंत्री सूर्यबहादुर थापा ने इस सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामना भेजी थी, जिसे पढकर सुनाया- रेडियो नेपाल के 'घटना र विचार कार्यक्रम' के शत्रुधन गुप्ता ने। अब द्वितीय नेपाल राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन की सफलता की कामना के लिए महानुभावों के उद्गार व्यक्त करने का सिलसिला शुरु हुआ। लेकिन इससे पहले हमारे प्रमुख अतिथि ने देश के १२ हिन्दी सेवियों का अभिनन्दन किया। उनके नाम क्रमश इस प्रकार है: डा.सूर्यनाथ गोप, श्री सुन्दर झा शास्त्री, डा. सूर्यदेव सिंह प्रभावकर, माननीय रामहरि जोशी, सुश्री भद्र कुमारी घले, सुश्री शान्ति वस्नेत, राम स्वरुप ठाकुर, आनन्द प्रसाद घिमिरे, रामवरण शर्मा, देव चन्द्र मिश्रा, एस.एल शर्मा और लक्ष्मण नेवटिया ।

इसके वाद राजर्षि जनक प्रतिभा पुरस्कार पहली वार त्रि.वि.वि के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष स्व. कृष्ण चन्द्र मिश्र को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार की राशि २५ हजार २५ रुपए है।

भारत और नेपाल से आए हमारे अतिथियों का स्वागत करते हुए इस सम्मेलन के महासचिव भाग्यनाथ गुप्ता ने कहा कि आप लोगों का स्वागत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। वीरगंज वह नगरी है जहां से क्रान्ति की विगुल वजी थी। इसी शहर में २०१३ साल में कांग्रेस के महाधिवेशन में स्व.वी.पी.कोइराला का वह कथन आज भी स्मरण किया जाता है कि उन्होंने नेपाल में द्वितीय राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी को मान्यता दिया था और उसी शहर में माननीय सभामुख द्वारा हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन किया जाना एक गर्व की वात है।

हिन्दी नेपाल के लिए विदेशी भाषा नहीं है

-सभामुख रामचन्द्र पौडेल

सम्मेलन के प्रमुख अतिथि, सभामुख रामचन्द्र पौडेल ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि आज हिन्दी साहित्य का दिन है, इसलिए मैं भी हिन्दी में वोलना चाहता हूँ। मुझे दुःख है कि मेरी हिन्दी शुद्ध नहीं है। लिंग में गडवडा जाता हूँ। मुझे खुशी इस वात की है कि आज हम हिन्दी के सान्निध्य में हैं। हिन्दी नेपाल के लिए विदेशी या परायी भाषा नहीं है। नेवारी, शेर्पा, तामांग, राई, लिम्बु आदि जैसी अनेक भाषाओं के लिए जिस तरह नेपाली एक माध्यम भाषा के रुप में है, ठीक उसी तरह मैथिली अवधि भोजपुरी के लिए सम्पर्क भाषा के रुप में हिन्दी है। इसके अलावा नेपाल और भारत के वीच हिन्दी मित्रता का प्रतीक है। जव हम लोग अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने जाते हैं तो सात-आठ अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में हिन्दी को न देखकर दुःख होता है। मुझे लगता है कि हिन्दी की

उपेक्षा भारत सरकार ने खुद की है। हिन्दी को राष्ट्रसंघ और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा वनाने के लिए भारत सरकार को प्रयास करनी चाहिए। पूरे सार्क देश में वोली जानेवाली और समझी जानेवाली भाषा हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा क्यों नहीं है ? यह एक प्रश्न के रुप में है। यहा भारत के कुछ साहित्यकार भाग ले रहे हैं, मैं उनके मार्फत यह कहना चाहूंगा कि भारत सरकार हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, वनाने की कोशिश करे तो हमलोग उसमें साथ देंगे। अत: हिन्दी भाषा के विकास और उत्थान के लिए जो आन्दोलन छेड़ा गया है, उसमें सफलता मिले- यही हमारी कामना है।

जय हिन्दी ! जय नेपाली !!

प्रज्ञा प्रतिष्ठान के उपकुलपति मदन मणि दिक्षित :

नेपाल में हिन्दी को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। एक जनधारणा के आधार पर और दूसरा सरकारी व्यवहार के आधार पर। विश्वभाषा के रुप में हिन्दी का स्यापित होना अच्छी वात है और इस ओर सभी को सोचना चाहिए।

अखिलेश मिश्र

प्रथम सचिव भारतीय दूतावास:

श्री पौडेल जी की शुभकामना और सहयोग से यह सम्मेलन सफल होगा ऐसा मेरा विश्वास है। किसी भी आयोजन की सफलता के पीछे चित्र की धवलता अनिवार्य है। अपने विचारों से हमारे वीच की जो दूरी है उसे दूर भगाएं। हिन्दी दोनों देशों को और घनिष्ठ का निकटतम वनाने का एक माध्यम है।

डा. मिथिलेश कुमारी मिश्र

(भारतीय साहित्यकार):

हिन्दी स्नेहियों, सिधों और नाथों की भाषा है। यह घृणा की नही वरन प्रेम की भाषा है। अत: धैर्य के साथ निरन्तरता में लगे रहने से अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। हिन्दी और नेपाली दोनों वहनें हैं, इसे वहनें ही रहने दें, सौत न वनाएं।

सुश्री भद्रकुमारी घले:

नेपाल में जन्म लेने के वाद भी मेरे व्यक्तित्व का विकास भारत में हुआ। भारत से जो मुझे ज्ञान हासिल हुआ, उसका फायदा नेपाल को हो रहा है। हम लोग वोलते नेपाली में हैं लेकिन सोचते हिन्दी में हैं। इसलिए हिन्दी घृणा से नहीं, श्रद्धा से देखी जानी चाहिए। वुद्ध नेपाल में पैदा हुए लेकिन वुद्धत्व भारत में प्राप्त किए। तराई की जितनी वोलियां है, उसका सम्वन्ध हिन्दी से है।

सम्मानीय खुशीलाल मंडल:

नेपाल के घर-घर में हिन्दी वोली और सुनी जाती है लेकिन दुर्भाग्य की वात यह है कि देश भर में ऐसा कोई माध्यमिक स्कूल नहीं है जहां हिन्दी की पढाई होती है। नींव नहीं होगा तो छत कैसे ढलेगा। अर्थात् ऊंचे दर्जे (कालेज) में हिन्दी की पढाई होती है लेकिन स्कूल में पढाई की व्यवस्था नहीं होने से कॉलेज में विद्यार्थी नहीं होते हैं। मैं नीति निर्माणकर्ताओं से आग्रह करना चाहूंगा कि प्रत्येक माध्यमिक स्कूलों में हिन्दी की पढाई की व्यवस्था

करें। हिन्दुस्तान में भी नेपाली आठवीं अनूसूचि में है, नेपाली भी वहां राष्ट्रीय भाषा के रुप में है। अत: नेपाल में भी हिन्दी को मान्यता मिलनी चाहिए।

पू. मंत्री दीन बन्धु अर्याल:

हमलोगों के समय सर्वविद्या की राजधानी काशी थी। साहित्य ज्ञान, विज्ञान, राजनीति सभी कारणों से हमलोगों की निष्ठा भारत से है। नेपाल, भारतीय उपमहाद्वीप में ही आता है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में नेपाल के लोगों ने योगदान दिया है तो नेपाल की लडाई में भी भारत का योगदान है।

राधाकृष्ण प्रसाद:

आज नेपाल में हिन्दी की जो अवहेलना हो रही है और इसे घृणा की नजर से देखा जा रहा है यह दुःख की वात है। नेपाल में नब्वे प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं। इसलिए यहां हिन्दी की भी तरक्की होनी चाहिए। नेपाल और हिन्दी का सम्वन्ध दामन और चोली जैसा है। नेपाल में हिन्दी भाषा के प्रति जो वितृष्णा पैदा की जा रही उससे हम सवों को वचना होगा।

सांसद महेन्द्र कुमार मिश्र:

नेपाल में सबसे अधिक लोगों द्वारा वोली जानेवाली भाषा हिन्दी है। नेपाल में हमने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा की शुरुआत मनोहर-पोथी से किया था। जो हिन्दी में थी, लेकिन आज मेरी भाषा खिचडी हो गयी है। फिर भी एक वच्चे का जो स्नेह और श्रद्धा माँ से होती है उसी प्रकार का स्नेह और श्रद्धा मेरी हिन्दी से है।

पुरुषोत्तम दहाल

वरिष्ट पत्रकार

नेपाल में हिन्दी साहित्य की परम्परा वहुत लम्वी है। विद्यापति हिन्दी के आदि कवि के रुप में चर्चित हैं। नेपाल के साहित्यकार वी.पी.कोईराला से लेकर व्यथित, सायमी आदि की रचनाऐं भी हिन्दी में है। अवधि, मैथिली नेपाली हिन्दी सभी भाषा संस्कृत से निकली है, इस सभी में सिर्फ क्रियापद की भिन्नता है। हिन्दी भापा साहित्य से भी नेपाली भाषा साहित्य के विकास में योगदान मिले ऐसी हमारी शुभकामना है।

एन .पी.साउद

पूर्व अध्यक्ष ने.वि.संघ

भापा वही है जिसे दूसरे लोग आसानी से समझ सके। नेपाल के सभी कोने के लोग आसानी से हिन्दी वोलते हैं। नेपाली भाषा का एक भी शव्द अंग्रेजी भाषा में नहीं है। फिर भी हम लोग उसे पढते हैं और उसका सम्मान करते हैं। लेकिन हिन्दी जो नेपाली जनमानस के विल्कुल नजदीक और नेपालियों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम भी है, फिर इसका सम्मान क्यों न हो। अत: नेपाल में इसे उचित सम्मान मिलना चाहिए।

अध्यक्ष ज्ञानेन्द्र बहादुर कार्की :

पूर्व ने.वि.संघ

हमारा देश वहुजातिय और वहुभाषीय है, इसलिए सभी भाषाओं का समुचित और संतुलित ढंग से विकास होना चाहिए। इससे हमारे देश की गरिमा बढ जाएगी।

मनमोहन भट्टराई:

ने.का.युवा नेता

हिन्दी साहित्य मेरे लिए प्रेरणा का श्रोत रही है। भाषा कोई भी हो जो आपको प्रेषित कर सके, मन को छू सके और सरल तथा प्रवाहमय हो तो उन भाषाओं का विकास होना चाहिए, और हिन्दी में ये सारे गुण हैं। आज हमलोग अपनी तराई की मातृभाषा की बात करते हैं तो हिन्दी भी इसी के बीच की भाषा है ; इसलिए यदि हिन्दी का विकास होगा तो अन्य छोटी-छोटी भाषा भी विकसित होगी।

जनार्दन क्षेत्री:

अध्यक्ष जि.वि.स. पर्सा

नेपाल का यह राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन एक क्रान्ति के रुप में है जो वीरगंज की क्रान्ति कथा से जुड गया है। भापा कोई भी हो सभी भाषा साहित्य का उत्थान होना चाहिए।

इस तरह सभी विद्वानों ने अपने - अपने विचार व्यक्त किए। दूर-दूर से आए अतिथियों के प्रति उपप्रमुख और सम्मेलन तैयारी समति के संयोजक कृष्ण मुरारी रौनियार ने धन्यवाद ज्ञापन किया और अन्त में राजेश्वर नेपाली जी ने अपने मन्तव्य के साथ प्रथम सत्र के समापन की घोपणा की।

दूसरा सत्र विचार गोष्ठी का था जिसका प्रारम्भ पंडित दीप नारायण मिश्र और गोविन्द चौधरी ने गायत्री मंत्र और मंगलाचरण से किया। इस विचार गोष्ठी में डा. आशा सिन्हा ने "नेपाल में हिन्दी: स्थिति और सम्भावनाएं" तथा राजेश्वर नेपाली ने नेपाल में हिन्दी पत्र पत्रिकाएं दिशा और दशा" कार्यपत्र प्रस्तुत किये।

डा.सिन्हा के कार्यपत्र पर टिप्पणी करने वाले भारतीय साहित्यकार प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन और जयनारायण झा थे। इसी तरह नेपाली जी के कार्यपत्र पर पन्नालाल गुप्त ने टिप्पणी की थी।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में बहुत विचार विमर्श के वाद ३० बूंदों का एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें हिन्दी से सम्वन्धित विभिन्न मांगों को रखा गया है, जिसे सरकार के पास भेजा जाएगा।

तत्पश्चात दूसरा सत्र एक वृहत्त कवि गोष्ठी का था। इस गोष्ठी में करीव ४० कविता प्रेमियों ने भाग लेकर अपनी रचनाओं से धर्मशाला के प्रांगण को गुंजाय मान किया।

—हिमालिनी प्रतिनिधि

हंसी के फूहारे

(१) अजय (विजय से)
डरावने सपनों से छुटकारा पाने का कोई सरल उपाय बताओ
विजय। जैसे ही तुम्हें सपने दिखाई देने शुरु हो तुम आखें बन्द कर लिया करो।

(२) पिता: वेटा, बुद्धिमान लोग मुर्खो की वात का उत्तर नहीं देते, सिर्फ हंस देते हैं
बेटा: पिताजी, इसलिए आज मैंने परीक्षा भवन में प्रश्न पत्र पढा और हंस कर चला आया

(३) मोहन (पिताजीसे) :आप मुझे स्कूल क्यों भेजते हैं ?
पिताजी: अच्छा आदमी बनने के लिए।
मोहन: लेकिन मुझे तो वहां मुर्गा बनाया जाता है।

(४) मां (बेटे से): राम, तुमने अपने छोटे भाई को क्यों मारा ?
राम:(मम्मी), आप ने ही तो कहा था , कि तुम जो चीज खाया करो वह अपने छोटे भाई को भी दिया करो। आज मैंने स्कूल में मार खाई इसलिए अपने छोटे भाई को भी मारा।

नव वर्ष २०५५ को

शुभ-उपलक्ष्यमा

समस्त देशवासी एवं शुभेच्छुकहरुमा

सुख-समृद्धि र सुस्वास्थ्यको लागि

हार्दिक मंगलमय

शुभकामना

व्यक्त गर्दछौं ।

विराटनगर उपमहानगरपालिका	धरान नगरपालिका
वीरगंज नगरपालिका	राजविराज नगरपालिका
भद्रपुर नगरपालिका	गौर नगरपालिका
ललितपुर नगरपालिका	आदर्श गा.वि.स पिपरा

स्वाद र
सन्तुष्टिको
लागि
गैंडा
20
SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH